हिंदी

व्याकरण एवं रचना

6

With the blessings of :
Our Parents

हिंदी
व्याकरण एवं रचना
6

Copyright@Publishers

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means without prior permission in written. Any person who does any unauthorised act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

Limits of liability and Disclaimer of Warranty:

The Author, Editor, Designer and the Publisher of this book have tried their best to ensure that all the texts are correct in all respect. However, the author and the publisher does not take any responsibility of any mistake, if happened. The correction of mistakes, if found will duly be done in the next edition.

MADE IN INDIA

Support Recycle

Save a Tree
Save the Earth

One Ton of this Paper Saves 17 trees

Max Retail Price: On Back Cover

Edited by:
Editone International Pvt. Ltd.

Based on:

- National Education Policy 2020
- NCF 2022
- Activity Based Format
- Innovative Approach
- Learning with fun
- Eco Friendly Paper

आमुख

भाषा को समझने हेतु व्याकरण एक मजबूत कड़ी है। बिना व्याकरण को समझे हम भाषा को सरल एवं स्पष्ट रूप से नहीं समझ सकते। इसी को ध्यान में रखते हुए 'हिंदी व्याकरण एवं रचना' (कक्षा 1 से 8) तैयार की गई है।

इस शृंखला में नई शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख मापदंडों का बड़ी सटीकता से पालन किया गया है। नवीन पाठ्यक्रम पर आधारित इस पुस्तक में व्याकरण की प्रमुख इकाइयों को बड़े ही सरल, सहज एवं रचनात्मक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। इस शृंखला में व्याकरण को चित्रों के माध्यम से बड़े ही सहज भाव से तैयार किया गया है ताकि बच्चों को व्याकरण की जटिलता का तनिक भी आभास न हो।

पाठ के प्रस्तुतीकरण में शामिल 'पढ़िए और समझिए' के द्वारा बच्चों को चित्रों के माध्यम से संपूर्ण अध्याय को सरल एवं सहज रूप से समझाने का प्रयास किया गया है ताकि बच्चों का पाठ से जुड़ाव आसानी से हो सके। पाठ में शामिल 'अध्यापन संकेत' हमारा एक छोटा-सा प्रयत्न है जिसके माध्यम से शिक्षक/शिक्षिका बच्चों के सर्वांगीण विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

पाठ में शामिल 'आइए, पुनरावृति करें' के माध्यम से सीखे गए बिंदुओं को दोहराया गया है। अभ्यास कार्य के अंतर्गत शामिल 'मौखिक' और 'लेखन कार्य' के द्वारा बच्चों के श्रवण कौशल, बौद्धिक क्षमता और लेखन-शैली पर विशेष ध्यान दिया गया है। साथ ही, 'सोचें-विचारें' के द्वारा बच्चों की रचनात्मक, कार्यात्मक एवं तार्किक क्षमता को निखारने की कोशिश की गई है। 'खेल-खेल में' बच्चों की प्रतिभा को उभारने का संकल्प लिया गया है। साथ ही उनकी मानसिक योग्यता को बल प्रदान करने का प्रयत्न किया गया है। 'प्रेरणादायक मूल्य' को संपूर्ण शृंखला में शामिल करने का मूल उद्देश्य बच्चों में नैतिक गुणों को प्रभावी स्वरूप प्रदान करना है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि यह शृंखला बच्चों में भाषा को रचनात्मक स्वरूप प्रदान करेगी और उनके बौद्धिक व व्यवहार रूपी अधिगम क्षमता को बढ़ाएगी। आपके सुझावों की सदैव प्रतीक्षा रहेगी। शुभकामनाओं सहित.....

–प्रकाशक

पाठ्यपुस्तक का परिचय

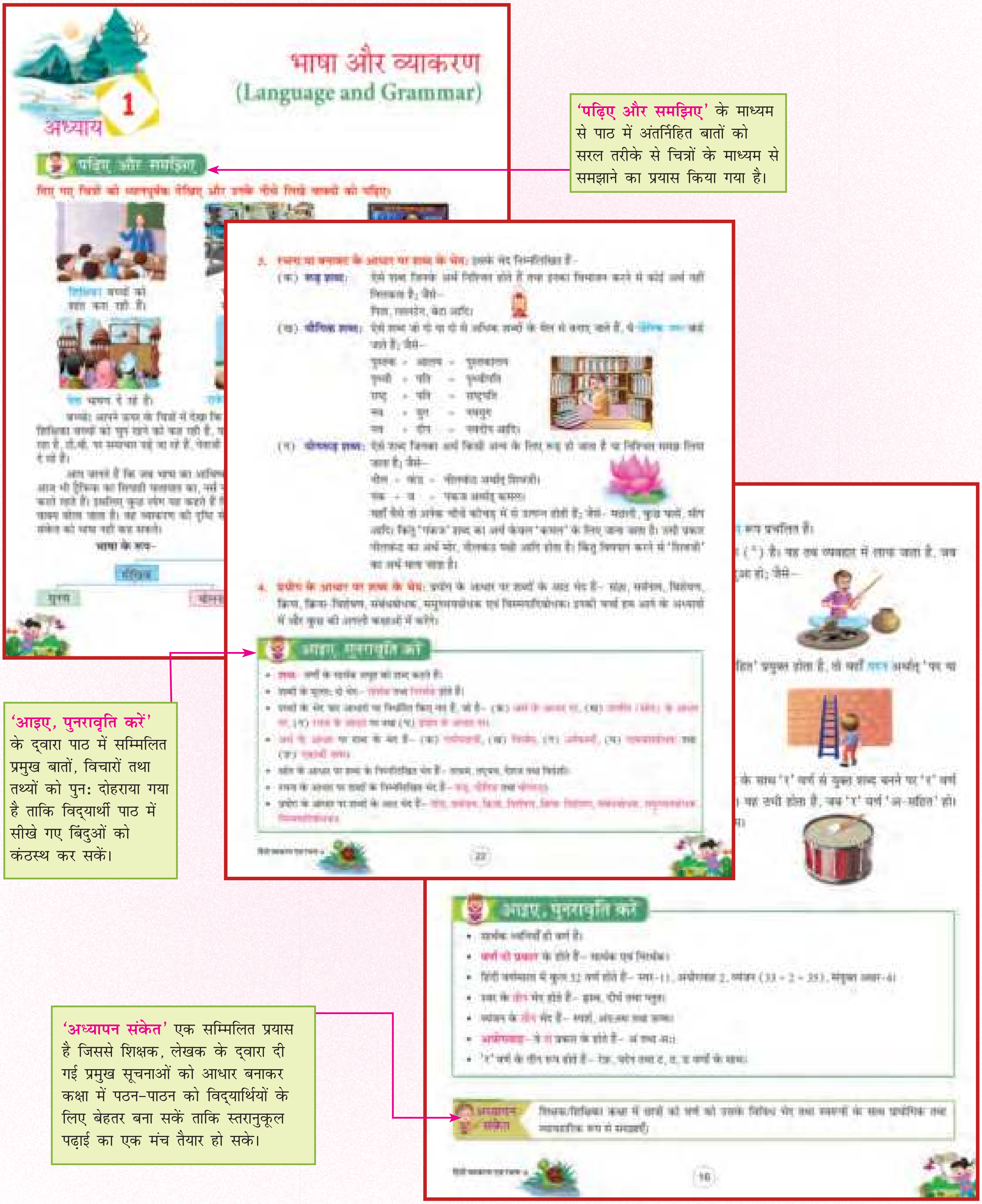

'पढ़िए और समझिए' के माध्यम से पाठ में अंतर्निहित बातों को सरल तरीके से चित्रों के माध्यम से समझाने का प्रयास किया गया है।

'आइए, पुनरावृति करें' के द्वारा पाठ में सम्मिलित प्रमुख बातों, विचारों तथा तथ्यों को पुनः दोहराया गया है ताकि विद्यार्थी पाठ में सीखे गए बिंदुओं को कंठस्थ कर सकें।

'अध्यापन संकेत' एक सम्मिलित प्रयास है जिससे शिक्षक, लेखक के द्वारा दी गई प्रमुख सूचनाओं को आधार बनाकर कक्षा में पठन-पाठन को विद्यार्थियों के लिए बेहतर बना सकें ताकि स्तरानुकूल पढ़ाई का एक मंच तैयार हो सके।

'अभ्यास कार्य' के अंतर्गत शामिल प्रश्नों के महत्वपूर्ण समुच्चय के द्वारा विद्यार्थियों में महत्वपूर्ण कौशलों के साथ-साथ उनकी रचनात्मकता को भी प्रभावी रूप देने का प्रयास किया गया है।

आइए, पुनरावृत्ति करें

- किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं।
- संज्ञा के तीन प्रकार हैं–1. व्यक्तिवाचक संज्ञा 2. जातिवाचक संज्ञा 3. भाववाचक संज्ञा
- जातिवाचक संज्ञा के अंतर्गत हम द्रव्यवाचक और समूह वाचक संज्ञा का अध्ययन करते हैं।

संज्ञा

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
(राम मनोहर, मथुरा, एवरेस्ट आदि)	(पुस्तक, पेन, शिक्षक, हाथी, अस्पताल आदि)	(सुंदरता, उदासी, बुढ़ापा, लड़कपन आदि)

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) द्रव्यवाचक संज्ञा को उदाहरण सहित बताइए।

(ख) जातिवाचक संज्ञा के दो भेद कौन-कौन से हैं? नाम बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) संज्ञा किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

(ख) व्यक्तिवाचक और भाववाचक संज्ञा में अंतर बताइए।

(ग) भाववाचक संज्ञा की परिभाषा देकर उदाहरण भी दीजिए।

2. दिए गए शब्दों में भाववाचक संज्ञा शब्द बताइए।

पहाड़ –	जातिवाचक	हिमालय –	व्यक्तिवाचक
शेर –	....	दशहरी आम –	....
सफलता –	....	क्रोध –	....
पढ़ाई –	....	पेड़ –	....
राजकपूर –	....	लिखावट –	....
गर्मी –	....	थकान –	....

29

हिंदी व्याकरण एवं रचना-4

सोचें-विचारें

8. अपने दैनिक जीवन में इस्तेमाल की जाने वाली ...
तैयार कीजिए। इस सूची में वस्तुओं, प्राणियों या ...

खेल-खेल में

9. कलम पर स्त्रीलिंग एवं मोर के चित्र पर पुल्लिंग ...

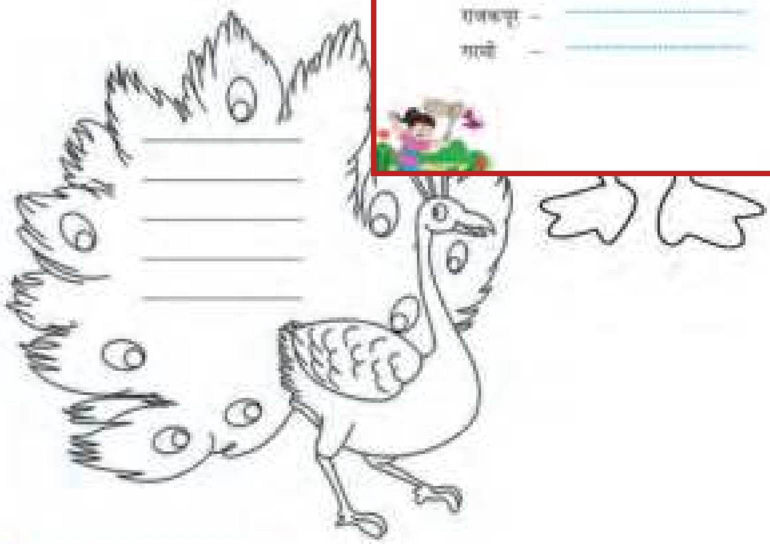

प्रेरणादायक मूल्य

हमें सदैव स्त्री हो या पुरुष सभी का एक समान रूप से सम्मान करना चाहिए। यह हमारे व्यक्तित्व को दर्शाता है।

39

हिंदी व्याकरण एवं रचना-4

'प्रेरणादायक मूल्य' के द्वारा बच्चों में नैतिक गुणों के प्रसार का प्रयास किया गया है ताकि बच्चे उन मूल्यों को अपनाकर बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकें।

अनुक्रमणिका

क्रम. सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	भाषा और व्याकरण (Language and Grammar)	7
2.	वर्ण-विचार (Phonology)	12
3.	शब्द-विचार (Morphology)	19
4.	संज्ञा (Noun)	25
5.	लिंग (Gender)	32
6.	वचन (Number)	40
7.	सर्वनाम (Pronoun)	47
8.	विशेषण (Adjective)	55
9.	क्रिया (Verb)	63
10.	काल (Tense)	69
11.	संधि (Joining)	74
12.	समास (Compound)	80
13.	कारक (Case)	87
14.	उपसर्ग (Prefix)	94
15.	प्रत्यय (Suffix)	100
16.	अनेक प्रकार के शब्द (Different Type of Words)	106
17.	मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ (Idioms and Proverbs)	115
18.	विराम-चिह्न (Punctuation Marks)	123
19.	ई-मेल (पत्र-लेखन) (E-mail Letter Writing)	129
	स्वमूल्यांकन पत्र-1	133
	स्वमूल्यांकन पत्र-2	135

भाषा और व्याकरण
(Language and Grammar)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्रों को ध्यानपूर्वक देखिए और उनके नीचे लिखे वाक्यों को पढ़िए।

शिक्षिका बच्चों को शांत करा रही हैं।

चौराहे पर सिपाही संकेत कर रहा है।

टी.वी. पर समाचार पढ़े जा रहे हैं।

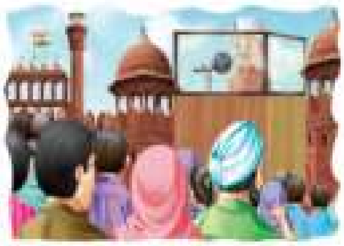

नेता भाषण दे रहे हैं।

राकेश पुस्तक पढ़ रहा है।

बच्चे लिखकर परीक्षा दे रहे हैं।

बच्चो! आपने ऊपर के चित्रों में देखा कि किस प्रकार भाषा के विभिन्न माध्यमों को दर्शाया जा रहा है; जैसे– शिक्षिका बच्चों को चुप रहने को कह रही है, यातायात के नियमों को ट्रैफिक पुलिस के द्वारा पालन करवाया जा रहा है, टी.वी. पर समाचार पढ़े जा रहे हैं, नेताजी भाषण दे रहे हैं, राकेश पुस्तक पढ़ रहा है तथा बच्चे लिखित परीक्षा दे रहे हैं।

आप जानते हैं कि जब भाषा का आविष्कार नहीं हुआ था, तो लोग संकेतों से ही अपने सारे कार्य करते थे। आज भी ट्रैफिक का सिपाही यातायात का, नर्स चुप रहने का एवं अंपायर चौके-छक्के, आउट होने आदि का संकेत करते रहते हैं। इसलिए कुछ लोग यह कहते हैं कि संकेतों को भी भाषा कहा जा सकता है। परंतु भाषा में एक पूर्ण वाक्य बोला जाता है। वह व्याकरण की दृष्टि से भी शुद्ध होता है, ताकि हर कोई उसे समझ सके। इसलिए हम संकेत को भाषा नहीं कह सकते।

भाषा के रूप–

- भाषा
  - मौखिक
    - सुनना
    - बोलना
  - लिखित
    - पढ़ना
    - लिखना

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि–

भाषा के द्वारा हम अपने मन के भावों या विचारों को दूसरों के समक्ष व्यक्त करते हैं और दूसरों के मनो-भावों को समझने व जानने का प्रयास करते हैं।

भाषा के चार कौशल होते हैं– सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना।

यहाँ ध्यान देने वाली बात यह है कि हम सुनकर और पढ़कर दूसरों की बातों को समझने का प्रयास करते हैं। जबकि हम बोलकर तथा लिखकर अपनी बातों को समझाने का प्रयास करते हैं। विश्व में जितनी भी भाषाएँ प्रचलन में हैं, सभी इसी सिद्धांत का अनुकरण कर सीखी तथा सिखाई जाती हैं।

भारतीय संविधान में कुल 22 भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है। जो संविधान की आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध हैं, जिनका विवरण निम्नवत् है–

1. असमिया	2. उर्दू	3. उड़िया	4. कन्नड़	5. कश्मीरी	6. कोंकणी
7. गुजराती	8. डोगरी	9. तमिल	10. तेलुगू	11. नेपाली	12. पंजाबी
13. बांग्ला	14. बोडो	15. मणिपुरी	16. मराठी	17. मलयालम	18. मैथिली
19. संथाली	20. संस्कृत	21. सिंधी	22. हिंदी।		

हिंदी भाषा और इसका संवैधानिक स्वरूप

भारतीय संविधान में अनुच्छेद 343(1) के अनुसार हिंदी हमारे देश की राजभाषा है। इस अनुच्छेद में यह व्यवस्था की गई है कि भारतीय संघ की राजभाषा हिंदी और इसकी लिपि देवनागरी होगी। यह व्यवस्था 14 सितंबर, 1949 को की गई। यही कारण है कि प्रत्येक 14 सितंबर को देश में हिंदी दिवस मनाया जाता है।

लिपि

किसी भी भाषा की लिखावट लिपि है। सभी भाषाओं की अपनी-अपनी लिपियाँ होती है; जैसे- हिंदी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है।

कुछ भारतीय भाषाओं की लिपियाँ

भाषा	लिपि
गुजराती	गुजराती
पंजाबी	गुरुमुखी
उर्दू	अरबी/फ़ारसी
बांग्ला	बंगाली
उड़िया	ओड़िया

कुछ विदेशी भाषाओं की लिपियाँ

भाषा	लिपि
अंग्रेज़ी	रोमन
चीनी	चीनी
डच	रोमन
स्पेनिश	लैटिन

व्याकरण

प्रत्येक भाषा का अपना व्याकरण होता है। इसी से भाषा की शुद्धता-अशुद्धता का निर्धारण किया जाता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि–

भाषा को अक्षरशः शुद्ध रूप में लिखने व बोलने का कार्य व्याकरण करता है। व्याकरण ही भाषा की शुद्धता मापन की कसौटी है।

इस प्रकार जिस भाषा का जितना समृद्ध व्याकरण होगा, वह भाषा उतनी ही अधिक समृद्ध होगी।

आइए, पुनरावृति करें

- भाषा व्यक्तियों के मनोभावों को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है।
- भाषा दो प्रकार की होती है– मौखिक तथा लिखित।
- **लिपि**– भाषा को लिखने का ढंग लिपि कहलाता है।
- हिंदी भारत की राजभाषा है। हम सभी हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।
- **व्याकरण**– भाषा को शुद्ध रूप में बोलना-लिखना व्याकरण के ज्ञान के द्वारा ही संभव है।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को भाषा के संबंध में पढ़ाते हुए इसमें शामिल बारीकियों का ध्यान रखें तथा उससे बच्चों को अवगत कराएँ।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) भाषा के दो रूप बताइए।

(ख) व्याकरण किसे कहते हैं?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) भाषा से क्या तात्पर्य है?

(ख) हिंदी भाषा के संवैधानिक स्वरूप को लिखिए।

(ग) भाषा में लिपि का क्या महत्व है?

2. दिए गए चित्रों को पहचानकर उनमें प्रयुक्त भाषा के प्रकार लिखिए।

(क)

....

(ख)

....

(ग)

....

(घ)

....

3. दी गई भाषाओं को उनकी लिपियों से मिलाइए।

भाषाएँ	लिपियाँ
(क) अंग्रेज़ी	(i) देवनागरी
(ख) हिंदी	(ii) गुजराती
(ग) पंजाबी	(iii) देवनागरी
(घ) गुजराती	(iv) गुरुमुखी
(ङ) संस्कृत	(v) रोमन

4. दिए गए प्रश्नों के उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) भारत में कुल कितनी भाषाओं को संवैधानिक मान्यता प्राप्त है?

☐ 18 ☐ 20 ☐ 22 ☐ 30

(ख) हिंदी दिवस कब मनाया जाता है?

☐ 30 अगस्त ☐ 30 नवंबर ☐ 14 अगस्त ☐ 14 सितंबर

(ग) संस्कृत भाषा की लिपि कौन-सी है?

☐ खरोष्ठी ☐ देवनागरी ☐ त्रिवेणी ☐ अखिला

(घ) भाषा के कौशल में क्या-क्या शामिल हैं?

☐ लिखना ☐ पढ़ना ☐ सुनना ☐ ये सभी

(ङ) व्याकरण का क्या कार्य नहीं है?

☐ बोलने-लिखने में शुद्धता ☐ पढ़ने में शुद्धता

☐ भाषा की शुद्धता ☐ इनमें से कोई नहीं

सोचें-विचारें

Critical Thinking

5. कक्षा में अनेक स्थानों के मूल निवासी बच्चे पढ़ने आते हैं। उनकी मातृभाषा क्या है? एक चार्ट तैयार कीजिए।

बच्चों के नाम	मातृभाषा	बच्चों के नाम	मातृभाषा
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

....

....

....

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

6. लड़का एवं लड़की को आपके क्षेत्र/प्रदेश में किस नाम से पुकारते हैं? जैसे–

छोरा

छोरी

....

....

....

....

प्रेरणादायक मूल्य

भाषा किसी भी मनुष्य के व्यक्तित्व का संपूर्ण परिचायक होती है। भाषा की समृद्धता और व्याकरण की शुद्धता व्यक्तित्व के विकास की मापक इकाइयाँ हैं।

अध्याय 2

वर्ण–विचार
(Phonology)

पढ़िए और समझिए

बच्चो! आपने प्राय: चिड़ियों को चहचहाते, हाथी को चिंघाड़ते, घोड़े को हिनहिनाते, गाय को रँभाते, मेंढक को टर्राते सुना होगा। ये सब विविध प्रकार की आवाज़ें निकालते हैं। किंतु इन सभी की आवाज़ों को वर्ण नहीं कहा जा सकता। क्योंकि ये आवाज़ें सार्थक वर्णों को नहीं दर्शाती, ये निरर्थक वर्ण होती हैं।

सार्थक ध्वनियाँ वर्ण कहलाती हैं। यह सबसे छोटी ध्वनि इकाई होती है, जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते।

वर्ण में वैसे तो सभी तरह की ध्वनियाँ आती हैं, किंतु सार्थक ध्वनियों को ही वर्ण कहा जाता है। इस आधार पर वर्ण को दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

सार्थक वर्ण: जैसे– चिड़िया = च् + ई + ड् + इ + य् + आ।
मकान = म् + अ + क् + आ + न् + अ।
बस्ता = ब् + अ + स् + त् + आ।
अध्यापिका = अ् + ध् + य् + आ + प् + इ + क् + आ।

निरर्थक वर्ण: निरर्थक वर्ण वे होते हैं, जिनका न तो कोई अर्थ होता है और न ही उस नाम की कोई वस्तु आदि होती है; जैसे–
सझम, ञाकज आदि।
इसके अलावा सभी पशु–पक्षियों की आवाज़ें भी इसी भेद में शामिल हैं। अब आइए, वर्ण–विच्छेद तथा वर्ण संयोग के बारे में जानने का प्रयास करते हैं–

वर्ण–विच्छेद

किसी शब्द के निर्मित होने में जितने भी वर्ण सम्मिलित होते हैं, उन सबको अलग–अलग करना वर्ण–विच्छेद कहलाता है; जैसे–

विद्यार्थी = व् + इ + द् + य् + आ + र् + थ् + ई
छात्र = छ् + आ + त् + र् + अ
विद्यालय = व् + इ + द् + य् + आ + ल् + अ + य् + अ
संपर्क = स् + अ + म् + प् + अ + र् + क् + अ

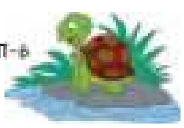

वर्ण संयोजन

भिन्न-भिन्न वर्णों को एकसाथ मिलाकर शब्द निर्माण की क्रिया को वर्ण-संयोजन कहते हैं; जैसे–

क् + अ + क् + ष् + आ = कक्षा

ग् + उ + ल् + आ + ब् + अ = गुलाब

ग् + इ + र् + ई + श् + अ = गिरीश

प् + उ + स् + त् + अ + क् + अ = पुस्तक

वर्णमाला

वर्णों के व्यवस्थित एवं क्रमिक लेखन को वर्णमाला कहते हैं। हिंदी वर्णमाला में निम्नलिखित वर्ण शामिल हैं–

स्वर	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
	ए	ऐ	ओ	औ			
व्यंजन	क	ख	ग	घ	ङ		
	च	छ	ज	झ	ञ		
	ट	ठ	ड	ढ	ण	(ड़, ढ़)	
	त	थ	द	ध	न		
	प	फ	ब	भ	म		
	य	र	ल	व			
	श	ष	स	ह			
संयुक्त अक्षर	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र			

इन वर्णों को विस्तार से जानने का प्रयास करते हैं–

स्वर: हिंदी वर्णमाला में 11 स्वर हैं– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ तथा औ।

स्वर की परिभाषा: स्वर वे वर्ण होते हैं, जिनका उच्चारण स्वतंत्र एवं किसी अन्य वर्ण की सहायता लिए बिना होता है।

स्वर के प्रकार

- ह्रस्व (अ, इ, उ, ऋ)
- दीर्घ (आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ)
- प्लुत (राऽम, ओ३म आदि)

ह्रस्व स्वर: जिन स्वरों के उच्चारण में कम-से कम समय लगता है, ह्रस्व स्वर कहलाते हैं। इनकी संख्या चार है– अ, इ, उ तथा ऋ।

दीर्घ स्वर: इस स्वर के उच्चारण में ह्रस्व स्वर की तुलना में दोगुना समय लगता है। इनकी संख्या सात है– आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ तथा औ।

प्लुत स्वर: जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ स्वर से भी अधिक समय लगता है प्लुत स्वर कहलाते हैं; जैसे– आऽऽ, ओ३म, राऽऽम आदि।

मात्राएँ– स्वरों के बदले हुए स्वरूप को मात्रा कहते हैं। मात्राएँ केवल स्वरों की होती हैं। जब भी व्यंजन के साथ स्वर का संयोग होता है, तो स्वर अपने मूल रूप की अपेक्षा चिह्न (मात्रा) के रूप में व्यंजन के साथ जुड़ जाते हैं। आइए, इसे निम्नवत् समझते हैं–

स्वर	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
मात्रा	×	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ
मात्रायुक्त स्वर	कम	काम	किरण	कीमत	कुल	कूपन	कृपण	केसर	कैलाश	कोलार	कौरव

व्यंजन– जिन वर्णों के उच्चारण में स्वरों की सहायता ली जाती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं।

व्यंजन के प्रकार

स्पर्श
(क–प वर्ग+ड़+ढ़ = 27)

अंत:स्थ
(य, र, ल, व = 4)

ऊष्म
(श, ष, स, ह = 4)

स्पर्श व्यंजन: ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण के समय वायु कंठ, तालु, मूर्धा आदि को स्पर्श करती हुई बाहर निकल जाती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। स्पर्श व्यंजन निम्नवत् हैं–

क वर्ग	–	क	ख	ग	घ	ङ	
च वर्ग	–	च	छ	ज	झ	ञ	
ट वर्ग	–	ट	ठ	ड	ढ	ण	(ड़, ढ़)
त वर्ग	–	त	थ	द	ध	न	
प वर्ग	–	प	फ	ब	भ	म	

कुल 25 + 2 = 27

अंत:स्थ व्यंजन: ऐसे व्यंजन वर्ण, जिनका उच्चारण स्वरों तथा व्यंजनों के बीच किया जाता है, वे अंत:स्थ व्यंजन कहे जाते हैं। ये हैं– य, र, ल तथा व।

ऊष्म व्यंजन: ऐसे व्यंजन जिनका उच्चारण करते समय वायु मुँह में ही घर्षण करके ऊष्मा उत्पन्न करती है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। ये हैं– श, ष, स और ह।

आगत ध्वनियाँ

आगत ध्वनियाँ अर्थात् बाहरी या अन्य देशों की भाषाओं की ध्वनियाँ हैं। इनका शुद्ध उच्चारण करने या लिखने के लिए हिंदी भाषा में कुछ विशेष तरह के चिह्न लगाए जाते हैं, ताकि उन शब्दों का शुद्ध उच्चारण किया जा सके। ये निम्नवत् हैं–

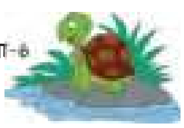

अर्ध चंद्राकार (ॅ): अंग्रेज़ी एवं रोमन शब्दों का शुद्ध उच्चारण करने के लिए अर्ध चंद्राकार का चिह्न (ॅ) लगाया जाता है। अर्ध चंद्राकार लगे कुछ शब्द निम्नवत् हैं–

Doctor	–	डॉक्टर	Mall	–	मॉल
Doll	–	डॉल	Call	–	कॉल
College	–	कॉलेज	Soft	–	सॉफ्ट

नुक़्ते का प्रयोग (.): उर्दू, अरबी, फ़ारसी तथा कुछ अंग्रेज़ी शब्दों के शुद्ध उच्चारण के लिए नुक़्ते का प्रयोग किया जाता है। नुक़्ते का प्रयोग वहीं किया जाता है, जहाँ नुक़्ते के बिना एवं नुक़्ते के साथ वाले शब्दों के अर्थों में भिन्नता हो; जैसे–

बाग	–	लगाम	बाग़	–	बगीचा
राज	–	राज्य संबंधी	राज़	–	रहस्य
सज्जा	–	सजावट	सज़ा	–	दंड
फन	–	साँप का फन	फ़न	–	हुनर

अयोगवाह: अयोगवाह वे वर्ण होते हैं, जिनका प्रारंभ तो स्वर से होता है, किंतु इनके अंत में व्यंजन ध्वनि आती है; जैसे– अं = (अ + ङ्) अ: = (अ + ह)

अनुनासिक या चंद्रबिंदु (ँ) : इस ध्वनि का उच्चारण नाक और मुँह दोनों से किया जाता है; जैसे–

हँसना, मुँह, काँपना, आँगन, आँचल, चाँद आदि।

संयुक्ताक्षर

हिंदी वर्णमाला में चार वर्ण संयुक्ताक्षर हैं। ये हैं– क्ष, त्र, ज्ञ तथा श्र। इनका निर्माण दो-दो व्यंजन वर्णों से हुआ है, ये इस प्रकार हैं–

क्ष = (क् + ष);	त्र = (त् + र);	ज्ञ = (ज् + ञ);	श्र = (श् + र)।
अक्षर	नक्षत्र	ज्ञानी	श्रमिक

द्वित्व व्यंजन

जब एक ही व्यंजन लगातार दो बार प्रयुक्त होकर किसी शब्द का निर्माण करता है, तो वह द्वित्व व्यंजन कहलाते हैं; जैसे–

त्त	=	कुत्ता, पत्ता, सत्ता	न्न	=	प्रसन्न, अन्न, पन्ना
क्का	=	पक्का, टिक्का, मक्का	ल्ल	=	लल्लू, पल्लू, पिल्ला
म्म	=	अम्मा, सम्मान, सम्मन	च्च	=	बच्चा, सच्चा, कच्चा

'र' वर्ण के विविध रूप

हिंदी वर्णमाला में 'र' एक ऐसा व्यंजन वर्ण है, जिसके तीन रूप प्रचलित हैं।

(क) **रेफ़ (ि) :** 'र' वर्ण का एक प्रकार का रूप रेफ़ (ि) है। यह तब व्यवहार में लाया जाता है, जब किसी शब्द में 'र' वर्ण 'अ-रहित' रूप में प्रयोग हुआ हो; जैसे–

क् + अ + र् + म् + अ = कर्म।

अ-सहित अ-रहित अ-सहित

(ख) **पदेन (्) :** किसी शब्द में जब 'र' वर्ण 'अ-सहित' प्रयुक्त होता है, तो वहाँ पदेन अर्थात् 'पद या पैर' में लगता है; जैसे–

क् + र् + अ + म् + अ = क्रम।

अ-रहित अ-सहित अ-सहित

(ग) **ट, ठ, ड एवं ढ वर्णों के साथः** ट, ठ, ड या ढ के साथ 'र' वर्ण से युक्त शब्द बनने पर 'र' वर्ण का रूप ट, ठ, ड में (‸) इस प्रकार हो जाता है। यह तभी होता है, जब 'र' वर्ण 'अ-सहित' हो। जैसे–

ड् + र् + अ + म् + अ = ड्रम।

अ-रहित अ-सहित अ-सहित

आइए, पुनरावृति करें

- सार्थक ध्वनियाँ ही वर्ण हैं।
- **वर्ण दो प्रकार** के होते हैं– सार्थक एवं निरर्थक।
- हिंदी वर्णमाला में कुल 52 वर्ण होते हैं– स्वर-11, अयोगवाह 2, व्यंजन (33 + 2 = 35), संयुक्त अक्षर-4।
- स्वर के तीन भेद होते हैं– ह्रस्व, दीर्घ तथा प्लुत।
- व्यंजन के तीन भेद हैं– स्पर्श, अंतःस्थ तथा ऊष्म।
- **अयोगवाह**- ये दो प्रकार के होते हैं– अं तथा अः।
- 'र' वर्ण के तीन रूप होते हैं– रेफ़, पदेन तथा ट, ठ, ड वर्णों के साथ।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में छात्रों को वर्ण को उसके विविध भेद तथा स्वरूपों के साथ प्रायोगिक तथा व्यावहारिक रूप से समझाएँ।

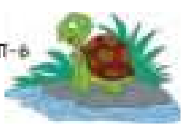

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य — Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) वर्ण कितने प्रकार के होते हैं?

(ख) स्वर के भेद बताइए।

(ग) व्यंजन के कितने भेद होते हैं?

लेखन कार्य — Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) वर्ण से क्या तात्पर्य है?

(ख) वर्ण–विच्छेद से आप क्या समझते हैं? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

(ग) रेफ़ कब लगाया जाता है? उदाहरण भी दीजिए।

2. दिए गए शब्दों के वर्ण–विच्छेद कीजिए।

(क) विद्यालय = ...

(ख) अध्यापक = ...

(ग) कक्षा = ...

(घ) कहानी = ...

(ङ) महिलाएँ = ...

3. दिए गए वर्णों से वर्ण–संयोग करके नया शब्द बनाइए।

(क) क् + अ + व् + इ + त् + आ = ...

(ख) व् + अ + र् + ण् + अ + म् + आ + ल् + आ = ...

(ग) उ + द् + य् + आ + न् + अ = ...

(घ) व् + इ + द् + य् + आ + र् + थ् + ई = ...

4. दिए गए शब्दों में सही स्थान पर नुक्ता लगाइए।

सजा	बाग	राज	खाना	फन
साफ	कर्ज	हररोज	खुशफहमी	हमसफर

5. दिए गए शब्दों में उचित स्थान पर चंद्रबिंदु (ँ) लगाइए।

चाद	आचल	हसना	मेहदी	कापना
टाग	तागा	कुआ	भाग	गवार

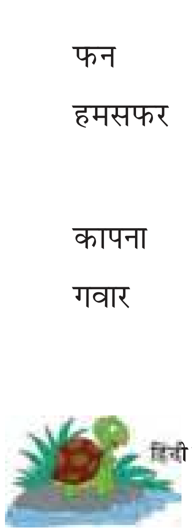

6. इनसे दो-दो शब्द बनाइए।

क्क = ...
त्त = ...
द्य = ...
च्च = ...
म्म = ...
त्य = ...

7. दिए गए संयुक्त अक्षरों से दो-दो शब्द बनाइए–

(क) क्ष = ...
(ख) त्र = ...
(ग) ज्ञ = ...
(घ) श्र = ...

सोचें-विचारें

Critical Thinking

8. आगत ध्वनियों से संबंधित विभिन्न प्रकार के शब्दों को एकत्रित करें तथा उन्हें विभिन्न भागों में वर्गीकृत करें।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

9. इनमें से किसकी बोली वर्ण नहीं कही जा सकती है? सही का निशान लगाइए।

काँव-काँव ◯

कैं-कैं ◯

टें-टें ◯

बाँ-बाँ ◯

देखो! चिड़िया बैठी है। ◯

मम्मी! मेरे जूते कहाँ हैं? ◯

प्रेरणादायक मूल्य

जिस प्रकार वर्ण सार्थक ध्वनियाँ होती हैं ठीक उसी प्रकार मनुष्य को भी उन सार्थक ध्वनियों का उचित प्रयोग करना चाहिए ताकि उनकी विलक्षणता प्रदर्शित हो।

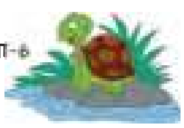

अध्याय 3

शब्द–विचार (Morphology)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्रों को देखिए और उनके नाम पढ़िए–

शेर

गाय

अनार

औरत

बच्चो! ऊपर दिए चित्रों के नाम सार्थक शब्द हैं, क्योंकि ये सभी हमारी पृथ्वी पर उपलब्ध हैं और इन सबका अपना एक वजूद है। ये सभी शब्द अनेक वर्णों से मिलकर बने हैं। अत: हम कह सकते हैं कि–

वर्णों का ऐसा सार्थक समूह जिससे शब्दों का निर्माण होता है और जिसका कोई निश्चित अर्थ होता है, उसे शब्द कहते हैं।

शब्दों के प्रकार: शब्दों के प्रकार को निम्न आधारों पर वर्गीकृत कर समझा जा सकता है–

1. अर्थ के आधार पर
2. उत्पत्ति या स्रोत के आधार पर
3. रचना के आधार पर
4. प्रयोग के आधार पर।

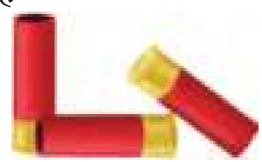

दिए गए आरेख चित्र के द्वारा इसे बेहतर तरीके से समझा जा सकता है–

शब्द के भेद

अर्थ के आधार पर	उत्पत्ति (स्रोत) के आधार पर	रचना के आधार पर	प्रयोग के आधार पर
(क) पर्यायवाची	(क) तत्सम	(क) रूढ़ (मूल)	(क) संज्ञा
(ख) विलोम	(ख) तद्भव	(ख) यौगिक	(ख) सर्वनाम
(ग) अनेकार्थी	(ग) देशज	(ग) योगरूढ़	(ग) विशेषण
(घ) वाक्यांशबोधक शब्द	(घ) विदेशज		(घ) क्रिया
(ङ) एकार्थी शब्द			(ङ) क्रिया–विशेषण
			(च) संबंधबोधक
			(छ) समुच्चयबोधक
			(ज) विस्मयादिबोधक

1. **अर्थ के आधार पर** सामान्यत: शब्दों के दो भेद होते हैं– सार्थक तथा निरर्थक शब्द।

(क) **सार्थक शब्द:** ऐसे शब्द जिनका या तो कोई अर्थ होता है अथवा उस नाम की कोई चीज़ होती है; जैसे– अंबर, तोता, केला, धूमकेतु आदि।

(ख) **निरर्थक शब्द:** ऐसे शब्द जिनका न तो कोई अर्थ होता है और न ही उस नाम की कोई वस्तु होती है, वे निरर्थक शब्द कहलाते हैं; जैसे– चूँ-चूँ, ढेंकचूँ, ड़ीलक आदि।

अर्थ के आधार पर सार्थक शब्दों के भेद निम्नलिखित होते हैं–

(क) **पर्यायवाची शब्द:** ऐसे शब्द जिनके अनेक समान अर्थ होते हैं, वे पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं; जैसे–

पानी – जल, वारि, सलिल, अंबु।
आकाश – अंबर, व्योम, शून्य, आसमान।

(ख) **विलोम शब्द:** किसी भी शब्द के विपरीत या उल्टा अर्थ बताने वाले शब्द 'विलोम' या 'विपरीतार्थक' शब्द कहे जाते हैं; जैसे–

आग – पानी   राजा – रंक
उत्पत्ति – विनाश   नया – पुराना।

(ग) **अनेकार्थी शब्द:** कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं; जैसे–

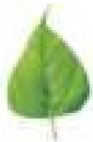

उत्तर – एक दिशा, जवाब   पत्र – पत्ता, चिट्ठी
पूर्व – एक दिशा, पहले   तीर – बाण, किनारा

(घ) **वाक्यांशबोधक शब्द:** कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जो वाक्यांश के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं। ऐसे शब्दों को वाक्यांशबोधक शब्द कहा जाता है; जैसे–

कुछ जानने की इच्छा रखनेवाला – जिज्ञासु
जो केवल शाक-सब्ज़ियाँ खाता हो – शाकाहारी
जो ईश्वर को मानता है – आस्तिक
जो शिकार करने का कार्य करता हो – शिकारी / आखेटक
जो व्यक्ति काम से जी चुराता हो – कामचोर
जो अपनी पत्नी की प्रत्येक बात माने – पत्नीभक्त
जिनका समाज में आदर-सम्मान हो – आदरयोग्य
पति-पत्नी का जोड़ा – दंपती

(ङ) **एकार्थी शब्द:** कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जिनका एक ही अर्थ होता है। ऐसे शब्द एकार्थी कहलाते हैं; जैसे–

रसोईघर, पालक, कुरसी, मेज़ आदि।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों में शब्द-भंडार के अंगर्तत शामिल विविध प्रकार के शब्दों को बताएँ तथा उनसे संबंधित शब्दों को भी कंठस्थ कराएँ।

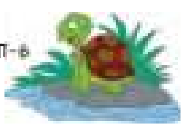

2. स्रोत या उत्पत्ति के आधार पर शब्द के भेदः इसके निम्नलिखित भेद होते हैं–

(क) **तत्सम शब्दः** संस्कृत के वैसे शब्द जिनका प्रयोग ज्यों–का–त्यों हिंदी भाषा में किया जाता है, वे तत्सम शब्द कहे जाते हैं। कुछ तत्सम शब्द नीचे दिए जा रहे हैं–

तत्सम शब्द	तत्सम शब्द	तत्सम शब्द	तत्सम शब्द
अग्नि	मुख	आम्र	सर्प
पवन	नेत्र	ताम्र	घृत
जल	अंगुलि	बालुका	कर्पूर
प्रस्तर	श्रीमन्	भल्लूक	ग्राम
हस्त	मस्तक	वृक्ष	दुग्ध
पाद	कदलीफल	अमृत	दधि

(ख) **तद्भव शब्दः** संस्कृत भाषा के वैसे शब्द जिनको परिवर्तित करके हिंदी भाषा में अपना लिया जाता है, वे तद्भव शब्द कहे जाते हैं। कुछ तत्सम शब्दों के तद्भव शब्द नीचे दिए जा रहे हैं–

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
भल्लूक	भालू	मक्षिका	मक्खी
हस्ती	हाथी	धेनु	गाय
शृंगाल	सियार	कर्पूर	कपूर
कुक्कुर	कुत्ता	दधि	दही
चटका	चिड़िया	दुग्ध	दूध

(ग) **देशज शब्दः** कुछ शब्द ऐसे हैं, जो उपभाषाओं, बोलियों या क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी भाषा में प्रयुक्त किए जाते हैं, वे देशज शब्द कहे जाते हैं; जैसे– जूता, पगड़ी, पंगा आदि।

(घ) **विदेशी शब्दः** ऐसे शब्द जो विदेशी भाषाओं से हिंदी भाषा में प्रयुक्त किए जाते हैं, वे विदेशी या विदेशज शब्द कहलाते हैं। इसमें अनेक भाषाओं के शब्द आते हैं। कुछ शब्द निम्न प्रकार से हैं–

अंग्रेज़ी – स्कूल, स्टेशन, बैग, रेडियो, पेंसिल, कॉपी, स्लेट, कैमरा, चॉकलेट आदि।

फ़ारसी – शादी, नमक, आईना, प्याज, गरदन आदि।

अरबी – कानून, मरीज़, मर्ज़, अमीर, औरत, गरीब आदि।

पुर्तगाली – साबुन, तौलिया, आलू, गोभी, चाबी आदि।

फ्रांसीसी – कूपन, कारतूस आदि।

तुर्की – बेगम, कुली, लाश आदि।

3. रचना या बनावट के आधार पर शब्द के भेदः इसके भेद निम्नलिखित हैं–

(क) **रूढ़ शब्दः** ऐसे शब्द जिनके अर्थ निश्चित होते हैं तथा इनका विभाजन करने से कोई अर्थ नहीं निलकता है; जैसे–

पिता, लालटेन, बेटा आदि।

(ख) **यौगिक शब्दः** ऐसे शब्द जो दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बनाए जाते हैं, वे यौगिक शब्द कहे जाते हैं; जैसे–

पुस्तक + आलय = पुस्तकालय
पृथ्वी + पति = पृथ्वीपति
राष्ट्र + पति = राष्ट्रपति
नव + युग = नवयुग
नव + दीप = नवदीप आदि।

(ग) **योगरूढ़ शब्दः** ऐसे शब्द जिनका अर्थ किसी अन्य के लिए रूढ़ हो जाता है या निश्चित समझ लिया जाता है; जैसे–

नील + कंठ = नीलकंठ अर्थात् शिवजी।
पंक + ज = पंकज अर्थात् कमल।

यहाँ वैसे तो अनेक चीजें कीचड़ में से उत्पन्न होती हैं; जैसे– मछली, कुछ घासें, सीप आदि। किंतु 'पंकज' शब्द का अर्थ केवल 'कमल' के लिए जाना जाता है। उसी प्रकार नीलकंठ का अर्थ मोर, नीलकंठ पक्षी आदि होता है। किंतु विषपान करने से 'शिवजी' का अर्थ माना जाता है।

4. प्रयोग के आधार पर शब्द के भेदः प्रयोग के आधार पर शब्दों के आठ भेद हैं– संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया-विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक एवं विस्मयादिबोधक। इनकी चर्चा हम आगे के अध्यायों में और कुछ की अगली कक्षाओं में करेंगे।

आइए, पुनरावृत्ति करें

- **शब्द**– वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं।
- शब्दों के मूलतः दो भेद– सार्थक तथा निरर्थक होते हैं।
- शब्दों के भेद चार आधारों पर निर्धारित किए गए हैं, जो हैं– (क) अर्थ के आधार पर, (ख) उत्पत्ति (स्रोत) के आधार पर, (ग) रचना के आधार पर तथा (घ) प्रयोग के आधार पर।
- अर्थ के आधार पर शब्द के भेद हैं– (क) पर्यायवाची, (ख) विलोम, (ग) अनेकार्थी, (घ) वाक्यांशबोधक तथा (ङ) एकार्थी शब्द।
- स्रोत के आधार पर शब्द के निम्नलिखित भेद हैं– तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशी।
- रचना के आधार पर शब्दों के निम्नलिखित भेद हैं– रूढ़, यौगिक तथा योगरूढ़।
- प्रयोग के आधार पर शब्दों के आठ भेद हैं– संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, क्रिया-विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) शब्द किसे कहते हैं?

(ख) अर्थ के आधार पर शब्दों के भेद बताइए।

(ग) तत्सम क्या है?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. **दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

(क) शब्द किसे कहते हैं? इनका निर्माण कैसे होता है?

(ख) शब्द के भेदों का निर्धारण किस प्रकार किया जाता है?

(ग) तत्सम और तद्भव शब्दों में क्या अंतर होता है?

(घ) आगत वर्ण कितने होते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

(ङ) योग तथा योगरूढ़ शब्दों में क्या अंतर होता है?

2. **दिए गए तत्सम शब्दों के तद्भव रूप लिखिए।**

श्रृंगाल	–	दुग्ध	– ....
कर्पूर	–	मक्षिका	– ....
अमृत	–	चटका	– ....
मयूर	–	हस्ती	– ....

3. **दिए गए शब्दों के सामने उनके प्रकार लिखिए।**

नवयुग	–	नीलकंठ	– ....
पिता	–	उत्तर	– ....
पानी–जल, वारि	–	चूँ–चूँ	– ....
आस्तिक	–	ड़ीकच	– ....

सोचें-विचारें

Critical Thinking

4. **बिना शब्दों के हमारा जीवन कैसा होता? सोचकर बताइए।**

5. शब्द के प्रकारों के अनुसार कक्षा के एक-एक बच्चे से उस प्रकार के शब्द पूछें।
6. कक्षाध्यापक / कक्षाध्यापिका श्यामपट्ट / ह्वाइट बोर्ड पर कुछ शब्द लिखकर बच्चों से शब्दों के प्रकार या भेद पूछें।

7. दी गई शब्द-सारिणी में से कुछ शब्द छाँटकर उनके प्रकार सामने लिखिए।

रा	नी	ल	कं	ठ	अं
ष्ट्र	कु	ली	ता	रा	ब
प	स	लि	ला	ती	र
ति	रं	गा	मो	र	तो
पु	स्त	का	ल	य	ता
दं	प	ती	उ	त्त	र
शा	का	हा	री	बे	टा

कुली – तुर्की (विदेशी)

.... – ....

.... – ....

.... – ....

.... – ....

.... – ....

.... – ....

.... – ....

प्रेरणादायक मूल्य

शब्द-भंडार में जिस प्रकार अनेक शब्द संग्रहित हैं, ठीक उसी प्रकार मानव के भीतर भी अनेक गुण होते हैं तो हमें उन उचित गुणों का प्रयोग करना चाहिए।

संज्ञा
(Noun)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्र देखिए और उनके नीचे लिखे शब्द पढ़िए–

बच्चो! अब आप देखें कि–
मेरे शहर का सुंदर मॉल,
यहाँ आते हैं लोग महान,
सरिता, पिंकी, बबलू आए,
पुस्तक खरीदकर आईसक्रीम खाए।

यह मौसम वर्षा ऋतु का है,
चारों ओर छाई हरियाली है।
जैसे फुहारें तन पर पड़ती जाएँ,
मेरा मन भीगने को ललचाए।

इन पंक्तियों में आए रंगीन शब्द– शहर, मॉल, सरिता, पिंकी, बबलू, पुस्तक, आईसक्रीम, मौसम, वर्षा ऋतु, हरियाली, फुहारें, तन, मन– किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव आदि का बोध करा रहे हैं।

अतएव हम कह सकते हैं कि–

संज्ञा वह शब्द है जो किसी व्यक्ति, वस्तु, प्राणी, स्थान, भाव आदि के नाम के स्वरूप में प्रयुक्त होते हैं।

अब आइए, इनके बारे में थोड़ा विस्तार से जानने का प्रयास करते हैं–

व्यक्ति – सरिता, पिंकी, बबलू, मन, तन

स्थान – शहर, मॉल

भाव – हरियाली, मौसम

वस्तु – आइसक्रीम, पुस्तक, फुहारें

संज्ञा के भेद–

संज्ञा के तीन भेद होते हैं:

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा 2. जातिवाचक संज्ञा 3. भाववाचक संज्ञा।

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा:

ऐसे संज्ञा शब्द जिनसे किसी विशेष वस्तु, विशेष प्राणी, विशेष व्यक्ति का बोध होता है, वे व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द कहलाते हैं: जैसे–

लालकिला

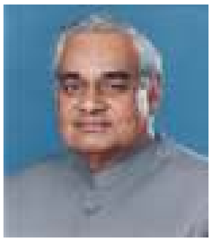

अटल बिहारी वाजपेयी

साहीवाल गाय

यहाँ ऊपर लिखे शब्द– एक विशेष इमारत (लालकिला), एक विशेष व्यक्ति (अटल बिहारी वाजपेयी) तथा एक विशेष प्रजाति की गाय (साहीवाल गाय) ये सभी व्यक्तिवाचक संज्ञा के उदाहरण हैं।

विशेष व्यक्ति: डॉ. सी.वी. रमन, पंडित जवाहरलाल नेहरू, ई. श्रीधरन, राजकपूर, महात्मा बुद्ध, श्रीकृष्ण, अकबर, ज्वाला गट्टा, डॉ. भाभा आदि।

विशेष स्थान: अहमदाबाद, मुंबई, आगरा, लखनऊ, लालकिला, साँची स्तूप, गंगा, यमुना, सरस्वती, हिमालय, नीलगिरी, उत्तर प्रदेश आदि।

विशेष वस्तु: रामायण, गीता, कुरान, गुरुग्रंथ साहिब, लँगड़ा आम आदि।

विशेष प्राणी: अरबी घोड़ा, करैत साँप, जर्सी गाय, ऐरावत (हाथी), चेतक (घोड़ा)।

2. जातिवाचक संज्ञा:

ऐसे संज्ञा शब्द जिनसे किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, पशु-पक्षी, प्राणी आदि की पूरी जाति की सूचना मिलती है, वे जातिवाचक संज्ञा शब्द कहलाते हैं; जैसे–

बिल्ली

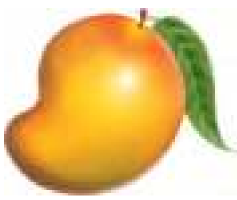

आम

मोटर साइकिल

बच्चो! ऊपर लिखे सभी शब्द– बिल्ली (पूरी जाति), आम (हर तरह के) तथा मोटर साइकिल (सभी कंपनियों की) अपनी पूरी-पूरी जाति का बोध करा रहे हैं। अतएव इन्हें जातिवाचक संज्ञा शब्द कहते हैं।

अब आइए, कुछ अन्य जातिवाचक संज्ञा शब्दों के बारे में भी जानने का प्रयास करें–

व्यक्ति: राजा, महिलाएँ, डॉक्टर, अध्यापक, चालक, किसान, मोची, दरजी, धोबी, कुम्हार, बढ़ई, नर्स आदि।

वस्तु : पेड़, कुरसी, मेज़, एसी, फ्रिज, गमला, चूल्हा, गिलास, कड़ाही, कुकर, थाली, कटोरी, बस्ता, जूता, साइकिल, कार आदि।

स्थान : मंदिर, चौराहा, मस्जिद, गिरजाघर, गुरुद्वारा, विद्यालय, नदी, पहाड़, होटल, स्टेशन, हवाई अड्डा, गाँव, शहर, मुहल्ला आदि।

प्राणी : हाथी, घोड़ा, भैंस, बैल, मगरमच्छ, बंदर, कुत्ता, गधा, ह्वेल मछली, शेर, गैंडा, चीता, जिराफ़, सियार, गाय, बकरी, कौआ, मोर आदि।

संबंध: पिता, माता, चाचा, ताऊ, ताई, नानी, फूफा, बुआ, मौसा, मौसी आदि।

जातिवाचक संज्ञा के भेद: जातिवाचक संज्ञा के दो भेद हैं–

(क) द्रव्यवाचक संज्ञा (ख) समूहवाचक संज्ञा

(क) द्रव्यवाचक संज्ञा– ऐसे संज्ञा शब्द जिनसे किसी धातु, द्रव्य, सामग्री, पदार्थ आदि का बोध हो, द्रव्यवाचक संज्ञा कहलाते हैं। इन पदार्थों को मापा और तौला जा सकता है; जैसे– गेहूँ, चावल, घी, चीनी, चाँदी, सोना, दूध, दाल, ऊन, तेल, पेट्रोल, डीजल आदि।

(ख) समूहवाचक संज्ञा– ऐसे संज्ञा शब्द जिससे किसी एक शब्द का बोध न होकर एक समूह का बोध होता है, समूहवाचक संज्ञा कहलाता है; जैसे– सेना, पुलिस, दल, समिति, आयोग, परिवार, पुस्तकालय आदि।

3. भाववाचक संज्ञा:

ऐसे संज्ञा शब्द जिनसे किसी व्यक्ति, स्थान या वस्तु के गुण, दोष, दशा, अवस्था आदि का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–

सजावट

सुंदरता

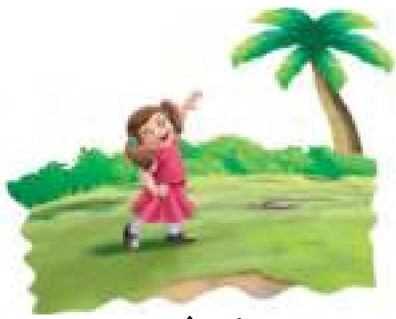

ऊँचाई

बच्चो! यहाँ ऊपर लिखे शब्द– सजावट (सजे हुए का गुण), सुंदरता (सुंदर होने का गुण) तथा ऊँचाई (ऊँचाई का गुण) ये सभी किसी भाव, दशा या गुण का बोध कराने के कारण भाववाचक संज्ञा शब्द हैं।

आइए, कुछ अन्य भाववाचक संज्ञा शब्दों के बारे में जानें–

भाव : मित्रता, भय, क्रोध, घृणा, लार आदि।

दशा : बुढ़ापा, यौवन, बचपन, कैशौर्य आदि।

गुण-दोष : सुंदरता, वीरता, कड़वाहट, मिठास, भद्दापन आदि।

कार्य : थकावट, उड़ान, लिखावट, बुनावट, सजावट, पढ़ाई आदि।

इनमें सभी भाव केवल अनुभवजन्य हैं। उन्हें हम पकड़ या छू नहीं सकते।

अब आइए, यह जानने का प्रयत्न करें कि भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण किस प्रकार किया जाता है।

(क) विशेषण शब्दों द्वारा भाववाचक संज्ञा शब्दों का निर्माण

विशेषण शब्द	भाववाचक संज्ञा शब्द	विशेषण शब्द	भाववाचक संज्ञा शब्द
मीठा	मिठास	विद्वान	विद्वत्ता
योग्य	योग्यता	काबिल	काबिलीयत
सरल	सरलता	मोटा	मोटापा
कुशल	कुशलता	श्रेष्ठ	श्रेष्ठता
चोर	चोरी	महान	महानता

(ख) जातिवाचक संज्ञा शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्दों का निर्माण

जातिवाचक संज्ञा शब्द	भाववाचक संज्ञा शब्द	जातिवाचक संज्ञा शब्द	भाववाचक संज्ञा शब्द
सज्जन	सज्जनता	व्यक्ति	व्यक्तित्व
माता	मातृत्व	दास	दासता / दासत्व
पिता	पितृत्व	मित्र	मित्रता
भ्राता	भ्रातृत्व	शत्रु	शत्रुता
शिशु	शैशव	लड़का	लड़कपन
मनुष्य	मनुष्यता	आत्म	आत्मीयता
बच्चा	बचपन	बूढ़ा	बुढ़ापा

(ग) क्रिया शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्दों का निर्माण

क्रिया शब्द	भाववाचक संज्ञा शब्द	क्रिया शब्द	भाववाचक संज्ञा शब्द
जलना	जलन	पीसना	पिसाई
चढ़ना	चढ़ाई	डरना	डर
लुटना	लूट	गिरना	गिरावट
थकना	थकान	चुनना	चुनाव
पढ़ना	पढ़ाई	धोना	धुलाई

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को भाषा के संबंध में पढ़ाते हुए इसमें शामिल बारीकियों से बच्चों को अवगत कराएँ।

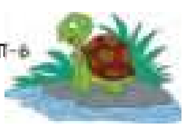

आइए, पुनरावृति करें

- किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव आदि के नाम को **संज्ञा** कहते हैं।
- संज्ञा के तीन प्रकार हैं–1. व्यक्तिवाचक संज्ञा 2. जातिवाचक संज्ञा 3. भाववाचक संज्ञा
- जातिवाचक संज्ञा के अंतर्गत हम द्रव्यवाचक और समूह वाचक संज्ञा का अध्ययन करते हैं।

संज्ञा

- व्यक्तिवाचक संज्ञा (लता मंगेशकर, सतपुड़ा, रामेश्वरम् आदि)
- जातिवाचक संज्ञा (वृक्ष, भैंस, शिक्षक, हाथी, अस्पताल आदि)
- भाववाचक संज्ञा (सुंदरता, उदासी, बुढ़ापा, लड़कपन आदि)

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) द्रव्यवाचक संज्ञा को उदाहरण सहित बताइए।

(ख) जातिवाचक संज्ञा के दो भेद कौन-कौन से हैं? नाम बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) संज्ञा किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

(ख) व्यक्तिवाचक और भाववाचक संज्ञा में अंतर बताइए।

(ग) भाववाचक संज्ञा की परिभाषा देकर उदाहरण भी दीजिए।

2. दिए गए शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्द बनाइए।

पहाड़	–	जातिवाचक	हिमालय	–	व्यक्तिवाचक
शेर	–	....	दशहरी आम	–	....
सफलता	–	....	क्रोध	–	....
पढ़ाई	–	....	पेड़	–	....
राजकपूर	–	....	लिखावट	–	....
गरमी	–	....	थकान	–	....

3. **दिए गए वाक्यों में से संज्ञा शब्दों के नीचे रेखा खींचिए और संज्ञा के भेद का नाम भी लिखिए।**

(क) कोरोना के रोगी की छटपटाहट देखी नहीं गई। भाववाचक संज्ञा

(ख) आज रविवार है। ....

(ग) भारत एक महान देश है। ....

(घ) सज्जनता हमारा आभूषण है। ....

(ङ) डाकिया डाक लाया। ....

(च) हमारे यहाँ की मिट्टी सोना उगलती है। ....

(छ) नवाब साहब ने खीरे सूँघकर फेंक दिए। ....

4. **दिए गए शब्दों को उनके उचित भेद में लिखिए।**

लखनऊ	चतुराई	कोरोना	गाय	उदासी	भारत	जामुन	उदारता	पहाड़
ऐरावत	खुशी	मित्रता	नारियल	आकाश	कालिया	बचपन	समुद्र	स्विफ़्ट कार

व्यक्तिवाचक	जातिवाचक	भाववाचक
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

5. **रेखा खींचकर सही मिलान कीजिए।**

(क) मोटापा	द्रव्यवाचक	(ख) खरगोश
(ग) तिरंगा	जातिवाचक	(घ) गंगा
(ङ) सेना	भाववाचक	(च) सोना
(छ) कक्षा	व्यक्तिवाचक	(ज) रामायण
	समूहवाचक	

सोचें-विचारें

Critical Thinking

6. **कुछ ऐसे समूहवाचक और द्रव्यवाचक संज्ञा के उदाहरण बताएँ जिन्हें आप अपने रोजमर्रा की ज़िंदगी में देखते हैं या उनसे वाकिफ़ हैं? सोच-समझकर बताइए।**

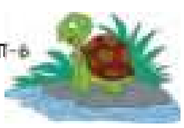

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

7. अपने घर आने वाले हिंदी अख़बार, पत्रिका या अन्य कहानी की पुस्तकों में से सभी प्रकार के संज्ञा शब्दों पर पेंसिल से रेखा खिंचवाकर उन्हें कॉपी में लिखवाएँ और संज्ञा के भेद का नाम भी लिखें।

अख़बार

8. दिए गए वृक्षों पर उनके भेद के अनुसार संज्ञा शब्द लिखिए।

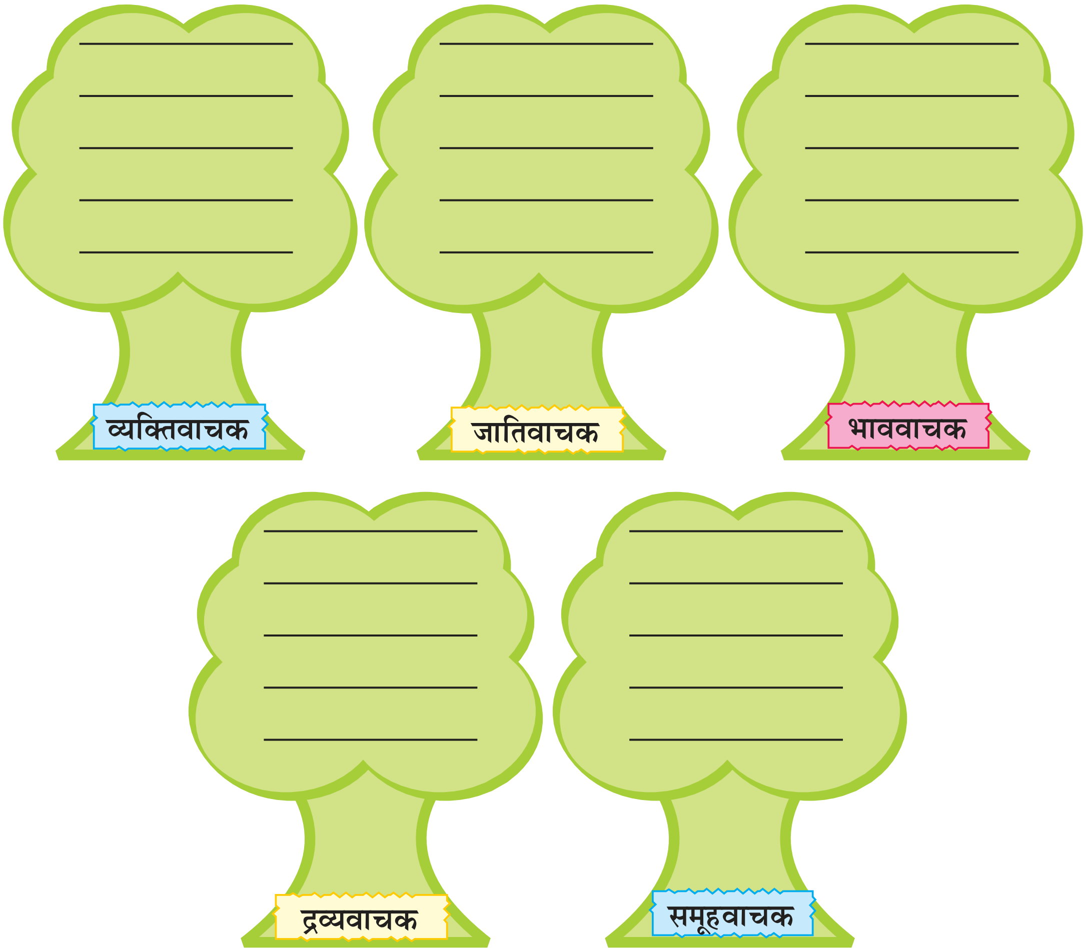

प्रेरणादायक मूल्य

हमें संज्ञा से अच्छे कार्य करने की प्रेरणा लेनी चाहिए ताकि हमारा भी नाम हो, जिस प्रकार डॉ. कलाम, सचिन तेंदुलकर, लता मंगेशकर आदि का उदाहरण दिया जाता है।

लिंग
(Gender)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्र देखिए और उनके साथ लिखे शब्दों को पढ़िए–

चित्र में आपने देखा कि जंगल में शेर–शेरनी, मोर–मोरनी, हाथी–हथिनी, तोता–तोती, हिरन–हिरनी दिखाई दे रहे हैं। वहीं शिकारी जीप में बैठकर लड़का–लड़की अपने माता–पिता के साथ उन प्राणियों को देख रहे हैं।

ऊपर के सभी रंगीन शब्दों को लिंग कहते हैं। उस लिंग में भी पुरुष या नर हैं; जैसे– शेर, मोर, हाथी, तोता, हिरन, लड़का तथा पिता इनको पुल्लिंग कहते हैं। शेष शेरनी, मोरनी, हथिनी, तोती, हिरनी, लड़की तथा माता को स्त्रीलिंग कहा जाता है।

अत: लिंग के बारे में हम कह सकते हैं कि–

ऐसे शब्द जिनसे किसी पुरुष या स्त्री जाति का बोध होता है, उन्हें लिंग कहते हैं।

अब आइए, यह जानें कि लिंग कितने प्रकार के होते हैं।

लिंग दो प्रकार के होते हैं– 1. पुल्लिंग तथा 2. स्त्रीलिंग।

1. पुल्लिंग : ऐसे शब्द जिनसे केवल पुरुष जाति का बोध होता है, उन्हें पुल्लिंग कहते हैं; जैसे–

(क) कछुआ धीरे-धीरे चल रहा है।

(ख) हिरन कूद रहा है।

(ग) मुरगा बाँग दे रहा है।

(घ) मोर बाग में नाच रहा है।

यहाँ आपने देखा कि कछुआ, हिरन, मुरगा तथा मोर ये सब पुरुष जाति का बोध करा रहे हैं, इसलिए ये सब पुल्लिंग वाले शब्द हैं।

2. स्त्रीलिंग: ऐसे शब्द जिनसे केवल स्त्री जाति का बोध होता है, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे–

(क) शेरनी अपने शावकों के साथ खेल रही है।

(ख) हिरनी बच्चे को दूध पिला रही है।

(ग) मुरगी अपने चूज़ों को घुमा रही है।

(घ) गाय अपने बछड़े को प्यार कर रही है।

यहाँ शेरनी, हिरनी, मुरगी तथा गाय शब्द स्त्रीलिंग जाति का बोध करा रहे हैं, इसलिए ये सब स्त्रीलिंग वाले शब्द हैं।

स्त्रीलिंग-पुल्लिंग की पहचान

प्राय: प्राणीवाचक संज्ञा शब्दों में स्त्रीलिंग-पुल्लिंग शब्दों की पहचान उनकी शारीरिक संरचना या बनावट के आधार पर देखकर की जाती है; जैसे–

पुल्लिंग– साँप, बंदर, बैल, शेर, मकड़ा, उल्लू, कौआ, भैंसा, घोड़ा, बकरा आदि।

स्त्रीलिंग– मोरनी, भैंस, गाय, बकरी, घोड़ी, बंदरिया, चुहिया, मकड़ी, मादा उल्लू, साँपिन आदि।

सदैव पुल्लिंग रहने वाले शब्द

(क) पर्वतों के नाम– हिमालय, सतपुड़ा, नीलगिरी, मैकाल आदि।

(ख) वृक्षों के नाम– आम, पीपल, बरगद, कटहल, महुआ, जामुन, अशोक, ओक, बाँस, शीशम, सेमल आदि।

(ग) फलों के नाम– आम, संतरा, नींबू, जामुन, कटहल, सेब, अनार, अंजीर, चीकू, केला, पपीता आदि।

(घ) देशों के नाम– भारत, अमेरिका, चीन, जापान, कज़ाकिस्तान, श्रीलंका, पाकिस्तान, दक्षिण अमेरिका, मोरक्को, रूस, ताइवान आदि।

(ङ) **तरल चीज़ों के नाम–** दूध, तेल, घी, पेट्रोल, पानी आदि।

(च) **अनाजों के नाम–** गेहूँ, मक्क, चना, जौ, चावल, मटर, मसूर, बाजरा आदि।

(छ) **महीनों के नाम–** जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल, मई, जून, जुलाई, अगस्त, सितंबर, अक्टूबर, नवंबर, दिसंबर।

हिंदी महीने– चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, सावन, भादो, आश्विन, कार्तिक, अगहन (मार्गशीष), पौष, माघ, फाल्गुन।

(ज) **रत्नों के नाम–** नीलम, पन्ना, हीरा, पुखराज आदि।

(झ) **समुद्रों के नाम–** प्रशांत महासागर, अटलांटिक महासागर, हिंद महासागर, आर्कटिक महासागर, अरब सागर आदि।

(ञ) **शरीर के कुछ अंगों के नाम–** मस्तक, मुँह, हाथ, पैर, पेट, कान, दाँत, गला, हृदय, बाल, नाखून आदि।

सदैव स्त्रीलिंग रहने वाले शब्द

(क) **आभूषणों के नाम–** चूड़ी, बिंदी, पायल, पेटी, नथ, माला, अँगूठी आदि।

(ख) **नदियों के नाम–** गंगा, यमुना, नर्मदा, गोदावरी, महानदी, कृष्णा, कावेरी, तुंगभद्रा, माही, अलकनंदा, सरस्वती आदि।

(ग) **भाषाओं के नाम–** चीनी, जापानी, अंग्रेज़ी, हिंदी, भोजपुरी, रूसी, जापानी, गुजराती, मराठी, पंजाबी, कश्मीरी, असमिया, उड़िया आदि।

(घ) **अंगों के नाम–** दाढ़ी, मूँछ, जाँघ, आँख, नाभि, पीठ, पलक, एड़ी आदि।

(ङ) **'इया' अंत वाले शब्द–** बढ़िया, खटिया, ज़चिया, बछिया, हँडिया, हँसिया, निंदिया, रसोईया आदि।

(च) **कुछ आहारों के नाम–** खीर, पूरी, चटनी, रबड़ी, कचौड़ी, सब्ज़ी, रोटी, दाल, इडली, कढ़ी, चपाती आदि।

अब आइए, यह जानने का प्रयास करें कि लिंग शब्दों का परिवर्तन किस प्रकार होता है?

(क) 'अ' अंत शब्द में 'आ' जोड़कर–

पुल्लिंग (अ)	स्त्रीलिंग (आ)	पुल्लिंग (अ)	स्त्रीलिंग (आ)
पूज्य	पूज्या	श्याम	श्यामा
अनुज	अनुजा	कमल	कमला
शिष्य	शिष्या	रंजन	रंजना

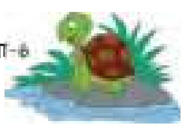

(ख) शब्दों के अंतिम अ, आ, ऊ, ए, के स्थान पर 'आइन' लगाकर–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
पंडित (अ)	पंडिताइन	लाला (आ)	ललाइन
ठाकुर (आ)	ठकुराइन	बाबू (ऊ)	बबुआइन
मास्टर (अ)	मास्टराइन	गुरु (उ)	गुरुआइन
पंडा (आ)	पंडाइन	पांडे (ए)	पंडाइन
बनिया (आ)	बनियाइन	चौबे (ए)	चौबाइन

(ग) 'अक' के स्थान पर 'इका' लगाकर–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
विधायक	विधायिका	अध्यापक	अध्यापिका
गायक	गायिका	नायक	नायिका
नाटक	नाटिका	सेवक	सेविका
लेखक	लेखिका	पाठक	पाठिका

(घ) शब्दों के अंत में 'आनी' लगाकर–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
देवर	देवरानी	भद्र	भद्राणी
नौकर	नौकरानी	इंद्र	इंद्राणी
क्षत्रिय	क्षत्राणी	मथ	मथानी
जेठ	जेठानी	चंद्र	चंद्राणी

(ङ) अक्षर के अंत में 'नी' लगाकर–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
ऊँट	ऊँटनी	जाट	जाटनी
सिंह	सिंहनी	मोर	मोरनी
शेर	शेरनी	रीछ	रीछनी
भील	भीलनी	हाथी	हथिनी

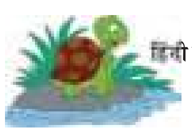

(च) अंतिम 'आ' के स्थान पर 'इया' लगाकर–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
बछड़ा	बछिया	गुड्डा	गुड़िया
बेटा	बिटिया	बूढ़ा	बुढ़िया
डिब्बा	डिबिया	चूहा	चूहिया
चिड़ा	चिड़िया	पाड़ा	पड़िया

(छ) अक्षर के अंत में 'मती' तथा 'वती' लगाकर–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
भगवान	भगवती	दयावान	दयावती
श्रीमान	श्रीमती	बलवान	बलवती
रूपवान	रूपमती	गुणवान	गुणवती
आयुष्मान	आयुष्मती	बुद्धिमान	बुद्धिमती
भाग्यवान	भाग्यवती	धनवान	धनवती

(ज) शब्दों के अंत में 'इन' जोड़कर–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
माली	मालिन	नाती	नातिन
धोबी	धोबिन	सुनार	सुनारिन
नाई	नाइन	लुहार	लुहारिन
पड़ोसी	पड़ोसिन	कुम्हार	कुम्हारिन
ग्वाला	ग्वालिन	कुंजड़ा	कुंजड़िन

(झ) 'आ' अंत में 'ई' जोड़कर–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
मामा	मामी	नाना	नानी
दादा	दादी	मौसा	मौसी
घोड़ा	घोड़ी	गधा	गधी
बकरा	बकरी	मुरगा	मुरगी
सखा	सखी	चाचा	चाची
मंगला	मंगली	काना	कानी

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को लिंग अध्याय पढ़ाते समय नैतिकता का भी ध्यान रखें और बच्चों को इसका पालन करने की प्रेरणा दें। साथ ही लिंग के आधार पर वाक्य रचना भी सिखाएँ।

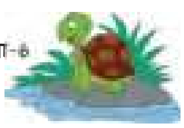

आइए, पुनरावृति करें

- जिन शब्दों से स्त्री या पुरुष का बोध होता है, उन्हें लिंग कहते हैं।
- लिंग के दो भेद होते हैं– पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग
- ऐसे शब्द जिनसे पुरुष जाति का बोध होता है, उसे पुल्लिग कहते हैं।
- ऐसे शब्द जिनसे स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं।
- अनेक प्रकार के प्रत्यय लगाकर पुल्लिग शब्दों से स्त्रीलिंग शब्द बनाए जाते हैं।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य — Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) लिंग के कितने भेद होते हैं?

(ख) सदैव स्त्रीलिंग रहने वाले कुछ शब्दों को बताइए।

(ग) सदैव पुल्लिग रहने वाले कुछ शब्द बताइए।

लेखन कार्य — Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) लिंग की परिभाषा देकर उदाहरण दीजिए।

(ख) पुल्लिग और स्त्रीलिंग शब्दों में क्या अंतर होता है?

(ग) पुल्लिग से स्त्रीलिंग बनाने के कौन-कौन से नियम होते हैं?

2. दिए गए शब्दों के स्त्रीलिंग शब्द बनाइए।

पुजारी – ....
नाई – ....
अध्यापक – ....
जाट – ....
हाथी – ....
कुम्हार – ....
लुहार – ....
धोबी – ....

3. दिए गए शब्दों के सामने उनके लिंग लिखिए।

अनुजा – ....
हाथी – ....
कछुआ – ....
मछली – ....
माली – ....
चूहा – ....
विद्या – ....
लखनऊ – ....
खरगोश – ....
धोबी – ....
अनुज – ....
पूर्णिमा – ....

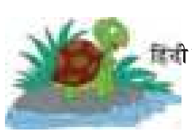

4. दिए गए शब्दों को उनके सही लिंग से रेखा खींचकर मिलाइए।

लड़की		बाला
बाल		बैल
विदुषी	पुल्लिंग	पूर्णिमा
लोहार		कुम्हारिन
शेरनी	स्त्रीलिंग	पेड़
नायक		अंग्रेज़

5. दिए गए वाक्यों में कोष्ठक में से उचित शब्द चुनकर भरिए।

(क) फ़िल्म में .... के संवाद से दर्शक खुश हो गए। (गायक / नायक)

(ख) 'सोनजुही' कहानी की .... महादेवी वर्मा जी हैं। (लेखिका / लेखक)

(ग) आजकल .... लड़कों से हर क्षेत्र में बाजी मार रही हैं। (लड़कों / लड़कियाँ)

(घ) श्रीमान का स्त्रीलिंग .... होता है। (श्रीमता / श्रीमती)

(ङ) नंदा देवी .... शब्द है। (पुल्लिग / स्त्रीलिंग)

(च) सेठ और ....तीर्थयात्रा के लिए जा रहे हैं। (सेठनी / सेठानी)

(छ) मछली का पुल्लिग ....होता है। (मछली / नर मछली)

6. दिए गए शब्दों को उचित स्थान में रखिए।

तोता, बकरी, शेर, बेर, अरबी, आम, लीची, पपीता, नागिन, मगरमच्छ, नर्मदा, कुम्हारिन, तोती, कुरसी, पड़ोस, मूँगा

पुल्लिग	स्त्रीलिंग	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

7. दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों के लिंग बदलकर वाक्य दोबारा लिखिए–

(क) पेड़ों पर <u>बंदर</u> कूद रहा है। ....

(ख) जंगल में <u>हिरन</u> दौड़ रहे हैं। ....

(ग) <u>मुरगे</u> इधर-उधर भाग रहे हैं। ....

(घ) <u>लड़कियाँ</u> झूला-झूल रही हैं। ....

(ङ) <u>पुरुष</u> मेला देख रहे हैं। ....

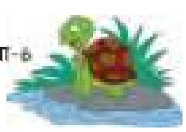

सोचें-विचारें

Critical Thinking

8. अपने दैनिक जीवन में इस्तेमाल की जाने वाली वस्तुओं में से लिंग के आधार पर उनका विभाजन कर एक सूची तैयार कीजिए। इस सूची में वस्तुओं, प्राणियों या व्यक्तियों को सोच-समझकर शामिल कीजिए।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

9. बतख पर स्त्रीलिंग एवं मोर के चित्र पर पुल्लिंग शब्दों के नाम लिखवाएँ और इनमें रंग भरवाएँ।

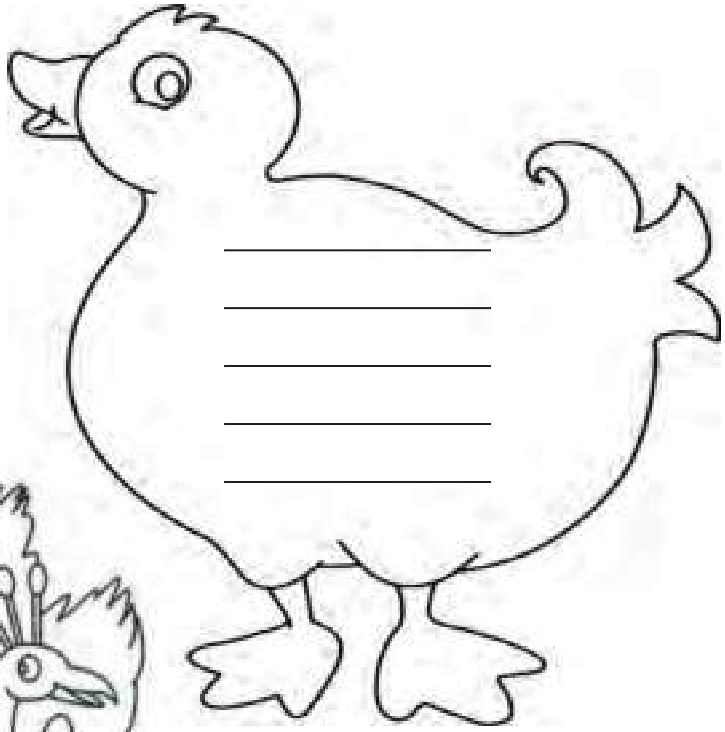

प्रेरणादायक मूल्य

हमें सदैव स्त्री हो या पुरुष सभी का एक समान रूप से सम्मान करना चाहिए। यह हमारे व्यक्तित्व को दर्शाता है।

अध्याय 6

वचन
(Number)

पढ़िए और समझिए

बच्चो! दिए गए चित्रों को देखिए और उनके नीचे लिखे शब्दों को पढ़िए।

पतंग

पतंगें

चूहा

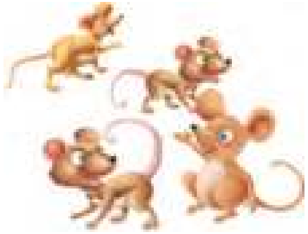
चूहे

ऊपर लिखे शब्द पतंग तथा चूहा एक की संख्या को दर्शाते हैं, वहीं पतंगें तथा चूहे शब्द उनकी एक से अधिक या अनेक की संख्या को दर्शाते हैं। अतएव हम कह सकते हैं कि–

ऐसे शब्द जिनसे उनके एक या अनेक होने का पता चलता है, उन्हें वचन कहते हैं।

अब ऊपर के उदाहरणों में पतंग तथा चूहा शब्द एक की संख्या दिखाते हैं, इसलिए उन्हें 'एकवचन' कहेंगे। दूसरी ओर 'पतंगें' तथा चूहे शब्द अपनी अनेक संख्या को दर्शाते हैं, इसलिए वे अनेक या 'बहुवचन' शब्द कहे जाएँगे।

वचन के भेद

वचन के दो भेद होते हैं– एकवचन तथा बहुवचन।

1. **एकवचन**– ऐसे शब्द जिनसे उनकी केवल एक संख्या का बोध होता है, उनको एकवचन कहते हैं; जैसे–

   हाथी चल रहा है।

   मोर नाच रहा है।

   कुत्ता भौंक रहा है।

2. **बहुवचन**– ऐसे शब्द जिनसे उनकी एक से अधिक यानी बहुत (अनेक) संख्या का बोध होता है, उन्हें बहुवचन कहा जाता है; जैसे–

   बंदर केले लेकर भागा।

   बिल्लयाँ दौड़ रही हैं।

   सड़क पर गाड़ियाँ दौड़ रही हैं।

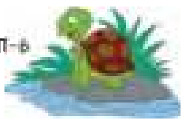

यहाँ रंगीन शब्द- 'केले', 'बिल्लियाँ' तथा 'गाड़ियाँ' से उनकी अनेक संख्या के होने की जानकारी मिल रही है अत: ये बहुवचन हैं। अब आइए, जानें कि वचन की पहचान किस प्रकार की जाती है?

वचन की पहचान दो प्रकार से की जाती है–

(क) संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के प्रयोग द्वारा

(ख) क्रिया शब्दों के प्रयोग द्वारा।

अब इन वाक्यों को पढ़कर समझने का प्रयास करें–

(क) सरिता संतरा खा रही है। (एकवचन, संज्ञा शब्द)

(ख) दुकानदार संतरे बेच रहा है। (अनेक संतरे, बहुवचन, संज्ञा शब्द)

(ग) वह खेल रहा है। (एकवचन, सर्वनाम शब्द)

(घ) वे सब खेल रहे हैं। (बहुवचन, सर्वनाम शब्द)

(ङ) मोटा आदमी कसरत कर रहा है। (एकवचन, विशेषण शब्द)

(च) मोटे आदमी कसरत कर रहे हैं। (बहुवचन, विशेषण शब्द)

यहाँ संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण शब्द (रंगीन) द्वारा वचन की पहचान स्पष्ट हो रही है।

क्रिया शब्दों का प्रयोग-

क्रिया शब्दों के द्वारा भी वचन का ज्ञान होता है कि एकवचन है या बहुवचन जैसे-

घोड़ा दौड़ रहा है।

घोड़े दौड़ रहे हैं।

मोर नाच रहा है।

मोर नाच रहे हैं।

यहाँ ऊपर के रंगीन शब्द क्रियाएँ हैं। उनमें 'दौड़ रहा है' तथा 'नाच रहा है।' से किसी एक के दौड़ने तथा नाचने की जानकारी प्राप्त होती है, इसलिए ये क्रियाएँ एकवचन की हैं। दूसरी ओर 'दौड़ रहे हैं।' तथा 'नाच रहे हैं' से एक से अधिक या अनेक द्वारा दौड़ने तथा नाचने की जानकारी हो रही है, अत: ये क्रियाएँ बहुवचन की हैं।

इसके अतिरिक्त कुछ शब्द हमेशा एकवचन में प्रयोग किए जाते हैं, तो वहीं कुछ शब्द अनेक वचन में प्रयुक्त होते हैं।

सदैव एकवचन वाले शब्द- सोना (धातु), दूध, पानी, चाय, आइसक्रीम, सोना आदि।

सदैव बहुवचन वाले शब्द- प्राण, आँसू, बाल, लोग आदि।

ध्यान दें – अपने से बड़ों के लिए आदरसूचक शब्दों का प्रयोग किया जाता है; जैसे–

मम्मी सब्ज़ी लेने गई हैं।

पिता जी दफ़्तर चले गए।

बच्चो! वचनों का परिवर्तन भी किया जाता है। इसके लिए कुछ नियम बनाए गए हैं। आइए, उन नियमों के द्वारा उन्हें जानने का प्रयास करते हैं–

(क) 'आ' अंत्य शब्दों के अंत में 'एँ' जोड़कर–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कला	कलाएँ	महिला	महिलाएँ
माला	मालाएँ	लता	लताएँ
शाखा	शाखाएँ	माता	माताएँ
दिशा	दिशाएँ	सेना	सेनाएँ
अदा	अदाएँ	भुजा	भुजाएँ

(ख) 'अ' अंत्य शब्दों के अंत में 'एँ' लगाकर–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
रात	रातें	आँख	आँखें
बात	बातें	बस	बसें
घात	घातें	बहन	बहनें
पुस्तक	पुस्तकें	गाय	गायें
भैंस	भैंसें	चाल	चालें

(ग) 'आ' अंत्य शब्दों के अंत में 'ए' जोड़कर–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बच्चा	बच्चे	छाता	छाते
सच्चा	सच्चे	रिश्ता	रिश्ते
पक्का	पक्के	बाजा	बाजे
पन्ना	पन्ने	काला	काले
पत्ता	पत्ते	कुत्ता	कुत्ते

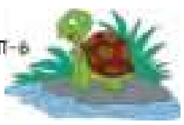

(घ) स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'ई' को 'इयाँ' में बदलकर–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
साड़ी	साड़ियाँ	गाड़ी	गाड़ियाँ
पंखुड़ी	पंखुड़ियाँ	तितली	तितलियाँ
मछली	मछलियाँ	लड़की	लड़कियाँ
बेटी	बेटियाँ	रोटी	रोटियाँ
राखी	राखियाँ	सब्ज़ी	सब्ज़ियाँ
चिट्ठी	चिट्ठियाँ	पूड़ी	पूड़ियाँ
भट्ठी	भट्ठियाँ	चूड़ी	चूड़ियाँ
गड्डी	गड्डियाँ	बच्ची	बच्चियाँ
रस्सी	रस्सियाँ	सखी	सखियाँ

(ङ) स्त्रीलिंग शब्दों में 'या' अंत को 'याँ' में बदलकर–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
चिड़िया	चिड़ियाँ	बुढ़िया	बुढ़ियाँ
पुड़िया	पुड़ियाँ	खटिया	खटियाँ
गुड़िया	गुड़ियाँ	चुटिया	चुटियाँ
बिटिया	बिटियाँ	चुहिया	चुहियाँ
डिबिया	डिबियाँ	बंदरिया	बंदरियाँ

(च) कुछ नए शब्द जोड़कर–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
अध्यापक	अध्यापकगण	प्रजा	प्रजाजन
नेता	नेतागण	गुरु	गुरुजन
छात्र	छात्रगण	प्रजा	प्रजाजन
कवि	कविगण	विद्यार्थी	विद्यार्थीगण
पाठक	पाठकवर्ग	मज़दूर	मज़दूरवर्ग
निवासी	निवासीगण	अमीर	अमीर लोग

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को वचन के बारे में समझाते हुए उनका वाक्य में प्रयोग के तरीके को भी बताएँ।

(छ) उ, ऊ तथा 'औ' अंत्य शब्दों के अंत में 'एँ' जोड़कर-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
धातु	धातुएँ	वस्तु	वस्तुएँ
बहू	बहुएँ	गौ	गौएँ
वधू	वधुएँ	भौं	भौंएँ
धेनु	धेनुएँ	ऋतु	ऋतुएँ

(ज) 'अ' 'आ' अंत्य शब्दों में 'ओं' जोड़कर-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
पेड़	पेड़ों	गमला	गमलों
पंखा	पंखों	दिन	दिनों
घड़ा	घड़ों	वर्ष	वर्षों
फल	फलों	काम	कामों

आइए, पुनरावृति करें

वचन (संख्या)

- एकवचन (एक का ज्ञान)
- बहुवचन (अनेक या एक से अधिक का ज्ञान)

- **वचन**- जिन शब्दों से एक-अनेक की जानकारी मिलती है।
- **एकवचन**- जिन शब्दों से एक संख्या का बोध होता है।
- **बहुवचन**- जिन शब्दों से एक से अधिक संख्या के बारे में पता चलता है।
- अनेक प्रकार से एकवचन से बहुवचन शब्द बनाए जाते हैं।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) वचन के भेद बताइए।

(ख) बहुवचन के दो उदाहरण बताइए।

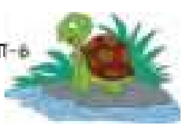

लेखन कार्य

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) वचन किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

(ख) एकवचन की परिभाषा देकर उदाहरण भी दीजिए।

(ग) एकवचन तथा बहुवचन में अंतर स्पष्ट कीजिए।

(घ) क्रिया से कैसे पता चलता है कि वह एकवचन है या बहुवचन? स्पष्ट कीजिए।

2. दिए गए शब्दों के वचन बदलकर लिखिए।

रुपया –	....	छात्र –	....
बहू –	....	गौ –	....
पत्तियाँ –	....	पक्के –	....
लताएँ –	....	डिबिया–	....
बस्ता –	....	सेना –	....
विद्यार्थी –	....	धातु –	....

3. दिए गए वाक्यों के रेखांकित शब्दों के वचन बदलकर दोबारा लिखिए।

(क) मैदान में बकरी चर रही है।

मैदान में बकरियाँ चर रही हैं।

(ख) मेले में घोड़ा दौड़ने लगा।

....

(ग) भारत में छह ऋतु आती हैं।

....

(घ) भारत देश को त्योहार का देश कहा जाता है।

....

4. दिए गए शब्दों को उनके सही कथन से रेखा खींचकर मिलाइए।

लताएँ		पक्षीवृंद
दुकानें	एकवचन	पाठकवर्ग
स्त्रियाँ		धेनुएँ
भैंस		रात
दही		महिला
नदी	बहुवचन	पुड़िया
पानी		दूध

सोचें-विचारें

Critical Thinking

5. आदरसूचक वाक्यों में सदैव बहुवचन का प्रयोग किया जाता है, एकवचन का नहीं? सोचकर बताइए

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

6. किसी हिंदी अखबार / कहानी की पुस्तक आदि में से वचन संबंधी शब्द छाँटिए। उसे अपनी कॉपी में लिखकर उसके सामने वचन का नाम लिखिए और अपने शिक्षक/ शिक्षिका को दिखाइए।
7. कक्षा में छात्रों के दो समूह– एकवचन तथा बहुवचन बनवाकर उनसे एक-एक शब्द बुलवाकर दूसरे समूह से वचन परिवर्तन करवाएँ।

8. श्यामपट्ट/ह्वाइट बोर्ड पर छात्रों से कुछ शब्द लिखवाएँ। फिर उसके वचन को परिवर्तित करके वहीं लिखें।

प्रेरणादायक मूल्य

समस्त जीवन में हमारे सामने चुनौतियाँ एक हो या अनेक, हमें उनका डटकर सामना करना चाहिए।

अध्याय 7

सर्वनाम
(Pronoun)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्रों को देखिए और उनके नीचे लिखे वाक्यों को पढ़िए। रंगीन शब्दों पर ध्यान दीजिए–

माता जी गोभी काट रही हैं।

पिता जी तैयार हो रहे हैं।

भाई विद्यालय जाएगा।

वे उसकी सब्ज़ी बनाएँगी।

वे दफ़्तर जाएँगे।

वह वहाँ पढ़ेगा-लिखेगा।

अब यहाँ ध्यान दीजिए कि पहली पंक्ति में रंगीन शब्द माता जी, पिता जी तथा भाई संज्ञा शब्द हैं, जो अपनी-अपनी क्रियाओं के कर्ता हैं। दूसरी पंक्ति में आए रंगीन शब्द वे, उसकी, वे, वह तथा वहाँ– ये सभी माता जी, पिता जी एवं भाई के बदले प्रयोग किए गए हैं। ये सब शब्द भी अपनी-अपनी क्रियाओं के कर्ता हैं। अतः हम यह भी कह सकते हैं कि–

ऐसे शब्द जो संज्ञा (नाम) के स्थान पर अथवा उसके बदले प्रयोग किए जाते हैं, वे सब सर्वनाम शब्द कहलाते हैं।

सर्वनाम शब्दों के प्रयोग से हम एक ही संज्ञा शब्द की पुनरावृति करने से बच जाते हैं और भाषा भी अच्छी हो जाती है। भाषा को सुंदर और वाक्य के अटपटेपन से बचने के लिए हम सब सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करते हैं। 'सर्वनाम' अर्थात् सबके नाम। कहने का अभिप्राय यह है कि इन शब्दों का प्रयोग हर प्रकार के नामों के स्थान पर किया जाता है ताकि वाक्य को अटपटा लगने से बचाया जा सके।

अब नीचे लिखे वाक्यों को पढ़िए–

धनंजय एक अच्छा लड़का है। धनंजय के माता-पिता डॉक्टर हैं। धनंजय भी धनंजय के पिता की तरह डॉक्टर बनेगा। धनंजय साफ़-सफ़ाई पर विशेष ध्यान देता है। धनंजय धनंजय की कक्षा का होनहार एवं सर्वश्रेष्ठ छात्र है। धनंजय के सभी मित्र धनंजय पर गर्व करते हैं। धनंजय विद्यालय में अच्छी तरह से पढ़ाई करता है।

अब नीचे लिखे इन वाक्यों को पढ़िए और रंगीन शब्दों पर ध्यान दीजिए–

धनंजय एक अच्छा लड़का है। उसके माता-पिता डॉक्टर हैं। वह भी अपने पिता की तरह डॉक्टर बनेगा। वह साफ़-सफ़ाई पर विशेष ध्यान देता है। वह अपनी कक्षा का होनहार एवं सर्वश्रेष्ठ छात्र है। उसके सभी मित्र उस पर गर्व करते हैं। वह विद्यालय में अच्छी तरह से पढ़ाई करता है।

यहाँ भी सर्वनाम शब्दों (रंगीन) के प्रयोग से भाषा सुंदर हो जाती है। कुछ सर्वनाम शब्दों की सूची यहाँ दी जा रही है:

मैं	वह	उसे	उसका	अपना	कुछ	हम	तुम	यह	वह
जो	सो	हमारा	तुम्हारा	तुमने	हमने	किसने	कौन	कोई	क्या

सर्वनाम के भेद

सर्वनाम के छह भेद होते हैं– 1. पुरुषवाचक सर्वनाम 2. निश्चयवाचक सर्वनाम 3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम 4. संबंधवाचक सर्वनाम 5. प्रश्नवाचक सर्वनाम 6. निजवाचक सर्वनाम।

1. **पुरुषवाचक सर्वनाम:** ऐसे सर्वनाम शब्द जिनका प्रयोग श्रोता, वक्ता या ऐसे अन्य किसी व्यक्ति के लिए प्रयोग किया जाता है, वे पुरुषवाचक सर्वनाम शब्द कहलाते हैं; जैसे–

मैंने गृहकार्य पूरा कर लिया।

तुमने अपना पाठ याद कर लिया होगा।

वे लोग इधर ही आ रहे हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन उपभेद होते हैं– (क) उत्तम पुरुष (ख) मध्यम पुरुष (ग) अन्य पुरुष।

(क) उत्तम पुरुष: ऐसे सर्वनाम शब्द जिनका वक्ता स्वयं के लिए प्रयोग करता है, उन्हें उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम शब्द कहते हैं; जैसे–

मैं कल आगरा जाऊँगा।

मुझे विद्यालय से पुरस्कार मिला।

हम मंदिर जा रहे हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में आए रंगीन शब्द मैं, मुझे, हम उत्तम पुरुष सर्वनाम शब्द हैं।

अध्यापन संकेत — शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में सर्वनाम को समझाते हुए उसके विभिन्न रूपों को वाक्य प्रयोग द्वारा समझाएँ।

(ख) मध्यम पुरुषः ऐसे सर्वनाम शब्द जिनका प्रयोग बोलने वाला (वक्ता) सुनने वाले (श्रोता) के लिए करता है, उन्हें मध्यम पुरुष सर्वनाम शब्द कहते हैं; जैसे–

आप कहाँ से आए हैं?

तुम आकर इधर बैठो।

तुम्हें परिश्रम अधिक करना होगा।

यहाँ वाक्यों में आए रंगीन शब्द आप, तुम, तुम्हें मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम शब्द हैं।

(ग) अन्य पुरुषः ऐसे सर्वनाम शब्द जिनका प्रयोग वक्ता या श्रोता के बजाय किसी अन्य के लिए किया जाता है, उसे अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–

वे लोग दौड़ते हुए कहाँ जा रहे हैं?

उन्होंने यात्रा की तैयारी कर ली है या नहीं।

उसको पास बुलाओ।

2. **निश्चयवाचक सर्वनामः** इसे संकेतवाचक सर्वनाम भी कहते हैं। ऐसे सर्वनाम शब्द जो किसी निकट या दूर की वस्तु या व्यक्ति का निश्चित बोध कराते हैं, वे निश्चयवाचक सर्वनाम शब्द कहलाते हैं; जैसे–

यह कलम मेरी है।

वह घर मेरे चाचा जी का है।

वे सब चीज़ें मेरी नहीं हैं।

इन वाक्यों में आए रंगीन शब्द यह, वह, वे निश्चयवाचक या संकेतवाचक सर्वनाम शब्द हैं।

3. **अनिश्चयवाचक सर्वनामः** ऐसे सर्वनाम शब्द जिनसे किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति का पता नहीं चलता है, बल्कि अनिश्चय की स्थिति होती है, वहाँ अनिश्चयवाचक सर्वनाम होता है; जैसे–

किसी ने भी मज़दूर को नहीं बचाया।

चाय में कुछ गिर गया है।

राम के साथ कोई और भी था।

4. **संबंधवाचक सर्वनामः** ऐसे सर्वनाम शब्द जिनका प्रयोग वाक्य में आए किसी दूसरे सर्वनाम शब्द से संबंध बताने के लिए किया जाता है, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–

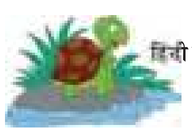

जो पढ़ेगा सो पास होगा।

जैसा करोगे वैसा ही भरोगे।

यहाँ जो-सो, जैसा-वैसा शब्दों से संबंधवाचक शब्दों का बोध होता है। इसलिए यहाँ संबंधवाचक सर्वनाम शब्द होता है।

5. **प्रश्नवाचक सर्वनाम:** किसी भी वस्तु, व्यक्ति अथवा स्थान के विषय में प्रश्न का बोध कराने वाले सर्वनाम शब्द प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे–

हमारे घर कौन आया है?

दादा जी किसके साथ गाँव जाएँगे?

मेले में किसे जाना है?

6. **निजवाचक सर्वनाम:** ऐसे सर्वनाम शब्द जो वाक्य में कर्ता के साथ अपनापन प्रकट करने के लिए प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–

मैं स्वयं ही चला जाऊँगा।

हमें प्रत्येक कार्य के लिए खुद ही प्रयास करने होंगे।

कुत्ता अपनेआप आ गया।

यहाँ वाक्यों में आए शब्द– स्वयं, खुद तथा अपनेआप निजवाचक सर्वनाम शब्द हैं।

अब आइए, देखें कि सर्वनाम शब्दों की रूप-रचना किस प्रकार होती है।

पुरुषवाचक सर्वनाम– मैं

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	मैंने, मैं	हमने, हम लोग, हम
कर्म	मुझे, मुझको	हमें, हमको, हम लोगों को
करण	मुझसे, मेरे द्वारा	हमसे, हमारे द्वारा
संप्रदान	मुझको, मुझे, मेरे लिए	हमें, हमारे लिए, हम लोगों के लिए
अपादान	मुझसे	हमसे, हम लोगों से
संबंध	मेरा, मेरी, मेरे	हमारे, हमारा, हमारी
अधिकरण	मुझमें, मुझपर	हम पर, हम लोगों में, हममें

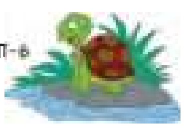

पुरुषवाचक सर्वनाम– तुम

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	तूने, तू	तुमने, तुम, तुम लोगों ने
कर्म	तुझको, तुझे	तुम्हें, तुम लोगों को
करण	तुझसे, तेरे द्वारा	तुमसे, तुम लोगों द्वारा
संप्रदान	तेरे लिए, तुझे	तुम्हारे लिए, तुम्हें
अपादान	तुझसे	तुमसे, तुम लोगों से
संबंध	तेरे, तेरा, तेरी	तुम्हारे, तुम्हारा, तुम्हारी
अधिकरण	तुझ पर, तुझमें	तुममें, तुम पर, तुम लोगों में

पुरुषवाचक सर्वनाम– यह

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	इसने, यह	इन्होंने, ये
कर्म	इसे, इसको	इन्हें, इनको
करण	इससे, इसके द्वारा	इनसे, इनके द्वारा
संप्रदान	इसको, इसके लिए	इन्हें, इन लोगों के लिए
अपादान	इससे	इनसे, इन लोगों से
संबंध	इसके, इसका, इसकी	इनकी, इनका, इन लोगों की
अधिकरण	इसमें, इस पर	इन पर, इनमें, इन लोगों में

पुरुषवाचक सर्वनाम– कोई

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	कोई, किसी ने	किन्हीं ने
कर्म	किसी को	किन्हीं को
करण	किसी से, किसी के द्वारा	किन्हीं से, किन्हीं के द्वारा
संप्रदान	किसी को, किसी के लिए	किन्हीं को, किन्हीं के लिए
अपादान	किसी से	किन्हीं को
संबंध	किसी की, किसी का	किन्हीं की, किन्हीं का
अधिकरण	किसी पर, किसी में	किन्हीं में, किन्हीं पर

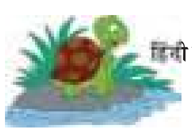

पुरुषवाचक सर्वनाम– जो

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	जो, जिसने	जो, जिन्होंने
कर्म	जिसे, जिसको	जिनको, जिन्हें
करण	जिसके द्वारा, जिससे	जिनसे, जिनके द्वारा
संप्रदान	जिसको, जिसके लिए	जिनको, जिनके लिए
अपादान	जिससे	जिनसे, जिन लोगों से
संबंध	जिसका, जिसकी	जिनकी, जिनका, जिनके
अधिकरण	जिसमें, जिस पर	जिनमें, जिन पर

पुरुषवाचक सर्वनाम– कौन

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	किसने, कौन	किन्होंने, कौन
कर्म	किसे, किसको	किनको, किन्हें
करण	किससे, किसके द्वारा	किनसे, किनके द्वारा
संप्रदान	किसको, किसके लिए	किनको, किनके द्वारा
अपादान	किससे	किनसे, किनके द्वारा
संबंध	किसका, किसकी	किनकी, किनका
अधिकरण	किसमें, किस पर	किन पर, किन में

आइए, पुनरावृति करें

- **सर्वनाम**– सबका नाम, संज्ञा के बदले बोले जाने वाले शब्द होते हैं।
- सर्वनाम के छह भेद होते हैं–1. पुरुषवाचक सर्वनाम 2. निश्चयवाचक सर्वनाम 3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम 4. संबंधवाचक सर्वनाम 5. प्रश्नवाचक सर्वनाम 6. निजवाचक सर्वनाम।

सर्वनाम (सबका नाम)

- पुरुषवाचक
  - 1. उत्तम पुरुष (मैं, मेरा)
  - 2. मध्यम पुरुष (तुम, तेरा)
  - 3. अन्य पुरुष (वे, उसका)
- निश्चयवाचक (वे, यह, ये)
- अनिश्चयवाचक (कोई, कुछ, किसी)
- संबंधवाचक (जो–सो, जैसा–वैसा)
- प्रश्नवाचक (कौन, किससे, किसको)
- निजवाचक (स्वयं, अपनेआप, खुद)

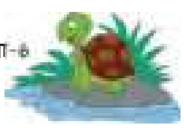

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) 'वह मेरी कमीज़ है।' में वह क्या दर्शाता है?

(ख) पुरुषवाचक सर्वनाम का एक उदाहरण बताइए।

(ग) 'आपने किससे सामान खरीदा था?' वाक्य सर्वनाम के किस भेद को दर्शाता है?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) सर्वनाम किसे कहते हैं? परिभाषा दीजिए।

(ख) सर्वनाम के दो भेदों के नाम लिखिए।

(ग) निजवाचक सर्वनाम की परिभाषा सोदाहरण दीजिए।

(घ) पुरुषवाचक सर्वनाम के उपभेदों के नाम लिखकर एक-एक उदाहरण भी दीजिए।

2. दिए गए वाक्यों में सर्वनाम शब्दों को रेखांकित करके उसके भेद का नाम लिखिए।

(क) सामने से कोई आ रहा है। अनिश्चयवाचक

(ख) आज मैंने पूरा शहर घूम लिया। ....

(ग) तुमने आज क्या कार्य किया है? ....

(घ) जो सोता है, वह खोता है। ....

(ङ) रहने दो, विपिन खुद कर लेगा। ....

(च) वह लाल वाली कार मेरी है। ....

3. दिए गए वाक्यों के खाली स्थान में उचित सर्वनाम शब्द भरिए।

(क) आज .... एक काले साँप को देखा। (तुमने, मैंने)

(ख) .... लड़की का नाम क्या है? (वहाँ, यहाँ, उस)

(ग) अध्यापिका जी .... बुला रही हैं। (तुझसे, उसको)

(घ) .... आज घर नहीं आऊँगा। (तुम, सब, मैं)

(ङ) सड़क पर .... रुमाल गिर गया है। (कोई, किसी का)

(च) .... स्कूल में मैं पढ़ा हूँ। (वहाँ, इस)

4. सही मिलान कीजिए।

(क)	स्वयं	(i)	प्रश्नवाचक
(ख)	मैंने	(ii)	अनिश्चयवाचक
(ग)	उसने	(iii)	संबंधवाचक
(घ)	यह, ये	(iv)	निश्चयवाचक
(ङ)	जैसा-वैसा	(v)	मध्यम पुरुष
(च)	कोई-कुछ	(vi)	उत्तम पुरुष
(छ)	किसके-किसको	(vii)	निजवाचक

सोचें-विचारें

Critical Thinking

5. सर्वनाम के शब्द 'यह' और 'वे' किन दो भेदों के लिए प्रयोग किए जाते हैं? सोचकर बताइए।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

6. अपनी पाठ्यपुस्तक में से सर्वनाम शब्द छाँटकर लिखिए तथा उनके भेदों के नाम भी लिखिए।

7. कक्षा में अध्यापिका सर्वनाम के कुछ शब्द छात्रों से बुलवाकर श्यामपट्ट पर लिखें और छात्रों से उनके वाक्य प्रयोग करवाएँ।

8. कक्षा में छात्रों के छह समूह बनवाएँ। उनको सर्वनाम के एक भेद का नाम देकर उनसे संबंधित शब्द बुलवाएँ।

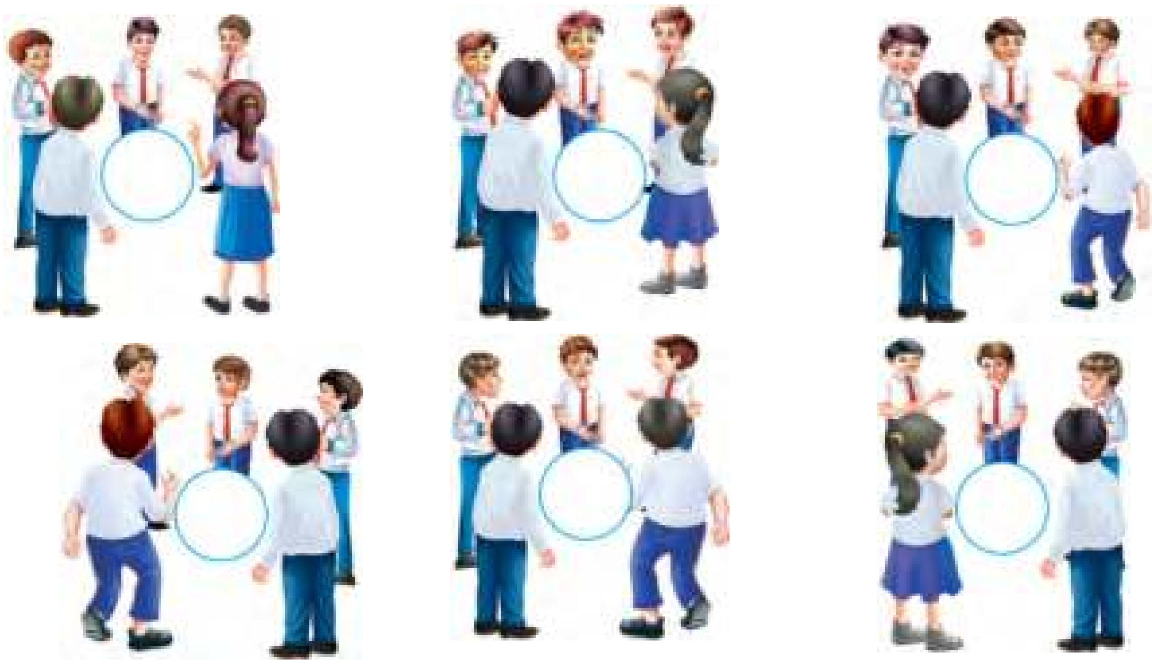

प्रेरणादायक मूल्य

सर्वनाम के अंतर्गत प्रयुक्त होने वाले शब्दों की सबसे मूल विशेषता यह है कि मैं, आप और हम शब्द मिलकर ही समाज और राष्ट्र का निर्माण करते हैं।

अध्याय 8

विशेषण
(Adjective)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्र देखिए तथा उनके नीचे लिखे वाक्य पढ़िए–

बगीचे में सुंदर फूल खिले हैं।

ये सब्ज़ियाँ ताज़ी हैं।

पिता जी गर्म कॉफ़ी पी रहे हैं।

बच्चो! यहाँ ऊपर लिखे वाक्यों में रंगीन शब्द– सुंदर, ताज़ी और गर्म शब्द क्रमशः फूल, सब्ज़ियाँ और कॉफ़ी की विशेषता बता रहे हैं। इसलिए ये तीनों रंगीन शब्द विशेषण कहे जाएँगे।

अतः हम कह सकते हैं कि–

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताते हैं, वे विशेषण शब्द कहलाते हैं।

यहाँ एक बात का ध्यान और रखना है कि जिन शब्दों की विशेषता बताई जाती है, उन्हें विशेष्य कहते हैं। ऊपर के उदाहरणों में फूल, सब्ज़ियाँ और कॉफ़ी शब्द विशेष्य हैं।

अब आइए, विशेषण शब्दों के भेदों के बारे में जानें–

विशेषण शब्द चार प्रकार के होते हैं– 1. गुणवाचक 2. संख्यावाचक 3. परिमाणवाचक 4. सार्वनामिक।

1. गुणवाचक विशेषणः

नीचे बने चित्र देखिए और उनके नीचे लिखे वाक्य पढ़िए–

मैंने रसीली लीची खाई।

हमारे सैनिक वीर हैं।

कर्ण दानी था।

ऊपर के उदाहरणों में रंगीन शब्द– रसीली, वीर, दानी शब्द क्रमशः लीची, सैनिक एवं कर्ण के गुणों की विशेषता बता रहे हैं, इसलिए इनको गुणवाचक विशेषण कहा जाएगा।

गुणवाचक विशेषण इन विशेषताओं पर निर्भर होते हैं–

गुण-दोष : ईमानदार, बदमाश, दानी, कंजूस, मधुर, खट्टा आदि।

रंगबोधक : गोरा, काला, साँवला, हरा, नीला, पीला, सफ़ेद आदि।

आकारबोधक : लंबा, चौड़ा, गोल, चौकोर, छोटा, बड़ा, बौना, ठिगना, विशाल आदि।

भाव : दयालु, शांत, वीर, क्रोधी, मस्त, खुशदिल आदि।

अवस्था/दशा : बूढ़ा, युवा, ठोस, कमज़ोर, ताकतवर, स्वस्थ, अस्वस्थ, बीमार आदि।

देश-काल : रूसी, चीनी, जापानी, भारतीय, अमेरिकी, शहरी, ग्रामीण, हरियाणवी आदि।

2. संख्यावाचक विशेषणः

नीचे दिए गए चित्र देखिए तथा उनके नीचे लिखे वाक्य पढ़िए–

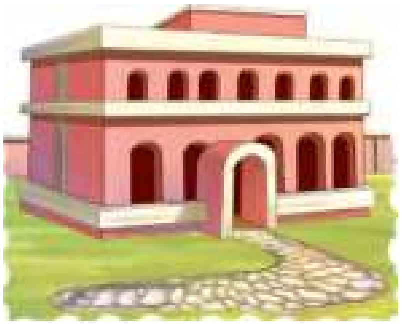

विद्यालय में पचास कमरे हैं।

डाल पर चार तोते बैठे हैं।

घर में कुछ लोग आए हैं।

उपर्युक्त उदाहरणों में पचास, चार तथा कुछ शब्द संख्या का बोध करा रहे हैं जो कि क्रमशः कमरे, तोते एवं लोग की विशेषता के रूप में कार्य कर रहे हैं। अतः ये सब संख्यावाचक विशेषण कहे जाएँगे।

संख्यावाचक विशेषण के दो भेद होते हैं–

(क) निश्चित संख्यावाचक विशेषण तथा (ख) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

(क) निश्चित संख्यावाचक विशेषणः ऐसे सर्वनाम शब्द जो निश्चित संख्या का बोध कराते हैं, उन्हें निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे–

तीन छात्रों ने अभिनय किया।

पाँचवाँ लड़का बहुत शैतान है।

ऊपर के वाक्यों में तीन, पाँचवाँ शब्द निश्चित संख्यावाचक विशेषण शब्द हैं।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को विशेषण के बारे में समझाएँ तथा उचित उदाहरणों का प्रयोग कर विशेषण के भेदों को भी स्पष्ट रूप से समझाएँ।

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषणः ऐसे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम की किसी निश्चित संख्या का बोध नहीं कराते हैं, वे अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे–

कोरोना से हज़ारों लोगों की मृत्यु हो गई।

दिलबाग ने कई समोसे खाए।

यहाँ हज़ारों, कई शब्दों से किसी निश्चित संख्या का बोध नहीं हो रहा है, इसलिए ये सभी शब्द अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण हैं।

3. परिमाणवाचक विशेषणः

नीचे दिए गए चित्र देखिए और उनके नीचे लिखे वाक्य पढ़िए–

थोड़ा ही दूध बचा है।

एक किलो मिठाई दे दो।

तीन मीटर पीला कपड़ा दे दो।

यहाँ ऊपर के वाक्यों में आए शब्द थोड़ा, एक किलो, तीन मीटर परिमाण, नाप-तौल आदि का बोध करा रहे हैं, इसलिए ये परिमाणवाचक विशेषण शब्द कहलाएँगे।

परिमाणवाचक विशेषण के भी दो भेद होते हैं–

(क) निश्चित परिमाणवाचक तथा (ख) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण।

(क) निश्चित परिमाणवाचकः ऐसे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के निश्चित परिमाण का बोध कराते हैं, उन्हें निश्चित परिमाणवाचक शब्द कहते हैं; जैसे–

हमारे घर में बीस किलो राशन आता है।

पिता जी पाँच किलो आम ले आए।

ग्वाला तीन लीटर दूध दे गया है।

यहाँ वाक्यों में आए शब्द– बीस किलो, पाँच किलो तथा तीन लीटर शब्द वाक्यों में आए संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के निश्चित परिमाण का बोध करा रहे हैं। इसलिए ये निश्चित परिमाणवाचक विशेषण शब्द हैं।

(ख) अनिश्चित परिमाणवाचक शब्दः ऐसे शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम के किसी निश्चित परिमाण का बोध नहीं कराते हैं, वे अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण शब्द कहलाते हैं; जैसे–

कुछ पेड़े मेहमानों के लिए मँगवा लो।

चाय में थोड़ी शक्कर डाल दो।

इतना भोजन पर्याप्त है।

4. सार्वनामिक विशेषणः

नीचे दिए चित्रों को देखिए तथा उनके नीचे लिखे वाक्य पढ़िए–

ये घर मेरा है।

यह फ्रॉक अच्छी है।

उस दुकान में भीड़ है।

यहाँ ये, यह तथा उस शब्द संज्ञा या सर्वनाम से पहले लगकर विशेषण का कार्य कर रहे हैं, इसलिए ये सार्वनामिक विशेषण कहलाएँगे। सार्वनामिक विशेषणों को संकेतवाचक विशेषण भी कहा जाता है।

संख्यावाचक और परिमाणवाचक विशेषण में अंतर

ऐसी चीज़ें जिनकी माप-तौल की जाती है, उनके लिए परिमाणवाचक शब्द का प्रयोग किया जाता है, जबकि जिन संज्ञा या सर्वनामों को गिना जा सकता है, उनके लिए संख्यावाचक शब्द का प्रयोग किया जाता है; जैसे–

मैंने एक दर्जन अंडे खरीदे। (संख्यात्मक विशेषण)

मेरे घर दो लीटर दूध आता है। (परिमाणवाचक विशेषण)

सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण में अंतर

ऐसे शब्द जो संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त किए जाएँ, वे सर्वनाम होते हैं किंतु जो शब्द संज्ञा शब्दों से पहले लगकर विशेषण का कार्य करते हैं, वे सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं; जैसे–

यह मनीषा की पुस्तक है।

कौन आदमी वहाँ खड़ा है?

विशेषण शब्दों की रूप-रचना किस प्रकार होती है, आइए जानें–

(क) संज्ञा शब्दों से–

संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण
दया	दयावान	विज्ञान	वैज्ञानिक
हरियाणा	हरियाणवी	राष्ट्र	राष्ट्रीय

फल	फलवाला	संसार	सांसारिक
रंग	रंगीन	पुष्प	पुष्पित
ग्राम	ग्रामीण	मामा	ममेरा
शहर	शहरी	कृपा	कृपालु
झगड़ा	झगड़ालु	चाचा	चचेरा

(ख) सर्वनाम शब्दों से–

सर्वनाम	विशेषण	सर्वनाम	विशेषण
यह	ऐसा	वह	वैसा
तुम	तुम्हारा	आप	आपका
हम	हमारा	मैं	मेरा
कौन	कैसा	जो	जैसा

(ग) क्रिया शब्दों से–

क्रिया	विशेषण	क्रिया	विशेषण
सजाना	सजावटी	बनाना	बनावटी
हँसना	हँसोड़	दौड़ना	दौड़
लड़ना	लड़ाकू	भूलना	भुलक्कड़
तैरना	तैराक	पढ़ना	पढ़ाकू
कमाना	कमाऊ	भागना	भगोड़ा

(घ) अव्यय शब्दों से–

अव्यय	विशेषण	अव्यय	विशेषण
ऊपर	ऊपरी	पीछे	पिछला
भीतर	भीतरी	नीचे	निचला
बाहर	बाहरी	आगे	अगला

अब आइए, जानें कि विशेषणों की तुलना किस प्रकार की जाती है–

बच्चो! गुण या दोष के परस्पर मिलान को विशेषणों की तुलना कहते हैं। इसकी तीन अवस्थाएँ होती हैं–

(क) मूलावस्था (ख) उत्तरावस्था (ग) उत्तमावस्था

(क) मूलावस्था: किसी से तुलना नहीं जाती है। यहाँ विशेषणों का केवल सामान्य प्रयोग किया जाता है; जैसे–

राकेश सबको प्रिय है।

गाय की छोटी बछिया है।

(ख) उत्तरावस्थाः इसमें किसी विशेषण द्वारा दो व्यक्तियों के बीच या दो वस्तुओं के बीच तुलना की जाती है; जैसे–

नन्हें, पारिख से बड़ा है।

सुनीता विनीता से सुंदर है।

(ग) उत्तमावस्थाः इस अवस्था में किसी के गुणों की अनेक से तुलना की जाती है और उसे सर्वश्रेष्ठ बताया जाता है; जैसे–

मयंक कक्षा का श्रेष्ठतम छात्र है।

तीनों अवस्थाएँ इस प्रकार दर्शाई जाती हैं–

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
अधिक	अधिकतर	अधिकतम
लघु	लघुतर	लघुतम
सुंदर	सुदंरतर	सुंदरतम
प्रिय	प्रियतर	प्रियतम
मधुर	मधुरतर	मधुरतम
सरल	सरलतर	सरलतम

आइए, पुनरावृति करें

- विशेषण शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं।
- विशेषण चार प्रकार के होते हैं–

विशेषण
- गुणवाचक
- संख्यावाचक
  - निश्चित संख्या
  - अनिश्चित संख्या
- परिमाणवाचक
  - निश्चित परिमाण
  - अनिश्चित परिमाण
- सार्वनामिक अथवा संकेतवाचक

- विशेषणों की तुलना की जाती है।
- विशेषण शब्दों की रचना अनेक शब्दों से होती है।
- विशेषण शब्दों की तीन अवस्थाएँ होती हैं– मूलावस्था, उत्तरावस्था तथा उत्तमावस्था।

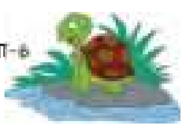

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) 'राजेश ने नीले रंग की शर्ट पहनी है।' वाक्य में विशेषण शब्द को बताइए?

(ख) गुणवाचक विशेषण का कोई एक उदाहरण बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) विशेषण की परिभाषा सोदाहरण दीजिए।

(ख) विशेषण शब्दों की तुलना किस प्रकार की जाती है?

(ग) संख्यावाचक और परिमाणवाचक विशेषण शब्दों में क्या अंतर होता है?

(घ) सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण शब्दों में क्या अंतर होता है?

2. दिए गए वाक्यों में विशेषण शब्दों को रेखांकित करके उनके भेद का नाम लिखिए।

(क) शास्त्री जी एक <u>ईमानदार</u> नेता थे। गुणवाचक विशेषण

(ख) ये कपड़े गीले हैं। ....

(ग) आज घर में दो किलो लड्डू आए हैं। ....

(घ) वह पुस्तक राधिका की है। ....

(ङ) मुझे लाल फूल पसंद हैं। ....

(च) दिल्ली पुस्तक मेले में सैकड़ों स्टॉल लगे हैं। ....

(छ) मुझे भी कुछ खाने को चाहिए। ....

(ज) बोतल में थोड़ा ही इत्र बचा है। ....

(झ) हाथी बड़ा जानवर होता है। ....

3. दिए गए शब्दों से विशेषण बनाइए।

बनाना – ....

चलना – ....

नीचे – ....

यह – ....

जो – ....

खेलना – ....

भीतर – ....

रोग – ....

ग्राम – ....

तैरना – ....

4. **दिए गए विशेषणों को उनके भेदों से रेखा खींचकर मिलाइए।**

लंबा	गुणवाचक	पीली
कंजूस	संख्यावाचक	नमकीन
थोड़ा	परिमाणवाचक	कुछ
चार मीटर	सार्वनामिक	थोड़ी
बारह		मज़बूत
दो लीटर		ठंडी

5. **दिए गए शब्दों की अन्य अवस्थाएँ लिखिए।**

लघु – ....

श्रेष्ठ – ....

सुंदर – ....

सरल – ....

कठिन – ....

सोचें-विचारें

Critical Thinking

6. **सार्वनामिक विशेषण सामान्यत: विशेषण से किस प्रकार भिन्न है? सोचकर बताइए।**

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

7. **अपनी पाठ्यपुस्तक में से विशेषण शब्दों को छाँटकर अपनी कॉपी में लिखिए।**

8. **अपने बारे में सोचकर लिखिए कि आप कैसे हैं या आप में कौन-से गुण-दोष मौजूद हैं?**

मैं ....

मैं ....

मैं ....

मैं ....

मैं ....

मैं ....

प्रेरणादायक मूल्य

किसी भी व्यक्ति में गुण और अवगुण दोनों मौजूद होते हैं लेकिन हमें किसी भी व्यक्ति में मौजूद विशेषताओं (गुण) को अपनाना चाहिए न कि अवगुणों को।

क्रिया (Verb)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्रों को देखकर उनके नीचे वाक्यों के रंगीन शब्दों पर ध्यान दीजिए-

गाय दूध पिला रही है।

लड़की नाच रही है।

मुरगा बाँग दे रहा है।

बच्चो! यहाँ ऊपर लिखे वाक्यों में रंगीन शब्द– 'पिला रही है', 'नाच रही है', तथा 'बाँग दे रहा है' क्रमशः गाय, लड़की तथा मुरगे द्‌वारा किए जाने वाले कार्य हैं। व्याकरण शास्त्र में सभी प्रकार के कार्यों को क्रिया कहते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि–

जिन शब्दों द्‌वारा किसी कार्य के करने या होने की जानकारी मिलती है, वे क्रिया कहलाते हैं।

अब इस पर ध्यान दीजिए–

मेरी माता जी अध्यापिका हैं।

मंदिर में ताले लगे हैं।

आज स्कूल बंद है।

उदाहरणों में माता जी के अध्यापिका होने की, मंदिर में ताले लगे होने की तथा स्कूलों के बंद होने की जानकारी दी गई है। यानी कि यहाँ क्रियाओं के होने की बात की गई है।

अतएव हम कह सकते हैं कि–

जिस शब्द से किसी काम का करना या होना पाया जाए, उसे क्रिया कहते हैं।

अब आइए, क्रिया के मूल रूप आदि को समझें–

बच्चो! क्रिया के मूल रूप को ही धातु रूप कहते हैं; जैसे–

पढ़ना = पढ़् + ना = सीता पढ़ती है।

(पढ़ना – क्रिया; पढ़् – धातुरूप; पढ़ – धातुरूप; ती है – सहायक क्रिया)

क्रियाओं के कुछ मूल रूप धातु रूप में हैं–

पढ़्, लिख, चढ़्, खेल, कूद, जा, आ, चल, सो, जाग आदि।

इन मूल रूपों में 'ना' प्रत्यय जोड़ देने से वे क्रिया का सामान्य रूप बन जाएँगे; जैसे– पढ़ना, लिखना, सोना, जागना, खेलना आदि। अतएव हमें याद रखना चाहिए कि–

- क्रिया का मूल रूप **धातु** कहलाता है।
- मूल धातु रूपों में प्रत्यय जोड़ने से क्रिया का सामान्य रूप बनता है।

क्रिया के भेद

कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं–

(क) सकर्मक क्रिया (ख) अकर्मक क्रिया

(क) सकर्मक क्रिया– ऐसी क्रियाएँ जिनके संपन्न होने के लिए कर्ता के साथ-साथ कर्म की भी आवश्यकता होती है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे–

राधा रस्सी कूदती है।

विमला कलम से लिखती है।

बादलों से पानी बरसता है।

नौकरानी बर्तन धो रही है।

माली पौधे सींच रहा है।

यहाँ आयत वाले शब्द कर्म हैं। इसलिए ये सब सकर्मक क्रिया बनाते हैं।

(ख) अकर्मक क्रिया– ऐसी क्रियाएँ जिनके लिए केवल कर्ता की आवश्यकता होती है अर्थात् उन्हें करने के लिए कर्ता किसी की सहायता नहीं लेता है। दूसरे शब्दों में क्रिया को कर्म की अपेक्षा ही नहीं रहती है, वहाँ अकर्मक क्रिया होती है; जैसे–

बच्चा सोता है।

कार चलती है।

माता जी बैठी हैं।

मोहन नहाता है।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को अपने दैनिक जीवन के क्रिया-कलापों से उदाहरण लेकर क्रिया को समझाएँ ताकि बच्चे पाठ से अपना जुड़ाव महसूस कर सकें।

यहाँ क्रियाएँ हैं- सोता है, चलती है, बैठी है तथा नहाता है। इन क्रियाओं के पूर्व केवल इनको करने वाले (कर्ता) ही आए हैं। ये कर्ता स्वयंमेव बिना किसी साधन या किसी की सहायता लिए बिना कार्य करते हैं। अत: कर्म न होने के कारण ये क्रियाएँ अकर्मक कहलाती हैं।

कुछ अकर्मक क्रियाओं के उदाहरण हैं–

सोना, जागना, नहाना, धोना, देखना, छींकना, खाँसना, झुकना आदि।

सकर्मक क्रिया के भेद

सकर्मक क्रिया के दो भेद होते हैं–

(क) एककर्मक क्रिया (ख) द्विकर्मक क्रिया

(क) एककर्मक क्रिया– ऐसी अकर्मक क्रियाएँ जिनका केवल एक कर्म ही वाक्य में प्रयुक्त होता है। ऐसी क्रियाएँ एककर्मक कहलाती हैं; जैसे–

माँ ने खाना बनाया।

सौरभ ने नाश्ता किया।

दीदी ने सूट खरीदा।

तोते ने मिरची खाई।

पिता जी कार चलाते हैं।

उपर्युक्त सभी वाक्यों में एक ही कर्म प्रयुक्त हुए हैं। इसलिए इनमें प्रयुक्त क्रियाओं को एककर्मक क्रिया कहा जाएगा।

(ख) द्विकर्मक क्रिया– ऐसी सकर्मक क्रियाएँ जिनके लिए एक साथ दो-दो कर्म प्रयुक्त होते हैं, उन्हें द्विकर्मक क्रियाएँ कहा जाता है; जैसे–

माँ ने बच्चे को दूध पिलाया।

प्रधानाचार्य ने बच्चों को पुरस्कार दिए।

पुजारी ने लोगों को प्रसाद बाँटा।

पनवाड़ी ने पिता जी को पान खिलाया।

माँ ने बेटी को नृत्य सिखाया।

अब आइए, यह जानने का प्रयास करें कि सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं की पहचान किस प्रकार की जाती है?

यदि हम क्रिया के पहले क्या, किसे, किसको आदि लगाकर प्रश्न करते हैं, तो उत्तर मिलने पर सकर्मक क्रिया होगी। उत्तर नहीं मिलने पर अकर्मक क्रिया होगी; जैसे–

तोता मिर्च (क्या लगाने पर) ∧ खाता है (क्रिया)।	तोता क्या खाता है ?	**उत्तर**– मिर्च
दिव्यांश ने रोहन को पत्र लिखा?	किसे पत्र लिखा?	**उत्तर**– रोहन को
रीना बच्चे को दुलार करती है।	रीना किसे दुलार करती है?	**उत्तर**– बच्चे को
पुलिस ने अपराधी को पकड़ा।	पुलिस ने किसको पकड़ा?	**उत्तर**– अपराधी को

अब इन उदाहरणों पर ध्यान दीजिए।

लड़की शरमाती है।	क्या शरमाती है?	**उत्तर**– कोई नहीं।
बच्चा खेलता है।	क्या खेलता है?	**उत्तर**– कोई नहीं।
पिता जी सो रहे हैं।	क्या रहे हैं?	**उत्तर**– कोई नहीं।

अतः यहाँ स्पष्ट है कि किसी के भी उत्तर नहीं मिल रहे हैं, तो यहाँ अकर्मक क्रिया होगी। इससे पूर्व क्या, किसे लगाने पर उत्तर मिल रहे हैं, तो वहाँ सब सकर्मक क्रियाएँ होंगी।

आइए, पुनरावृति करें

- जिस शब्द से किसी काम का करना या होना जाना जाता है, उसे **क्रिया** कहते हैं।
- क्रिया के भेद हैं– सकर्मक क्रिया तथा अकर्मक क्रिया।
- **सकर्मक क्रिया**– जिस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म हो या क्रिया का प्रत्यक्ष फल कर्म पर पड़ता हो, तो उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।
- **अकर्मक क्रिया**– जिस वाक्य में क्रिया के लिए किसी भी कर्म की आवश्यकता नहीं पड़ती है, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।

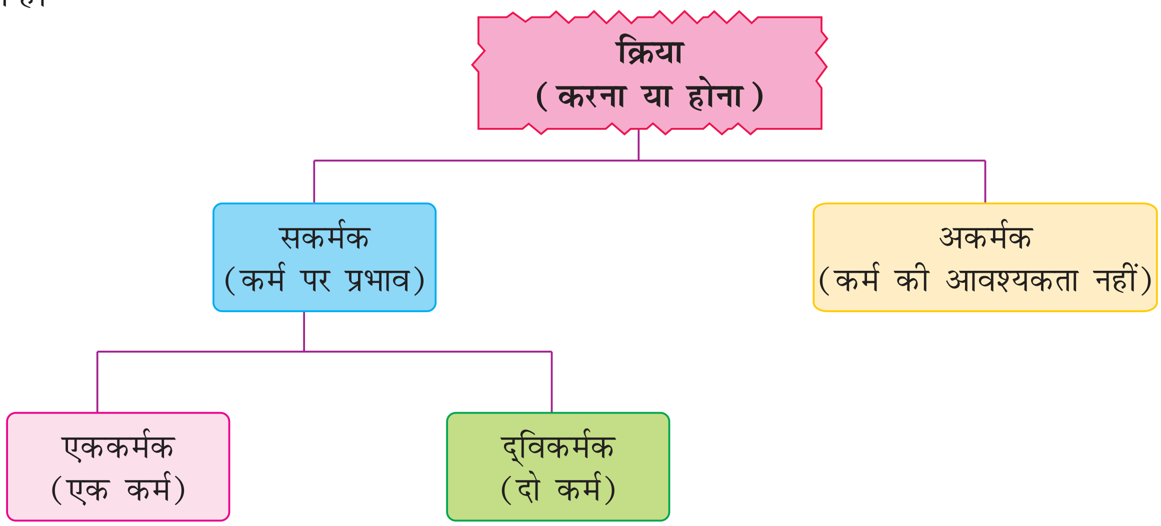

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) 'पढ़ना' और 'लिखना' में मूल धातु क्या है? बताइए।

(ख) 'राम तेज़ दौड़ रहा है।' वाक्य में क्रिया की पहचान कीजिए।

(ग) 'सकर्मक क्रिया' का कोई एक उदाहरण दीजिए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) क्रिया किसे कहते हैं?

(ख) सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं की पहचान किस प्रकार की जाती है?

(ग) अकर्मक क्रिया की परिभाषा उदाहरण के साथ दीजिए।

2. दिए गए वाक्यों में क्रियाओं को रेखांकित कर उनके भेद लिखिए।

(क) बच्चा सो गया। अकर्मक क्रिया

(ख) माता जी ने नई साड़ी पहनी। ....

(ग) मुख्य अतिथि ने भाषण दिया। ....

(घ) गाय घास चर रही है। ....

(ङ) मोर नाच रहा है। ....

(च) खिलाड़ी मैदान में दौड़ रहे हैं। ....

(छ) नदी में नावें तैर रही हैं। ....

3. दी गई क्रियाओं को उनके सही भेद तक रेखा खींचिए।

रोना		आकाश में उड़ना
खाना	सकर्मक	सोना
कलम से लिखना		दौड़ना
टहलना	अकर्मक	सिनेमा देखना
कुर्सी पर बैठना		हँसना

4. दी गई मूल धातुओं के सही क्रियारूप भरकर वाक्य पूरे कीजिए।

(क) .... एक स्वास्थ्यवर्धक व्यायाम है। (तैर)

(ख) पाठ्यक्रम में मौखिक और .... दो भाग हैं। (लिख)

(ग) रंजना ने कहानी की पुस्तक ....। (पढ़)

(घ) हर व्यक्ति को पाँच-छह घंटे .... चाहिए। (सो)

(ङ) माँ की .... देखकर दिल भर आया। (रोना)

सोचें-विचारें

Critical Thinking

5. सार्वनामिक विशेषण सामान्यतः विशेषण से किस प्रकार भिन्न है? सोचकर बताइए।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

6. कक्षा में बच्चों के दो समूह बनवाएँ- सकर्मक तथा अकर्मक। उनसे एक-एक क्रिया शब्द उनके प्रकार के अनुसार बुलवाएँ।

7. कक्षा अध्यापिका/कक्षा अध्यापक जी श्यामपट्ट पर कुछ क्रिया की धातुएँ लिखकर उससे सामान्य क्रिया शब्द बनवाकर उनका वाक्य प्रयोग भी करवाएँ।

प्रेरणादायक मूल्य

संसार में कर्म करने वाले व्यक्तियों का सबसे ऊँचा स्थान है, इसलिए कहा भी गया है कि "व्यक्ति जन्म से नहीं बल्कि अपने कर्म से महान बनता है।"

अध्याय 10

काल
(Tense)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्र देखिए और उनके नीचे लिखे वाक्यों पर ध्यान दीजिए–

माता जी बाज़ार गई थीं।

हवाई जहाज़ उड़ रहा है।

कल मेरा जन्मदिन मनेगा।

बच्चो! इन वाक्यों में रंगीन शब्दों पर ध्यान दीजिए। इनसे क्रिया के होने या करने के समय का पता चल रहा है; जैसे– माता जी द्वारा बीते समय में बाज़ार जाने का कार्य पूरा हो चुका है। हवाई जहाज़ वर्तमान समय में उड़ रहा है और मेरा जन्मदिन आने वाले समय में मनाया जाएगा। वास्तव में इन तीनों ही क्रियाओं को करने के लिए उनके समय (काल) का पता चल रहा है।

अतएव हम कह सकते हैं कि–

क्रिया के जिस किसी रूप से उसके होने या करने के समय का पता चलता है, उसे काल कहते हैं।

काल के भेद

काल के तीन भेद होते हैं– 1. भूतकाल 2. वर्तमान काल 3. भविष्यत् काल

1. भूतकाल:

नीचे बने चित्र देखिए तथा उनके नीचे लिखे वाक्य पढ़िए–

स्टेशन से गाड़ी चली गई।

माता जी मंदिर गई थीं।

पिता जी कार में बैठ चुके थे।

ऊपर लिखे वाक्यों से पता चलता है कि बीते समय में सभी कार्य पूरे हो चुके हैं; जैसे– गाड़ी स्टेशन से जा

चुकी है। माता जी मंदिर जा चुकी हैं और पिता जी कार में बैठ चुके हैं अर्थात् ये तीनों ही कार्य बीते समय में संपन्न हो चुके हैं। अतः ये सब भूतकाल के उदाहरण हैं।

इसलिए हम कह सकते हैं कि-

क्रिया के जिस किसी रूप से उसके बीते समय में होने का पता चलता है, उसे भूतकाल कहते हैं।

भूतकाल के भी निम्नलिखित भेद होते हैं–

1. सामान्य भूत 2. आसन्न भूत 3. पूर्णभूत 4. अपूर्ण भूत 5. संदिग्ध भूत 6. हेतुहेतुमद भूत।

इनके बारे में विस्तार से हम आगे चलकर पढ़ेंगे।

2. वर्तमान काल:

नीचे बने चित्र देखिए तथा उनके नीचे लिखे वाक्य पढ़िए-

दादा जी सैर कर रहे हैं।

माता जी टीवी देख रही हैं।

रमेश गृहकार्य पूरा कर रहा है।

ऊपर से सभी उदाहरणों में कार्य का क्रिया के वर्तमान (मौजूदा) समय में किए जाने की सूचना मिल रही है; जैसे- दादा जी द्वारा सैर की जा रही है। माता जी द्वारा टीवी देखा जा रहा है आदि।

अतएव हम कह सकते हैं कि–

क्रिया के जिस किसी रूप से उसके वर्तमान समय में होने की सूचना या जानकारी मिल रही है, उसे वर्तमान काल कहते हैं।

वर्तमान काल के निम्नलिखित भेद हैं– 1. सामान्य वर्तमान 2. अपूर्ण वर्तमान 3. संदिग्ध वर्तमान

इनके बारे में विस्तार से चर्चा अगली कक्षाओं में की जाएगी।

3. भविष्यत् काल:

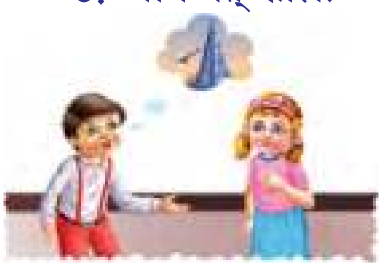

कल पिता जी दुबई जाएँगे।

कल हम मेला देखेंगे।

विद्यालय में कल मैच खेला जाएगा।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को काल के भेद सहित वाक्य प्रयोग द्वारा विस्तारपूर्वक समझाएँ।

बच्चो! यहाँ ऊपर लिखे वाक्यों में काम न तो हुआ है, और न ही हो रहा है, बल्कि आगे चलकर या भविष्य में कार्य संपन्न होगा। इसलिए ये सब भविष्यत् काल के वाक्य हैं।

अतएव हम कह सकते हैं कि–

क्रिया के जिस रूप से उसके आने वाले समय में किए जाने या होने का पता चलता है, उन्हें भविष्यत् काल कहते हैं।

भविष्यत् काल के निम्नलिखित भेद हैं– 1. सामान्य भविष्यत् काल 2. संभाव्य भविष्यत् काल

इनके बारे में विस्तार से आप आगे चलकर पढ़ेंगे।

आइए, पुनरावृति करें

- **काल**– क्रिया के जिस रूप से उसके करने या होने के समय का पता चलता है।
- काल तीन प्रकार के होते हैं– भूतकाल, वर्तमानकाल तथा भविष्यत्काल।
- **भूतकाल**– क्रिया के जिस रूप से उसके बीते समय में संपन्न होने की जानकारी मिलती है।
- **वर्तमान काल**– क्रिया के जिस रूप से उसके वर्तमान समय में पूरा होने या चलते रहने का पता चलता है।
- **भविष्यत् काल**– क्रिया के जिस रूप से कार्य के भविष्य में या आने वाले समय में पूरा होने की जानकारी मिलती है, उसे भविष्यत् काल कहते हैं।
- इन कालों के भी उपभेद होते हैं–

काल

- भूतकाल
  - सामान्य भूत
  - आसन्न भूत
  - पूर्ण भूत
  - अपूर्ण भूत
  - संदिग्ध भूत
  - हेतुहेतुमद भूत
- वर्तमान काल
  - सामान्य वर्तमान
  - अपूर्ण वर्तमान
  - संदिग्ध वर्तमान
- भविष्यत् काल
  - सामान्य भविष्यत्
  - संभाव्य भविष्यत्

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) काल से हमें क्या जानकारी मिलती है?

(ख) काल के कितने भेद होते हैं?

(ग) 'मेरी परीक्षा कल से प्रारंभ हो चुकी है।' इस वाक्य में कौन-सा काल है?

लेखन कार्य

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) काल किसे कहते हैं? समझाइए।

(ख) काल के कितने भेद होते हैं? उनके नाम लिखिए।

(ग) भविष्यत् काल की परिभाषा सोदाहरण समझाइए।

(घ) भूतकाल के भेदों के नाम लिखिए।

(ङ) भविष्यत् काल के भेदों के नाम लिखिए।

2. दिए गए वाक्यों में से क्रिया शब्दों को रेखांकित करके उसके काल के भेद का नाम लिखिए।

(क) सुलेखा कल मायके जाएगी। भविष्यत् काल

(ख) परसों मुझे मुंबई जाना होगा। ....

(ग) गाड़ी स्टेशन पर आ चुकी होगी। ....

(घ) जनता महँगाई और बेरोज़गारी से त्रस्त है। ....

(ङ) कल सपना ने सुंदर नृत्य किया। ....

(च) आजकल गाड़ियाँ बहुत कम चल रही हैं। ....

(छ) बच्चों के स्कूल अक्टूबर से खुलेंगे। ....

3. दिए गए वाक्यों का निर्देशानुसार काल-परिवर्तन कीजिए।

(क) वायुयान यूरोप से चलकर नई दिल्ली पहुँचा। (भविष्यत् काल में)

....

(ख) दादा जी को कल डॉक्टर को दिखाना होगा। (भूतकाल में)

....

(ग) अनूप जलोटा ने प्रेक्षागृह में अनेक भजन सुनाए। (वर्तमान काल में)

....

(घ) बच्चे किताबें-कॉपियाँ नहीं खरीद पाए हैं। (भविष्यत काल में)

....

(ङ) प्रतिदिन व्यायाम एवं प्राणायाम करने से कोरोना नहीं होगा। (भूतकाल में)

....

4. दिए गए कालों में सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए।

(क) कार में चार लोग बैठ चुके ....। (है / थे / होगा)

(ख) नानी जी थोड़ी देर में पहुँच रही ....। (थीं / होंगी / होगा)

(ग) बच्चा खेलते-खेलते गिर ....। (गिरेगा / पड़ेगा / गया)

(घ) वायुयान थोड़ी देर बाद ....। (उड़ गया / उड़ेगा)

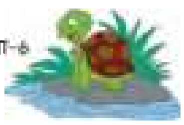

सोचें-विचारें

Critical Thinking

5. **टाइम मशीन जैसी किसी वस्तु के बारे में आपके क्या विचार हैं? आप उसका उपयोग किस प्रकार करना चाहेंगे? सोचकर बताइए।**

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

6. **कक्षा में बच्चों के तीन समूह बनवाएँ। उनके नाम भूतकाल, वर्तमान काल तथा भविष्यत् काल रखवाएँ। फिर उनसे संबंधित कालों के एक-एक वाक्य बनवाएँ।**

7. **अपनी हिंदी की पाठ्यपुस्तक में से अनेक कालों वाले वाक्य छाँटकर तीनों कालों में वर्गीकृत करके लिखिए।**

भूतकाल	वर्तमान काल	भविष्यत् काल
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

प्रेरणादायक मूल्य

हमें सदैव वर्तमान में जीना चाहिए क्योंकि बीता हुआ वक्त कभी लौटकर वापस नहीं आता। साथ ही भविष्य की चिंता से मुक्त रहना चाहिए।

अध्याय 11

संधि
(Joining)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्रों को देखकर शब्दों पर गौर कीजिए-

विद्या + आलय =	गुरु + उपदेश =	भोजन + आलय =
आ + आ	उ + उ	अ + आ
विद्यालय	गुरुपदेश	भोजनालय

बच्चो! आपने देखा कि 'विद्यालय' शब्द विद्या + आलय दो शब्दों में पहले शब्द के अंतिम 'आ' और दूसरे शब्द 'आलय' के प्रारंभ में 'आ' के मिलने से जो परिवर्तन हुआ है, उसके बाद 'विद्यालय' शब्द (परिवर्तित रूप में) बना है। उसी प्रकार से 'गुरुपदेश' (उ + उ के परिवर्तन से) तथा 'भोजनालय' शब्द (अ + आ के परिवर्तन) से बना है। अतः हम कह सकते हैं कि–

दो वर्णों के मिलने से होने वाले जो विकार या परिवर्तन उत्पन्न होता है, उसे संधि कहते हैं।

'संधि' का अर्थ 'मेल' होता है। यहाँ हमें यह समझना चाहिए कि संधि में जो भी विकार या परिवर्तन होता है, वह शब्दों में न होकर केवल वर्णों में होता है।

संधि-विच्छेद

संधियुक्त शब्दों को अलग करना संधि-विच्छेद कहलाता है; जैसे– मुनींद्र (संधियुक्त शब्द) = मुनि + इंद्र (संधि-विच्छेद)।

संधि के भेद

संधि के तीन भेद होते हैं–1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि 3. विसर्ग संधि। इन भेदों के भी अनेक उपभेद होते हैं।

1. **स्वर संधि:** जब स्वर के साथ स्वर का मेल होता है तब जो परिवर्तन होता है उसे **स्वर संधि** कहते हैं।

जैसे– शची + इंद्र = शचींद्र

ई + इ

स्वर संधि के प्रकार

- दीर्घ संधि
- गुण संधि
- वृद्धि संधि
- यण संधि
- अयादि संधि

(क) **दीर्घ संधि:** जब कभी ह्रस्व अथवा दीर्घ अ, इ, उ के बाद ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ आएँ, तो दोनों के मेल से दीर्घ आ, ई और ऊ हो जाते हैं; तो ये दीर्घ संधि कहलाते हैं; जैसे–

विद्या + अर्थी	= विद्यार्थी	(आ + अ)		पुस्तक + आलय	= पुस्तकालय	(अ + आ)
परम + अर्थ	= परमार्थ	(अ + अ)		विद्या + आलय	= विद्यालय	(आ + आ)
मुनि + इंद्र	= मुनींद्र	(इ + इ)		गिरि + ईश	= गिरीश	(इ + ई)
नारी + इंदु	= नारींदु	(ई + इ)		नदी + ईश	= नदीश	(ई + ई)
भानु + उदय	= भानूदय	(उ + उ)		सिंधु + ऊर्मि	= सिंधूर्मि	(उ + ऊ)
वधू + उत्सव	= वधूत्सव	(ऊ + उ)		भू + ऊर्ध्व	= भूर्ध्व	(ऊ + ऊ)

(ख) **गुण संधि:** इस संधि में अ या आ का मेल 'इ' या 'ई' से होने पर **ए**, अ या आ का मेल 'उ' या 'ऊ' से होने पर **ओ** और अ या आ का मेल 'ऋ' से होने पर **अर्** हो जाता है तो ये गुण संधि कहलाते हैं; जैसे–

नर + इंद्र	= नरेंद्र	(अ + इ)		नर + ईश	= नरेश	(अ + ई)
महा + इंद्र	= महेंद्र	(आ + इ)		महा + ईश	= महेश	(आ + ई)
ज्ञान + उपदेश	= ज्ञानोपदेश	(अ + उ)		महा + उत्सव	= महोत्सव	(आ + उ)
जल + ऊर्मि	= जलोर्मि	(अ + ऊ)		महा + ऊर्मि	= महोर्मि	(आ + ऊ)
देव + ऋषि	= देवर्षि	(अ + ऋ)		महा + ऋषि	= महर्षि	(आ + ऋ)

(ग) **वृद्धि संधिः** जब अ या आ का मेल 'ए' तथा 'ऐ' से होता है, तो दोनों के मेल से **ऐ** और अ या आ का मेल 'ओ' तथा 'औ' से होने पर दोनों **औ** में बदल जाते हैं तो ये वृद्धि संधि कहलाते हैं; जैसे–

एक	+	एक	= एकैक	(अ + ए)	मत	+	ऐक्य	= मतैक्य	(अ + ऐ)
सदा	+	एव	= सदैव	(आ + ए)	महा	+	ऐश्वर्य	= महैश्वर्य	(आ + ऐ)
वन	+	ओषध	= वनौषध	(अ + ओ)	महा	+	औषध	= महौषध	(आ + औ)
परम	+	औषध	= परमौषध	(अ + औ)					

(घ) **यण संधिः** जब कभी इ–ई, उ–ऊ एवं ऋ वर्णों का मेल किसी असमान स्वर से होता है, तो इ–ई का **य्**, उ–ऊ का **व्** तथा ऋ का **र्** में परिवर्तन हो जाता है तो ये यण संधि कहलाते हैं; जैसे–

यदि	+	अपि	= यद्यपि	(इ + अ)	इति	+	आदि	= इत्यादि	(इ + आ)
नदी	+	अर्पण	= नद्यर्पण	(ई + अ)	देवी	+	आगमन	= देव्यागमन	(ई + आ)
अनु	+	अय	= अन्वय	(उ + अ)	सु	+	आगत	= स्वागत	(उ + आ)
अनु	+	एषण	= अन्वेषण	(उ + ए)	पितृ	+	आज्ञा	= पित्राज्ञा	(ऋ + आ)

(ङ) **अयादि संधिः** जब कभी ए–ऐ, ओ–औ का मेल किसी स्वर से होता है, तो ए का **अय्**; ऐ का **आय्** ओ का **अव्** तथा औ का **आव्** में परिवर्तन हो जाता है तो ये अयादि संधि कहलाते हैं; जैसे–

ने	+	अन	=	नयन (ए + अ)	नौ	+	इक	=	नाविक (औ + इ)
गै	+	अक	=	गायक (ऐ + अ)	भौ	+	उक	=	भावुक (औ + उ)
पो	+	अन	=	पवन (ओ + अ)	पौ	+	अक	=	पावक (औ + अ)

2. व्यंजन संधिः व्यंजन वर्णों का व्यंजन के साथ अथवा व्यंजन वर्णों का स्वर के साथ मेल होने पर जो विकार या परिवर्तन होता है उसे व्यंजन संधि कहते हैं; जैसे–

सत् + जन = सज्जन।

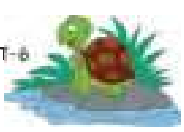

(क) **व्यंजन और स्वर वर्णों का मेल होने पर–**

वाक्	+ ईश	=	वागीश	(क् + ई)	दिक्	+ अंत	=	दिगंत	(क् + अ)
तत्	+ आकार	=	तदाकार	(त् + आ)					

(ख) **व्यंजन का व्यंजन वर्णों से मेल होने पर–**

सत्	+ चरित्र	=	सच्चरित्र	(त् + च)	उत्	+ चारण	=	उच्चारण	(त् + च)
उत्	+ नति	=	उन्नति	(त् + न)	उत्	+ लास	=	उल्लास	(त् + ल)
दिक्	+ गज	=	दिग्गज	(क् + ग)	वाक्	+ मय	=	वाङ्मय	(क् + म)
अच्	+ अंत	=	अजंत	(च् + अ)	सत्	+ भावना	=	सद्भावना	(त् + भ)
उत्	+ श्वास	=	उच्छ्वास	(त् + श)	उत्	+ हार	=	उद्धार	(त् + ह)
किम्	+ चित	=	किंचित्	(म् + च)	सम्	+ तोष	=	संतोष	(म् + त)
सम्	+ योग	=	संयोग	(म् + य)	परि	+ नाम	=	परिणाम	(र् + न)
अभि	+ सेक	=	अभिषेक	(भ + स)	नि	+ सिद्ध	=	निषिद्ध	(नि + स)
वि	+ सम	=	विषम	(वि + स)					

3. विसर्ग संधि: जब विसर्ग का किसी स्वर या व्यंजन के साथ मेल होता है और उससे जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं; जैसे–

नि:	+ आहार	=	निराहार	नि:	+ आशा	=	निराशा
मन:	+ अनुकूल	=	मनोनुकूल	मन:	+ कामना	=	मनोकामना/मनस्कामना
नि:	+ चल	=	निश्चल	नि:	+ छल	=	निश्छल
नि:	+ धन	=	निर्धन	नि:	+ कलंक	=	निष्कलंक
नि:	+ फल	=	निष्फल	नि:	+ संतान	=	निस्संतान
नम:	+ ते	=	नमस्ते				

अध्यापन संकेत

शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को संधि विभिन्न प्रकारों के साथ विस्तारपूर्वक समझाएँ और अभ्यास कराएँ।

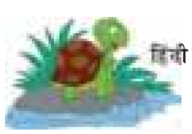

आइए, पुनरावृति करें

- वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार को संधि कहते हैं।
- संधि के तीन भेद होते हैं–(क) स्वर संधि (ख) व्यंजन संधि (ग) विसर्ग संधि।
- स्वर संधि के पाँच भेद हैं–(क) दीर्घ संधि (ख) गुण संधि (ग) वृद्धि संधि (घ) यण संधि (ङ) अयादि संधि।
- संधियुक्त शब्दों को अलग करना संधि-विच्छेद कहलाता है।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) 'अजंत' किस संधि का उदाहरण है।

(ख) 'निराहार' शब्द में कौन-सी संधि प्रयुक्त है।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) संधि से आप क्या समझते हैं? उदाहरण देकर लिखिए।

(ख) संधि-विच्छेद से क्या तात्पर्य है? सोदाहरण समझाइए।

(ग) दीर्घ संधि किसे कहते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

(घ) व्यंजन संधि किसे कहते हैं?

(ङ) विसर्ग संधि की सोदाहरण परिभाषा दीजिए।

2. दिए गए शब्दों को मिलाकर संधि कीजिए।

वाक्	+	मय	=	....	दिक्	+	अंत	=	....
उत्	+	धार	=	....	अनु	+	वय	=	....
सदा	+	एव	=	....	महा	+	ऐश्वर्य	=	....
इति	+	आदि	=	....	परम	+	अर्थ	=	....
नदी	+	ईश	=	....	मनः	+	कामना	=	....
विद्या	+	अर्थी	=	....	एक	+	एक	=	....

3. दिए गए शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए।

नाविक	=	....	+	....
स्वागत	=	....	+	....
मतैक्य	=	....	+	....
गिरीश	=	....	+	....

महोत्सव = ... + ...

नरेंद्र = ... + ...

विद्यालय = ... + ...

महेश = ... + ...

देव्यागम = ... + ...

पित्राज्ञा = ... + ...

सद्भावना = ... + ...

अभिषेक = ... + ...

4. दिए गए शब्दों के सही संधि-विच्छेद को चुनिए।

सज्जन–

(क) सज + जन ☐ (ख) सज् + जन ☐ (ग) सन् + जन ☐ (घ) सत् + जन ☐

वागीश–

(क) वाक + इश ☐ (ख) वाक् + ईश ☐ (ग) वाग् + ईश ☐ (घ) बाग + ईश ☐

निषिद्ध–

(क) निः + सिद्ध ☐ (ख) निः + षिद्ध ☐ (ग) नि + सिद्ध ☐ (घ) नि + षिद्ध ☐

भानूदय–

(क) भानू + दय ☐ (ख) भानू + उदय ☐ (ग) भानु + दय ☐ (घ) भानु + उदय ☐

सोचें-विचारें

Critical Thinking

5. कुछ उन प्रमुख शब्दों को सोचकर बताइए जो आपके चरित्र को दर्शाता है साथ ही उनका विच्छेद भी करें।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

6. कुछ इस प्रकार के क्रिया-कलाप करवाए जा सकते हैं।

.... + ...

महेश

.... + ...

नमस्कार

नर + ईश

नरेश

.... + ...

गणेश

प्रेरणादायक मूल्य

संधि दो वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार है जो एक सार्थक शब्द की रचना करता है ठीक उसी प्रकार दो परस्पर गुणों के मेल से एक बेहतर सार्थक गुण वाले व्यक्ति को परिभाषित किया जा सकता है।

अध्याय 12

समास
(Compound)

पढ़िए और समझिए

बच्चो! समास 'संक्षिप्तीकरण' की प्रक्रिया के बाद एक शब्द में व्यक्त किया जाता है; जैसे–

राजपुत्र

लालकिला

नाना–नानी

अब इसे इस प्रकार समझें–

राजा का पुत्र = राजपुत्र   लाल रंग का किला = लालकिला   नाना और नानी = नाना–नानी।

ऊपर लिखे शब्द राजपुत्र, लालकिला तथा नाना–नानी सामासिक शब्द कहे जाते हैं। क्योंकि ये क्रमशः 'राजा का पुत्र', 'लाल रंग का किला' तथा 'नाना और नानी' के संक्षिप्त रूप हैं। ये सामासिक शब्द जब वाक्य में प्रयोग किए जाते हैं, तो ये सामासिक पद कहलाते हैं।

दूसरी ओर 'राजा का पुत्र', 'लाल रंग का किला' तथा 'नाना और नानी' ये सब समास–विग्रह कहलाते हैं। ये सभी शब्द सामासिक शब्दों के विग्रह करने के फलस्वरूप प्राप्त हुए हैं।

इस प्रकार–

शब्दों के समूह को संक्षिप्त करके नया शब्द बनाने की प्रक्रिया को समास कहेंगे।

समास–विग्रह की परिभाषा इस प्रकार समझ सकते हैं–

समस्तपदों का विग्रह करने पर या उन्हें अलग करने की प्रक्रिया को समास–विग्रह कहते हैं।

अतः यह स्पष्ट हो गया है कि समास के अंतर्गत दो चीज़ें आती हैं– समस्तपद या सामासिक पद एवं समास–विग्रह।

अब आइए, समास के प्रकार या भेद को जानें:

समास छह प्रकार के होते हैं–

1. अव्ययीभाव समास 2. तत्पुरुष समास 3. द्विगु समास 4. द्वंद्व समास 5. कर्मधारय समास 6. बहुव्रीहि समास।

1. अव्ययीभाव समास– जिन समस्तपदों में पूर्वपद (पहला पद) प्रधान या मुख्य होता है और समास होने पर पूरा पद अव्यय बन जाता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं; जैसे–

समस्तपद	पूर्वपद	उत्तरपद	समास-विग्रह
आजन्म =	आ	जन्म	जन्म भर
यथाशक्ति =	यथा	शक्ति	शक्ति के अनुसार
भरपेट =	भर	पेट	पेट भरकर
रातोंरात =	रात	रात	रात-ही-रात में
प्रतिदिन =	प्रति	दिन	प्रत्येक दिन

उपर्युक्त समस्तपदों में पूर्वपद (पहला पद) अव्यय है तथा उनके योग से बने समस्तपद भी अव्यय बन गए हैं।

अत: हम कह सकते हैं कि–

जिन समस्तपदों में पूर्वपद अव्यय हो तथा उनके योग से समस्तपद भी अव्यय बन जाते हैं, उन्हें अव्ययीभाव समास कहते हैं।

अव्ययीभाव समास के कुछ अन्य उदाहरण निम्नलिखित हैं–

प्रतिवर्ष – प्रत्येक वर्ष
आमरण – मृत्यु तक
बेखटके – बिना खटके के
आजीवन – जीवन भर
हाथोंहाथ – हाथ-ही-हाथ में
प्रत्यक्ष – आँखों के सामने

2. तत्पुरुष समास– ऐसा समास जिनका उत्तरपद प्रधान होता है तथा समस्त पद बनाते समय विभक्ति चिह्न का लोप होता है या विभक्ति चिह्न विलुप्त हो जाते हैं, उनको तत्पुरुष समास कहते हैं; जैसे–

पुस्तकालय = पुस्तक के लिए आलय
जेबखर्च = जेब के लिए खर्च
अकालपीड़ित = अकाल से पीड़ित
गृहप्रवेश = गृह में प्रवेश

तत्पुरुष समास के कुछ अन्य उदाहरण हैं–

गंगाजल = गंगा का जल
घुड़सवार = घोड़े पर सवार
तुलसीकृत = तुलसी द्वारा कृत
कार्यकुशल = कार्य में कुशल
माखनचोर = माखन को चुराने वाला
राजमहल = राजा का महल

3. **द्विगु समास–** ऐसे समस्त पद जिनमें पूर्व (पहले) का पद संख्यावाचक विशेषण होता है और वही दोनों पदों का बोध कराता हो, उसे द्विगु समास कहते हैं; जैसे–

पंचतत्व = पाँच तत्वों का समूह
नवरत्न = नवरत्नों का समूह
पंजाब = पाँच आबों (नदियों) का समूह

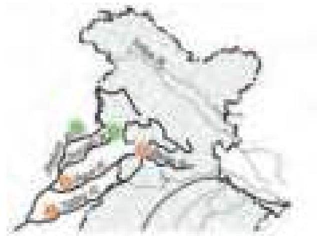

कुछ अन्य द्विगु समास वाले समस्तपद हैं–

शताब्दी = शत अब्दों (वर्षों) का समूह
त्रिनेत्र = तीन नेत्रों का समाहार
नवरात्र = नव रात्रों का समूह
चतुर्भुज = चार भुजाओं का समाहार
अष्टाध्यायी = आठ अध्यायों का समाहार
त्रिभुज = तीन भुजाओं का समाहार

4. **द्वंद्व समास–** ऐसा समास जिसके दोनों पद (पहला तथा दूसरा) प्रधान (मुख्य) होते हैं। इनके बीच हाइफ़न (-) चिह्न लगता है और विग्रह करने पर हाइफ़न के स्थान पर या, अथवा, और, एवं लग जाता है। सबसे विशेष बात यह है कि इस समास के दोनों पद परस्पर विरोधी या विलोम शब्द होते हैं; जैसे–

भाई-बहन = भाई और बहन
माता-पिता = माता और पिता
रात-दिन = रात और दिन
हार-जीत = हार या जीत

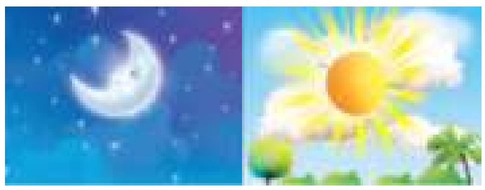

द्वंद्व समास के कुछ अन्य शब्द हैं–

खट्टा-मीठा = खट्टा और मीठा
आज-कल = आज या कल
सुख-दुख = सुख और दुख
गुण-दोष = गुण अथवा दोष
अपना-पराया = अपना या पराया
राजा-रंक = राजा और रंक

5. **कर्मधारय समास–** जिस समास के समस्तपद के दोनों पदों (पूर्व तथा उत्तर) में विशेषण-विशेष्य या उपमान-उपमेय का संबंध होता है, वे कर्मधारय समास कहलाते हैं; जैसे–

चरणकमल = कमल के समान चरण (पैर)
मृगनयन = मृग के समान नयन (आँखें)
नीलगगन = नीला है जो गगन

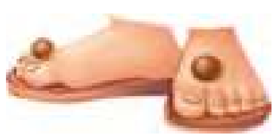

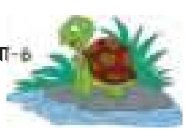

कर्मधारय समास के कुछ अन्य उदाहरण हैं–

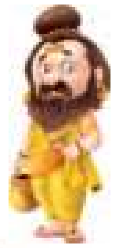

महादेव = महान हैं जो देव

पुरुषोत्तम = पुरुष है जो उत्तम

पीतांबर = पीला है जो अंबर

महात्मा = महान है जो आत्मा

वचनामृत = वचन रूपी अमृत

नीलगाय = नीली है जो गाय

घनश्याम = घन के समान श्याम (काला)

विद्याधन = विद्या रूपी धन

कमलनयन = कमल के समान नयन (नेत्र)

चंद्रमुख = चंद्रमा के समान मुख

क्रोधाग्नि = क्रोध रूपी अग्नि

6. **बहुव्रीहि समास–** ऐसा समास जिसके समस्तपदों के दोनों पद (पहला तथा बाद का) प्रधान नहीं होते, बल्कि वे किसी तीसरे का ज्ञान या परिचय कराते हैं, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं; जैसे–

लंबोदर = लंबा है उदर जिसका अर्थात् गणेश

नीलकंठ = नीला है कंठ जिसका अर्थात् शिवजी

पीतांबर = पीले हैं अंबर जिसके अर्थात् विष्णु जी

बहुव्रीहि समास के कुछ अन्य उदाहरण हैं–

गजानन = गज के समान आनन (मुख) है जिसका अर्थात् गणेश जी

सुलोचना = सुंदर हैं लोचन जिसके – विशेष स्त्री

चतुर्मुख = चार मुख हैं जिसके अर्थात् ब्रह्मा

पद्मासना = पद्म (कमल) आसन है जिसका – माँ सरस्वती

त्रिनेत्र = तीन हैं नेत्र जिसके – शिवजी

कमलनयन = कमल के समान नयन हैं जिसके – विष्णु जी

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को समास को सोदाहरण समझाएँ तथा इनके बीच के अंतर को भी स्पष्ट करें।

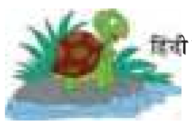

आइए, यह जानते हैं कि कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में कैसे अंतर किया जा सकता है? जैसे–

कमलनयन	=	कमल के समान नयन (विशेषण–विशेष्य का संबंध)	– कर्मधारय समास
कमलनयन	=	कमल जैसे नयनों वाले अर्थात् विष्णु	– बहुव्रीहि समास
पीतांबर	=	पीला है जो अंबर	– कर्मधारय समास
पीतांबर	=	पीले हैं अंबर जिसके अर्थात् कृष्ण जी	– बहुव्रीहि समास

यहाँ समास–विग्रह का अंतर स्पष्ट कराया गया है।

आइए, पुनरावृति करें

- समास में संक्षिप्तीकरण किया जाता है।

समास

- अव्ययीभाव समास
- तत्पुरुष समास
- द्विगु समास
- द्वंद्व समास
- कर्मधारय समास
- बहुव्रीहि समास

- समास में – समस्तपद (सामासिक शब्द) तथा समास विग्रह होते हैं।
- संक्षिप्तीकरण की प्रक्रिया से बना शब्द सामासिक शब्द कहलाता है।
- समस्त पदों का विग्रह करना समास–विग्रह कहलाता है।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) राजपुत्र किस समास का उदाहरण है?

(ख) किस समास में विशेष्य–विशेषण और उपमेय– उपमान की चर्चा की गई है?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) समास किसे कहते हैं? यह कितने प्रकार का होता है?

(ख) तत्पुरुष समास का उदाहरण देते हुए परिभाषा लिखिए।

(ग) कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर स्पष्ट कीजिए। उदाहरण भी दीजिए।

(घ) समस्तपद और समास–विग्रह में अंतर स्पष्ट कीजिए।

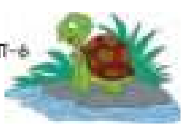

2. दिए गए समस्त पदों का विग्रह करके समास का नाम भी लिखिए।

समस्त पद	समास-विग्रह	समास का नाम
माता-पिता	माता और पिता	द्वंद्व समास
राजपुत्र	....	....
गगनचुंबी	....	....
गजानन	....	....
तिराहा	....	....
हाथोंहाथ	....	....

3. दिए गए सामासिक शब्दों को उनके सही समास के प्रकार से रेखा खींचकर मिलाइए।

सामासिक पद	समास का नाम
(क) नीलगाय	(i) अव्ययीभाव समास
(ख) गजानन	(ii) तत्पुरुष समास
(ग) राजा-रानी	(iii) कर्मधारय समास
(घ) नवरत्न	(iv) द्विगु समास
(ङ) गुणहीन	(v) बहुव्रीहि समास
(च) यथाविधि	(vi) द्वंद्व समास

4. दिए गए समास-विग्रह से समस्तपद बनाकर उनके सामने लिखिए।

शक्ति के अनुसार	=	यथाशक्ति
लंबा है उदर जिसका	=	....
पाँच आबों का समाहार	=	....
चार भुजाएँ हैं जिसकी	=	....
बिना जान-पहचान का	=	....
तीन भुजाओं का समूह	=	....
जेब के लिए खर्च	=	....
अकाल से पीड़ित	=	....
अपना अथवा पराया	=	....
नौ रत्नों का समूह	=	....
क्रोध रूपी अग्नि	=	....
कमल के समान चरण	=	....
सुंदर हैं लोचन जिसके	=	....
पंक (कीचड़) में उत्पन्न होने वाला	=	....

सोचें-विचारें

Critical Thinking

5. समास से प्रेरणा लेकर आप किन बातों को अपने जीवन में अपनाना चाहेंगे और क्यों? सोचकर बताइए।

खेल-खेल में

6. किसी अखबार/पत्रिका में से सामासिक पदों का समास विग्रह करके अपनी कॉपी में लिखिए।
7. दिए गए पाँच फूलों पर समास के नाम लिखे हैं। अब इनके पत्तों पर चार-चार उदाहरण लिखिए।

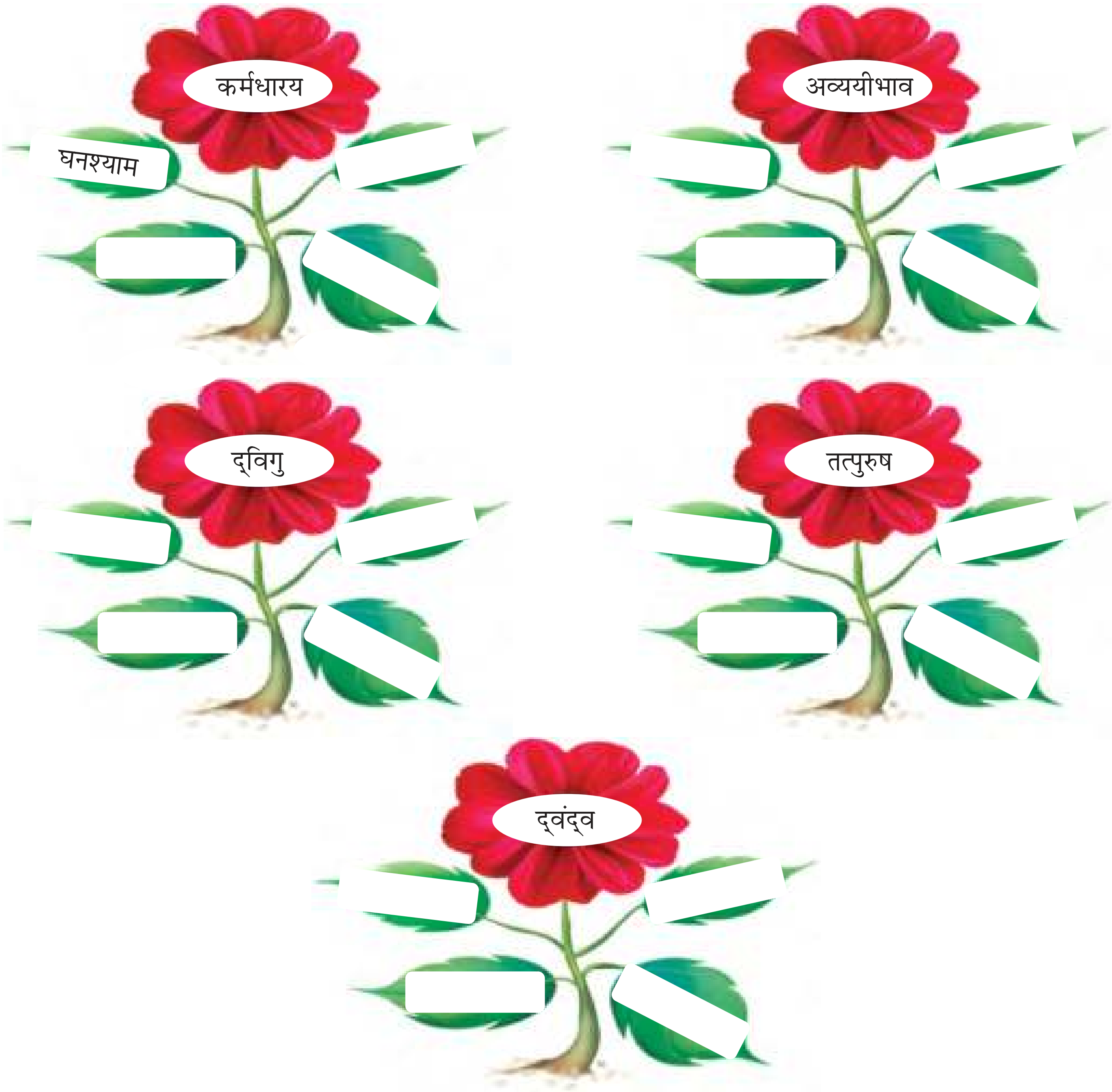

प्रेरणादायक मूल्य

समास की भाँति हमें भी अपनी बातों को कम-से-कम शब्दों में कहना चाहिए लेकिन उनका अर्थ अधिक-से-अधिक प्रकट हो जिससे कि हमारी बातें प्रभावपूर्ण लगें।

अध्याय 13

कारक (Case)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्र देखिए। उनके नीचे लिखे वाक्यों के रंगीन शब्दों पर ध्यान दीजिए।

मनोहर ने गृहकार्य पूरा किया।

अध्यापिका जी बच्चों को पढ़ा रही हैं।

पिता जी मेले में से मेरे लिए साइकिल ले आए।

अब आइए, इन्हें समझने का प्रयास करें।

इन वाक्यों में आए सभी कर्ता शब्द (चाहे संज्ञा हो या सर्वनाम) के साथ ने, को, में, से, लिए शब्द आए हैं, ये सभी शब्द संज्ञा या सर्वनाम के साथ क्रियाओं का संबंध बता रहे हैं। ये सभी हिंदी व्याकरण की भाषा में कारक कहे जाएँगे। अत: हम यह भी कह सकते हैं कि–

संज्ञा या सर्वनाम के जिस किसी रूप से उसका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों या क्रियाओं से जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं।

यहाँ हमें यह ध्यान रखना होगा कि ऊपर प्रयुक्त शब्द– ने, को, में, से, लिए आदि कारक के चिह्न या परसर्ग कहे जाते हैं।

अब आइए, यह जानने का प्रयत्न करें कि कारक शब्दों के कितने भेद होते हैं?

कारक के भेद

कारक के आठ भेद होते हैं–

1. कर्ता कारक
2. कर्म कारक
3. करण कारक
4. संप्रदान कारक
5. अपादान कारक
6. संबंध कारक
7. अधिकरण कारक
8. संबोधन कारक

अब हम प्रत्येक कारक के बारे में विस्तार से जानेंगे।

सबसे पहले इस तालिका द्वारा कारक को समझेंगे।

कारक का नाम	विभक्ति चिह्न	वाक्यों में कारक की पहचान
1. कर्ता	ने	पिता जी ने खाना खाया।
2. कर्म	को	अध्यापिका छात्रों को पढ़ा रही हैं।
3. करण	से, के द्वारा	नौकरानी नल से पानी भर रही है। श्यामू रेल द्वारा घर गया।
4. संप्रदान	को, के लिए	गौरी तोते को रोटी दे दो। पिता जी छोटे के लिए कपड़े ले आए।
5. अपादान	से (अलग होना)	चिड़िया पेड़ से उड़ गई। साँप बिल से बाहर आ गया।
6. संबंध	का, की, के रा, री, रे	नरेश के पिता जी इंजीनियर हैं। राधा की भाभी नृत्यांगना हैं।
7. अधिकरण	में, पर	अलमारी में कपड़े रखे हैं। पेड़ पर चिड़िया बैठी है।
8. संबोधन	हे! अरे!	अरे श्याम! तुम तो पास हो गए। हे राम! अब क्या होगा?

1. **कर्ता कारक (ने)–** कर्ता वह होता है, जो किसी कार्य को करता है। संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के कार्य करने वाले का पता चलता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं। ऐसे वाक्य कारक चिह्न के साथ भूतकाल में होते हैं। बिना कारक चिह्न का वाक्य वर्तमान या किसी भी काल का हो सकता है; जैसे–

अविरल ने दूध पीया।

सुशील जाग गया।

रंजना कल नृत्य करेगी।

पतंग ने आसमान को छुआ।

यहाँ दूध पीने का कार्य अविरल ने किया। जागने का कार्य सुशील ने किया। रंजना नृत्य का कार्य करेगी

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को कारक भेदसहित विस्तारपूर्वक पढ़ाएँ। साथ ही विभक्ति चिह्नों को कंठस्थ कराएँ और उनका वाक्य में प्रयोग के तरीके भी सिखाएँ।

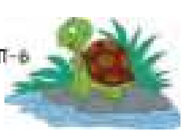

और पतंग ने आसमान छूने का कार्य किया। यहाँ काम करने वाले अविरल, सुशील, रंजना तथा पतंग कर्ता हैं। कर्ता कारक का चिह्न 'ने' होता है। बिना चिह्न या परसर्ग वाले वाक्य में भी कर्ता कारक होता है।

2. **कर्म कारक (को)–** वाक्य में जब क्रिया का फल प्रत्यक्ष रूप से कर्ता पर न पड़कर वाक्य के अन्य संज्ञा या सर्वनाम शब्द पर पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं; जैसे–

माता जी नौकरानी को कपड़े देती हैं।

हाथी गन्ने खाता है।

निर्मल पाठ याद करता है।

इन उदाहरणों में क्रिया का फल कपड़े देने का नौकरानी को, खाने का 'गन्ने' तथा याद करना 'पाठ' पर पड़ रहा है। अत: नौकरानी, गन्ने, पाठ– ये सब कर्म कारक हैं।

यहाँ यह बात महत्वपूर्ण होती है कि 'क्या' तथा 'किसे' प्रश्न करने पर यदि उत्तर सकारात्मक मिलता है तो वह कर्म कारक होता है; जैसे ऊपर के उदाहरणों में–

माता जी किसे कपड़े देती हैं?	**उत्तर–** नौकरानी को	(कर्म कारक)
हाथी क्या खाता है?	**उत्तर–** गन्ने	(कर्म कारक)
निर्मल क्या याद करता है?	**उत्तर–** पाठ	(कर्म कारक)

3. **करण कारक (से, द्वारा)–** कर्ता (काम करने वाला) जिस किसी साधन या माध्यम से कार्य करता है, वह करण कारक कहलाता है; जैसे–

आजकल लोग सेनेटाइजर से हाथ धो रहे हैं।

रवीश हवाई जहाज़ द्वारा कोलकाता गया।

बच्चा खिलौने से खेल रहा है।

ऊपर के उदाहरणों में हाथ धोने का कार्य सेनेटाइजर से, कोलकाता पहुँचने का साधन हवाई जहाज़ से, खेलने का साधन खिलौनों से हो रहा है। अतएव ये सब करण कारक के उदाहरण हैं।

4. **संप्रदान कारक (का, के लिए)–** कर्ता कारक जिसके लिए कार्य करता है अथवा जिसे कुछ देता है, उसके साथ लगी विभक्ति संप्रदान कारक कहलाती है; जैसे–

पिता जी मेरे लिए साइकिल ले आए।

अध्यापिका ने छात्रों को पाठ पढ़ाया।

माता जी ने भिखारियों को पैसे दिए।

इन वाक्यों में पिता जी साइकिल मेरे लिए खरीदे, अध्यापिका ने छात्रों को पढ़ाया तथा माता जी ने पैसे भिखारियों को दिए। इसलिए यहाँ 'को' तथा 'लिए' संप्रदान कारक हैं।

अब यहाँ यह जानना आवश्यक हो गया है कि कर्म कारक या संप्रदान कारक में क्या अंतर होता है। जबकि दोनों का परसर्ग 'को' होता है।

(क) कर्म कारक में क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है।

(ख) संप्रदान कारक में देने का कार्य कर्ता करता है। इसमें परोपकार या उदारता आदि की भावना होती है; जैसे–

रेखा ने सरला को कलम दी। (कर्म कारक)

पिता जी ने गरीबों को वस्त्र बाँटे। (संप्रदान कारक)

नताशा बच्चे को सुलाती है। (कर्म कारक)

नरेश यात्रियों को राशन बाँटता है। (संप्रदान कारक)

5. **अपादान कारक (से)**– संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसे, अलग होने, खोने तथा तुलना करने का पता चलता है, उसे अपादान कारक कहते हैं; जैसे–

डाल से तोते उड़ गए। (अलग होना)

बच्चा कुत्ते से डरता है। (डरने का भाव)

नंदन के बस्ते से पेंसिल खो गई। (खोने का भाव)

रंजना सुधा से अधिक सुंदर है। (तुलना)

यहाँ यह जानना आवश्यक है कि भय, दूरी और घृणा के लिए जब भी 'से' विभक्ति का प्रयोग होता है, तब अपादान कारक होता है।

6. **संबंध कारक (का, की, के, रा, री, रे)**– संज्ञा के जिस रूप से वाक्य में आए अन्य संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ किसी संबंध की जानकारी मिलती है, उसे संबंध कारक कहते हैं; जैसे–

यह पुस्तक मेरी है।

नीना के पिता जी मेरे मौसा जी हैं।

वह साड़ी सरिता की है।

लद्दाख क्षेत्र चीनियों का नहीं है।

7. **अधिकरण कारक (में, पर)**– संज्ञा के जिस रूप से वाक्य में प्रयुक्त क्रिया के आधार, स्थान और समय का पता चलता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं; जैसे–

केतली में पानी गर्म हो रहा है।

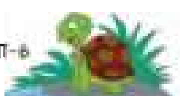

कड़ाहे में गुड़ पक रहा है।

डाल पर तोते बैठे हैं।

पिता जी कार में बैठे हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में पानी का आधार केतली, गुड़ पकने का आधार कड़ाहा, तोते बैठने का आधार डाली, पिता जी के बैठने का आधार कार है। अतएव यहाँ पर अधिकरण कारक का प्रयोग किया गया है।

यहाँ पर यह भी ध्यान रखना चाहिए कि अधिकरण कारक को जानने के लिए क्रिया में 'कहाँ' और 'किसमें' प्रश्न लगाने पर जो उत्तर मिलता है, वहाँ अधिकरण कारक होता है; जैसे–

पानी कहाँ गर्म हो रहा है ?	**उत्तर**– केतली में	ये सभी **अधिकरण कारक** हैं।
पिता जी किसमें बैठे हैं?	**उत्तर**– कार में	
तोते कहाँ बैठे हैं?	**उत्तर**– डाल पर	
गुड़ किसमें पक रहा है?	**उत्तर**– कड़ाहे में	

8. संबोधन कारक (हे, अरे)– जिस संज्ञा शब्द या सर्वनाम शब्द का प्रयोग किसी को बुलाने के लिए या संबोधन के रूप में किया जाता है, वहाँ पर संबोधन कारक का प्रयोग किया जाता है; जैसे–

अरे! यह पिक्चर मैंने देखी है।

हे मोहन! जरा इधर आना।

हे भगवान! यह अनर्थ कैसे हो गया?

यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि संबोधन कारक में संबोधन का चिह्न लगता है।

आइए, पुनरावृत्ति करें

- संज्ञा और सर्वनाम का किसी भी रूप में क्रिया के साथ संबंध बतलाने वाले शब्दों को कारक कहते हैं।

कारक

- कर्ता (ने)
- कर्म (को)
- करण (से, द्वारा)
- संप्रदान (को, के लिए)
- अपादान (से अलग)
- संबंध (का, के, की, रा, रे, री)
- अधिकरण (में, पर)
- संबोधन (अरे! हे!)

- कारक चिह्नों को 'परसर्ग' या 'विभक्ति' भी कहते हैं।
- कर्म कारक और संप्रदान कारक में अंतर होता है।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) 'आज नीतू के भाई का जन्मदिन है।' वाक्य में कौन-सा कारक है?

(ख) कारक के कितने भेद हैं?

(ग) 'में', 'पर' आदि विभक्ति चिह्न किस कारक में लगाए जाते हैं?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) कारक की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए।

(ख) कर्म कारक और संप्रदान कारक में क्या अंतर होता है?

(ग) अपादान कारक की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

(घ) संप्रदान कारक की परिभाषा उदाहरण सहित समझाइए।

2. दिए गए वाक्यों में रेखांकित परसर्गों के कारक का नाम लिखिए।

(क) पेड़ों से पत्ते गिर रहे हैं। ....

(ख) गीता ने सती को कॉपी दी। ....

(ग) पिता जी सोफे पर बैठे हैं। ....

(घ) बिल्ली घर में आ गई। ....

(ङ) मंजरी रानी की बड़ी बहन है। ....

3. दिए गए वाक्यों में सही विभक्ति लगाइए।

(क) नाविक .... नदी पार कराई। (से / में / ने)

(ख) राम .... माँ मेरी मौसी हैं। (से/ के लिए/ की)

(ग) विदाई के समय माँ की आँखों .... आँसू निकल पड़े। (की / से/ में/ पर)

(घ) बादलों .... पानी बरसने लगा। (में / की/ से/ रे)

(ङ) हमें देश .... कुर्बान भी होना पड़ेगा। (में/ के लिए /की)

4. दिए गए वाक्यों में गलत परसर्ग लगे हैं, इन्हें ठीक करके दोबारा लिखिए।

(क) राधा का बहन नितिन को मौसी है।

....

(ख) मैं आगरा में निकलता हूँ।

....

(ग) तिनका-तिनका में जोड़ना पड़ता है।

....

(घ) पक्षीगण डाल से बैठे हैं।

....

सोचें-विचारें

Critical Thinking

5. कर्म कारक और संप्रदान कारक के बीच विभेद को सोचकर बताइए जबकि दोनों कारकों में 'को' विभक्ति चिह्न का ही प्रयोग किया जाता है।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

6. अपने पुस्तकालय से कहानी की किताब लेकर उसके कुछ वाक्य लिखें। उनमें आई कारक की विभक्तियों को रेखांकित करके कारक का नाम लिखिए।

	वाक्य	कारक का नाम
(क)	....	....
(ख)	....	....
(ग)	....	....
(घ)	....	....
(ङ)	....	....
(च)	....	....
(छ)	....	....
(ज)	....	....

7. कक्षा में कारक चिह्न लिखी कुछ पर्चियाँ एक डिब्बे में बंद करके रखें। फिर एक-एक बच्चे से एक-एक पर्ची निकलवाकर उससे वाक्य बनवाएँ।

प्रेरणादायक मूल्य

जिस प्रकार कारक के विभक्ति चिह्नों के प्रयोग से वाक्य में सरलता व संगठनात्मकता आती है ठीक उसी प्रकार एकता से राष्ट्र को मजबूती मिलती है। अत: हमें एकता और संगठित स्वरूप में रहना चाहिए। वह राष्ट्र सदैव दुर्बल होता है जहाँ एकता नहीं होती।

अध्याय 14

उपसर्ग (Prefix)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्र देखिए और उनके नीचे लिखे शब्द पढ़िए–

विजय

उपहार

सद्‌बुद्‌धि

बच्चो! ऊपर लिखे शब्दों– विजय, उपहार तथा सद्‌बुद्‌धि में इनके पहले क्रमशः वि, उप तथा सद्‌ जुड़े हैं। उनके साथ मूल शब्द क्रमशः हैं– जय, हार तथा बुद्‌धि।

मूल शब्द के पहले जुड़ने वाले ये शब्दांश–वि, उप तथा सद्‌ उपसर्ग हैं। अतः हम कह सकते हैं कि–

ऐसे शब्दांश जो शब्द से पहले लगकर उसका अर्थ बदल देते हैं अथवा उनके अर्थ में कोई विशेषता ला देते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं।

यह बात भी विशेष ध्यान में रखनी चाहिए कि बिना मूल शब्द के साथ प्रयोग किए गए केवल उपसर्गों या शब्दांशों का कोई भी महत्व नहीं होता।

अब आइए, यह जानने का प्रयत्न करें कि हिंदी भाषा में कितनी तरह के उपसर्गों का प्रयोग किया जाता है।

(क) संस्कृत के उपसर्ग
(ख) हिंदी के उपसर्ग
(ग) उर्दू के उपसर्ग
(घ) संस्कृत के अव्यय

उपसर्ग

- संस्कृत के उपसर्ग
- हिंदी के उपसर्ग
- उर्दू के उपसर्ग
- संस्कृत के अव्यय

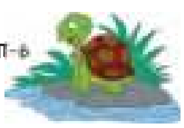

(क) संस्कृत के उपसर्ग:

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण / शब्द
1. अप	विरुद्ध, बुरा	अपयश, अपव्यय, अपमान, अपकार
2. अ	निषेध / अभाव	अनाथ, अधर्म, अकुशल, असंभव
3. आ	सहित, तक	आगमन, आजन्म, आकंठ
4. अत	अधिक	अतिरिक्त, अत्याचार, अत्यंत
5. प्रति	विरोध / प्रत्येक	प्रतिकूल, प्रतिक्रिया, प्रतिबद्ध
6. अव	नीचे, हीनता	अवसर, अवतार, अवगुण, अवकाश
7. अधि	ऊपर, श्रेष्ठ	अधिकृत, अधिपति, अधिकार, अधिगम
8. परा	अधिक, विपरीत	पराधीन, पराक्रम, परामर्श, पराजय
9. उत्	उत्कर्ष	उन्नति, उत्थान, उत्पन्न
10. निर्	निषेध	निरपराध, निर्जन, निर्लज्ज, निर्जीव
11. अभि	ओर, निकटता	अभिप्रेत, अभिमुख, अभिषेक
12. उद्	उत्कर्ष, ऊपर	उद्गार, उद्भव, उद्गम
13. प्र	आगे	प्रवेश, प्रबंध, प्रगति, प्रबल
14. वि	विरोध, अभाव	विदेश, विज्ञान, विवश, विमाता
15. परि	चारों ओर	परिहास, परिक्रमा, परिचय, परिवेश
16. उप	छोटा	उपनाम, उपराष्ट्रपति, उपस्थित

(ख) हिंदी के उपसर्ग:

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण / शब्द
1. अ	कमी	अछूत, अटल, अकाल
2. अध	आधा	अधखिला, अधपका, अधकचरा
3. अन	कमी	अनपढ़, अनजान, अनकही
4. कु	बुरा	कुसमय, कुबुद्धि, कुपूत
5. नि	कमी	निहत्था, निकम्मा, निढाल
6. बिन	बिना	बिनबुलावा, बिनब्याहा
7. उन	एक कम	उनतालीस, उनसठ, उनतीस
8. सु	अच्छा	सुघड़, सुफल, सुडौल

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को उपसर्ग के संबंध में विस्तारपूर्वक समझाएँ।

9. चौ	चार	चौराहा, चौपाई, चौकन्ना
10. स	साथ	सचेत, सपरिवार, सहित
11. पर	दूसरा	परकोटा, परदादी, परनाना
12. भर	पूरा, भरा हुआ	भरसक, भरपूर, भरपेट
13. अन	अभाव	अनदेखा, अनहोनी, अनसुना
14. दु	दो, कम	दुबला, दुनाली, दुरंगा, दुकान

(ग) उर्दू के उपसर्ग:

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण / शब्द
1. बिला	बिना	बिलावजह, बिलाकसूर, बिलाशक
2. खुश	प्रसन्न	खुशदिल, खुशनसीब, खुशबू
3. बद	बुरा	बदतमीज़, बदबू, बदसूरत
4. दर	में	दरमियान, दरअसल, दरकार
5. कम	हीन	कमउम्र, कमज़ोर, कमअक्ल, कमखर्च
6. बा	साथ	बाखुदा, बाअदब, बाकायदा, बावजूद
7. ना	नहीं	नापसंद, नाखुश, नासमझ, नालायक
8. गैर	भिन्न	गैरकानूनी, गैरहाज़िर, गैरसरकारी
9. ब	के साथ	बखूबी, बगैर, बनाम, बदस्तूर
10. ला	नहीं	लापरवाह, लाइलाज, लापता, लावारिस
11. हर	प्रत्येक	हररोज़, हरदिल, हरदफ़ा
12. हम	समान	हमदर्द, हमराही, हमशक्ल
13. बे	बिना	बेईमान, बेबस, बेसहारा, बेरहम

(घ) संस्कृत के अव्यय:

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण / शब्द
1. अन्	अभाव	अनादर, अनंत, अनेक, अनर्थ
2. चिर	दीर्घकालिक	चिरकाल, चिरशत्रु, चिरयोगी
3. पर	दूसरा	परदेश, परनिंदा, परलोक, परतंत्र
4. अध:	नीचे	अधोगति, अध:पतन, अधोभाग
5. सत्	सच्चा	सत्कार, सज्जन, सत्संग, सत्कर्म
6. सह	साथ	सहपाठी, सहमत, सहयोग, सहशिक्षा

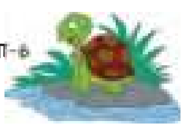

आइए, पुनरावृति करें

- **उपसर्ग**– मूल शब्द के पहले लगते हैं।
- इनसे मूल अर्थ में परिवर्तन आ जाता है।
- उपसर्ग के चार भेद होते हैं।

उपसर्ग

- संस्कृत के उपसर्ग
- हिंदी के उपसर्ग
- उर्दू के उपसर्ग
- संस्कृत के अव्यय

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) 'प्रभाव' शब्द में कौन–सा उपसर्ग है?

(ख) संस्कृत के उपसर्ग के दो उदाहरण बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) उपसर्ग किसे कहते हैं, परिभाषा व उदाहरण सहित समझाइए।

(ख) उपसर्ग के कितने भेद हैं?

(ग) उपसर्गों का प्रयोग किसके साथ किया जाता है? उदाहरण दीजिए।

2. दिए गए उपसर्गों से दो-दो उपसर्गयुक्त शब्द बनाइए।

गैर – ....

बिन – ....

सु – ....

हर – ....

पर – ....

कम – ....

ना – ....

अन – ....

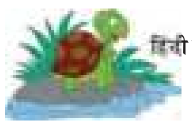

अध	–	....	....
वि	–	....	....
परि	–	....	....
खुश	–	....	....

3. दिए गए मूल शब्दों में सही उपसर्ग लगाकर नए शब्द बनाइए।

बा	अदब	=	बाअदब
....	सूरत	=	....
....	अक्ल	=	....
....	बंध	=	....
....	बल	=	....
....	जीवन	=	....
....	कार	=	....
....	थान	=	....
....	तमीज़	=	....

4. दिए गए शब्दों के सही उपसर्ग-मूलशब्द को चुनिए।

(क) 'संसार' का उपसर्ग और मूल शब्द क्या होगा?

(i) सं+सार ☐ (ii) सन्+सार ☐ (iii) सम+सार ☐ (iv) सम्+सार ☐

(ख) 'अधोभाग' का उपसर्ग और मूल शब्द होगा–

(i) अध+ओभाग ☐ (ii) अधो+भाग ☐ (iii) अध:+भाग ☐ (iv) आधा+भाग ☐

(ग) 'प्रतिकूल' शब्द का उपसर्ग और मूल शब्द होगा–

(i) प्र+तिकूल ☐ (ii) प्रती+कूल ☐ (iii) प्रति+कुल ☐ (iv) प्रति+कूल ☐

(घ) 'बेतरतीब' शब्द का उपसर्ग और प्रत्यय क्या होगा?

(i) बेत+रतीब ☐ (ii) बेतर+तीब ☐ (iii) बे+तरतीब ☐ (iv) बेतरती+ब ☐

5. दिए गए शब्दों में से उपसर्ग और मूल शब्द अलग करके लिखिए।

भरपेट	=	भर	+	पेट	प्रतिदिन	=	....	+	....
अनपढ़	=	....	+	....	संसार	=	....	+	....
परिचय	=	....	+	....	अंतर्मन	=	....	+	....
बिलावजह	=	....	+	....	कुपूत	=	....	+	....
सहयोग	=	....	+	....	चिरकाल	=	....	+	....
परनानी	=	....	+	....	हमशक्ल	=	....	+	....
प्रतिकूल	=	....	+	....	प्रगति	=	....	+	....

6. दिए गए मूल शब्द और उपसर्गों से नए शब्द बनाइए।

अ	+	छूत	=	अछूत			अन्	+	एक	=	....
प्र	+	वेश	=	....			कम	+	अक्ल	=	....
सम्	+	कल्प	=	....			वि	+	स्मरण	=	....
अति	+	आचार	=	....			नि	+	कम्मा	=	....
हम	+	जोली	=	....			अधः	+	भाग	=	....
दुर्	+	आशा	=	....			निस्	+	संतान	=	....
अनु	+	कूल	=	....			अप	+	व्यय	=	....
सु	+	आगत	=	....			सत्	+	आचार	=	....

सोचें-विचारें
Critical Thinking

7. उपसर्ग और समास में क्या अंतर होता है? सोचकर बताइए।

खेल-खेल में
Brain Storming Activity

8. कक्षा में छात्रों के चार समूह बनवाएँ। उनसे चारों प्रकार के उपसर्गों से शब्द व उपसर्ग बुलवाएँ।

संस्कृत के उपसर्ग

हिंदी के उपसर्ग

उर्दू के उपसर्ग

संस्कृत के अव्यय

प्रेरणादायक मूल्य
किसी भी व्यक्ति की अच्छाइयाँ और उसके गुण समाज में प्रतिष्ठा दिलाते हैं जिस प्रकार उपसर्ग किसी मूल शब्द के पहले जुड़कर उसे विशेषित करते हैं अथवा उसके अर्थ को परिवर्तित करते हैं।

अध्याय 15

प्रत्यय
(Suffix)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्र देखिए और उनके नीचे लिखे शब्द पढ़िए–

खिलौना

खुशबूदार

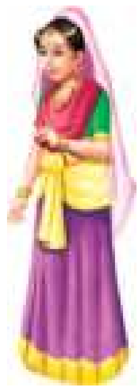

सुंदरता

बच्चो! ऊपर लिखे शब्दों– खिलौना, खुशबूदार तथा सुंदरता में शब्दों के अंत में औना (खिल + औना), दार (खुशबू + दार) तथा ता (सुंदर + ता) जुड़े हैं।

मूल शब्द के बाद जुड़ने वाले ये शब्दांश औना, दार तथा ता प्रत्यय हैं। अत: हम कह सकते हैं कि–

ऐसे शब्दांश जो मूल शब्द के अंत में जुड़कर उसका अर्थ बदल देते हैं, या उनके अर्थ में विशेषता ला देते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं।

उपसर्ग की भाँति प्रत्यय शब्दांश का भी कोई अर्थ तब तक नहीं होता, जब तक कि वे किसी–न–किसी मूल शब्द से न जुड़ें।

अब आइए, यह जानने का प्रयत्न करें कि हिंदी भाषा में कितने प्रकार के प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है?

(क) कृत् प्रत्यय

(ख) तद्धित प्रत्यय

प्रत्यय

- कृत प्रत्यय (क्रिया शब्दों में)
- तद्धित प्रत्यय (संज्ञा और विशेषण)

1. कृत प्रत्यय

वे प्रत्यय जो किसी क्रिया अथवा धातु के अंत में जुड़कर संज्ञा और विशेषण शब्दों की रचना करते हैं, वे कृत प्रत्यय कहलाते हैं; जैसे– 'थक' धातु के अंत में 'आन' प्रत्यय लगाने से नया शब्द 'थकान' बनेगा। आइए, कृत प्रत्यय और उससे जुड़े शब्दों को जानें–

कृत प्रत्यय	प्रत्यय लगे शब्द
अन	चिंतन, मनन
या	खोया, पाया, पीया
आवा	बुलावा, पहनावा, चढ़ावा
इया	बढ़िया, घटिया
आई	लड़ाई, पढ़ाई, लिखाई
आ	देखा, लिखा, पढ़ा, मुड़ा
आलु	झगड़ालु, कृपालु
ई	मोटी, करनी, चलनी
इयल	दड़ियल, मरियल, सड़ियल
दार	चमकदार, लेनदार, देनदार, लुआबदार
क	सेवक, गायक, भिक्षुक
औती	कठौती, मनौती, चुनौती, फिरौती
आहट	गड़गड़ाहट, मुस्कराहट, घबराहट
आकू	पढ़ाकू, लड़ाकू
ता	करता, धाता, जागता, सोता
ऐया	गवैया, खेवैया, लड़ैया, नचैया
आऊ	बिकाऊ, टिकाऊ, बनाऊ, पकाऊ
ती	घूमती, गाती, नाचती, बैठती
न	खान, पान, लेन, देन
आवट	लिखावट, सजावट, मिलावट
आन	थकान, ढलान, मिलान, लगान

2. तद्धित प्रत्यय

ऐसे प्रत्यय जो संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण एवं अव्यय शब्दों के अंत में जोड़े जाते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहा जाता है।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को प्रत्यय के संबंध में समझाएँ तथा शब्दों में लगे प्रत्यय से बच्चों को उनके भेद के आधार पर अवगत कराएँ।

आइए, कुछ तद्धित प्रत्यय एवं उनसे निर्मित शब्दों को जानें–

तद्धित प्रत्यय	प्रत्यय लगे शब्द
ता	वीरता, सजगता, दयालुता
ईला	पथरीला, ज़हरीला, बर्फ़ीला
ड़ा	दुखड़ा, मुखड़ा, बछड़ा, तगड़ा
एरा	ममेरा, फुफेरा, मौसेरा, घनेरा
इन	पुजारिन, मालिन, सुनारिन
आना	रोज़ाना, घराना, सालाना, मेहनताना
इया	रसोइया, जयपुरिया, मुंबइया, बुढ़िया
ऊ	लंबू, गप्पू, बब्बू, डब्बू
आई	ऊँचाई, तरुणाई, गहराई, लंबाई
ई	गरमी, सरदी, पंजाबी, गुजराती, पोती
दान	पायदान, पानदान, कलमदान, फूलदान
याँ	गालियाँ, गोलियाँ, टोपियाँ, खिड़कियाँ
खोर	चुग़लखोर, गोताखोर, घूसखोर, सूदखोर
कार	रचनाकार, व्याख्याकार, पत्रकार, गीतकार
गर	सौदागर, जादूगर, सितमगर, बाज़ीगर
इक	भौगोलिक, सामाजिक, व्यावहारिक, धार्मिक
पन	बचपन, भोलापन, अपनापन
वाला	फलवाला, डब्बेवाला, दूधवाला, सब्ज़ीवाला
ईला	गठीला, रंगीला, हठीला, छबीला
त्व	गुरुत्व, ममत्व, घनत्व, अपनत्व
हारा	चूड़िहारा, लकड़हारा, पनिहारा

उपसर्ग एवं प्रत्यययुक्त शब्द

उपसर्ग	मूलशब्द	प्रत्यय	नवनिर्मित शब्द
अनु	करण	ईय	अनुकरणीय
अ + वि	जय	इत	अविजित
बे	ईमान	ई	बेईमानी
प्र	चल	इत	प्रचलित

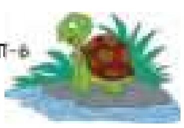

उपसर्ग	मूलशब्द	प्रत्यय	नवनिर्मित शब्द
अ	खंड	इत	अखंडित
खुश	बू	दार	खुशबूदार
बद	बू	दार	बदबूदार
अ	धर्म	इक	अधार्मिक
उप	कार	ई	उपकारी
सु	संगठन	इत	सुसंगठित
चिर	स्मरण	ईय	चिरस्मरणीय
अ	खंड	इत	अखंडित
अभि	मान	ई	अभिमानी

आइए, पुनरावृति करें

- **प्रत्यय**– जो शब्दांश किसी शब्द के अंत में जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, वे प्रत्यय कहे जाते हैं।
- प्रत्यय के दो भेद हैं–(क) कृत प्रत्यय (ख) तद्धित प्रत्यय
- कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जिनमें उपसर्ग तथा प्रत्यय दोनों लगते हैं।
- प्रत्यय के दो भेद होते हैं।

प्रत्यय

- कृत प्रत्यय (क्रिया या धातु में लगते हैं।)
- तद्धित प्रत्यय (ये संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण तथा अव्यय के अंत में जोड़े जाते हैं।)

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) 'लिखावट' और 'बुढ़ापा' में कौन सा प्रत्यय लगा है? बताइए।

(ख) 'ता' प्रत्यय लगाकर दो शब्द बनाइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) प्रत्यय किसे कहते हैं? उदाहरण सहित समझाइए।

(ख) प्रत्यय के कितने भेद होते हैं? उनमें से किसी एक को सोदाहरण लिखकर बताइए।

(ग) कृत् प्रत्यय की परिभाषा देकर उदाहरण दीजिए।

2. दिए गए शब्दों में से मूल शब्द और प्रत्यय को अलग कीजिए–

साहित्यकार	साहित्य	कार
लकड़हारा	....	....
बंगाली	....	....
बिछौना	....	....
होनहार	....	....
पूजनीय	....	....
घबराहट	....	....
सजावट	....	....
बिकाऊ	....	....
भुलक्कड़	....	....
देनदार	....	....
पिसाई	....	....
लुहार	....	....
मौसेरा	....	....
सरलता	....	....
अड़ियल	....	....

3. दिए गए प्रत्ययों से दो-दो शब्द बनाइए–

प्रत्यय	शब्द	
इया	रसोइया	बढ़िया
आई	....	....
आस	....	....
याँ	....	....
वाला	....	....
एरा	....	....
ऐया	....	....

प्रत्यय	शब्द	
दान	....	....
खोर	....	....
आव	....	....
आन	....	....
ता	....	....
आवना	....	....
नी	....	....

4. दिए गए शब्दों में से उपसर्ग, मूल शब्द एवं प्रत्यय को अलग कीजिए–

(क)	उपकारी	=	उप	+	कार	+	ई
(ख)	सुपठित	=	....	+	....	+	....
(ग)	अभिमानी	=	....	+	....	+	....
(घ)	अविजित	=	....	+	....	+	....
(ङ)	प्रचलित	=	....	+	....	+	....
(च)	बदबूदार	=	....	+	....	+	....
(छ)	अनुकरणीय	=	....	+	....	+	....

5. दिए गए शब्दों से मूलशब्द और प्रत्यय को अलग करके सही विकल्प चुनिए।

(क) डरावना

(i) डरा+वना (ii) डर+आवना (iii) डर+अवना (iv) डराव+ना

(ख) भारतीय

(i) भरत+ईय (ii) भार+तीय (iii) भारत+ईय (iv) भरत+इय

(ग) सामाजिक

(i) सामा+जिक (ii) समाज+इक (iii) स+माजिक (iv) सामाज+इक

(घ) लिखावट

(i) लि+खावट (ii) लिखा+वट (iii) लिख+आवट (iv) लिख्+आवट

सोचें-विचारें

Critical Thinking

6. उपसर्ग और प्रत्यय में क्या अंतर होता है? सोच-समझकर बताइए।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

7. अपनी पाठ्यपुस्तक/कहानी की पुस्तक/पत्रिका या अखबार में से प्रत्यययुक्त शब्दों को रेखांकित करके अपनी कॉपी में लिखिए।

8. कुछ प्रत्यय शब्द श्यामपट्ट पर लिखकर छात्रों से कुछ और शब्द बुलवाएँ।

9. प्रत्ययांत शब्दों की कक्षा में शब्दाक्षरी करवाएँ।

प्रेरणादायक मूल्य

प्रत्येक व्यक्ति को प्रत्यय की भांति व्यवहार करना चाहिए। जिस प्रकार प्रत्यय किसी भी शब्द के पीछे लगकर उसके अर्थ को बदल देते हैं और उसे एक विशेषता प्रदान करते हैं, ठीक उसी प्रकार मनुष्य को भी अपने जीवन-मूल्यों की पहचान कर उसे प्रभावी स्नेहरूप प्रदान करना चाहिए।

अध्याय 16

अनेक प्रकार के शब्द
(Different Type of Words)

पढ़िए और समझिए

बच्चो! शब्द अनेक प्रकार के होते हैं। इनका ज्ञान रखने से जहाँ हमारे ज्ञान में बढ़ोतरी होती है, वहीं हमारा लेखन सुंदर एवं आकर्षक बनता है। उसे पढ़कर दूसरे लोग प्रभावित होते हैं। अतः हमें अपने अंदर अधिकाधिक शब्दों का भंडारण करना श्रेयस्कर रहता है। इससे हम बोलते समय कहीं भी अटकते नहीं हैं और धारा प्रवाह बोलते चले जाते हैं।

अब आइए, उन शब्दों को जानने का प्रयास करें, जिनसे हम लाभान्वित होते हैं–

सबसे पहले विलोम (उल्टे) शब्द के बारे में जानेंगे।

(क) विलोम शब्द

जो शब्द किसी शब्द का विरोधी/विपरीत या उल्टा अर्थ बताते हैं, उन्हें विलोम या विपरीतार्थक शब्द कहते हैं।

कुछ शब्द और उनके विलोम शब्द नीचे दिए जा रहे हैं–

शब्द	विलोम शब्द	शब्द	विलोम शब्द
आवश्यक	अनावश्यक	ज्ञान	अज्ञान
सज्जन	दुर्जन	अनुकूल	प्रतिकूल
कुशल	अकुशल	जीवन	मरण
निंदा	स्तुति	न्याय	अन्याय
अपना	पराया	सुगंध	दुर्गंध
नीति	अनीति	सदुपयोग	दुरुपयोग
कीर्ति	अपकीर्ति	शत्रु	मित्र
शिक्षित	अशिक्षित	आदर	अनादर
स्वर्ग	नरक	शुभ	अशुभ
अमृत	विष	उग्र	शांत
पाप	पुण्य	प्रकाश	अंधकार
उचित	अनुचित	पक्ष	विपक्ष
सौभाग्य	दुर्भाग्य	अंधकार	प्रकाश

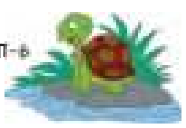

राजा	रंक	पसंद	नापसंद
गुण	दोष	आदि	अंत
सेवक	स्वामी	विवेक	अविवेक
उन्नति	अवनति	आमिष	निरामिष
गहरा	उथला	पूर्ण	अपूर्ण

(ख) पर्यायवाची शब्द

ऐसे शब्द जिनसे किसी शब्द का समान अर्थ निकलता है, वे पर्यायवाची अथवा समानार्थी शब्द कहे जाते हैं; जैसे– तालाब के पर्यायवाची शब्द होंगे– ताल, तलैया, सरोवर आदि।

आइए, नीचे दिए जा रहे कुछ पर्यायवाची शब्दों को जानें–

शब्द	पर्यायवाची शब्द
आग	अग्नि, वह्नि, पावक, अनल, ज्वाला
पानी	जल, नीर, तोय, अंबु, सलिल
नदी	सरिता, तटिनी, सलिला, तरंगिनी
पर्वत	नग, भूधर, गिरि, अचल, पहाड़
मित्र	सखा, मित्र, दोस्त, सहचर, मीत
पृथ्वी	धरती, वसुधा, धरा, मही
आँख	नयन, दृग, नैना, अक्षि, चक्षु, लोचन
दास	नौकर, सेवक, अनुचर
घर	आवास, सदन, आलय, धाम, गृह
कमल	राजीव, अरविंद, पंकज, सरोज
गाय	धेनु, गौ, गऊ, सुरभि
किरण	रश्मि, अंशु, मयूख
गंगा	जाह्नवी, सुरसरि, त्रिपथगा, भागीरथी
पुत्री	आत्मजा, सुता, दुहिता, बेटी, तनुजा
सरस्वती	वाग्देवी, शारदा, भारती, वाणी, वीणावादिनी
सिंह	मृगपति, वनराज, मृगराज, केसरी
मोर	मयूर, सारंग, केकी
साँप	सर्प, भुजंग, विषधर, नाग
सागर	समुद्र, उदधि, रत्नाकर, जलधि
बिजली	विद्युत, दामिनी, चपला

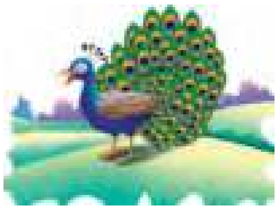

कोयल	कोकिल, पिक, श्यामा
घोड़ा	अश्व, सैंधव, बाजि, तुरंग
आकाश	नभ, शून्य, अंबर, व्योम, गगन

(ग) वाक्यांशबोधक शब्द

कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जो अनेक शब्दों या वाक्यांशों के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं। ऐसे शब्दों को वाक्यांशबोधक शब्द कहा जाता है। वाक्यांशबोधक शब्दों से भाषा सुंदर बन जाती है।

आइए, ऐसे शब्दों को जानने का प्रयास करते हैं–

अनेक शब्द / वाक्यांश	एक शब्द
जो सरलता से प्राप्त हो	सुलभ
जहाँ पहुँचना काफी कठिन हो	दुर्गम
जिसके आने की कोई तिथि न हो	अतिथि / मेहमान
शरण में आया हुआ व्यक्ति	शरणागत
पत्तों द्वारा बनाई गई कुटिया	पर्णकुटी
महीने में एक बार होने वाला	मासिक
तीन मास में एक बार होने वाला	त्रैमासिक
वर्ष में एक बार होने वाला	वार्षिक
जो किए गए उपकार को मानता है	कृतज्ञ
ईश्वर में विश्वास रखने वाला	आस्तिक
जिसका मूल्य न लगाया जा सके	अमूल्य
जिसने अपनी लज्जा का त्याग किया हो	निर्लज्ज
जिसे जीता न जा सके	अजेय
जो किसी का भी पक्ष न ले	निष्पक्ष
जो व्यक्ति किए गए उपकार को नहीं मानता हो	कृतघ्न
बहुत कम ज्ञान रखने वाला	अल्पज्ञ
जिसके मन में किसी के प्रति ममता न हो	निर्मम
जानने की इच्छा रखने वाला	जिज्ञासु
केवल फल-फूल खाने वाला	फलाहारी
मांस / मछली का सेवन करने वाला	मांसाहारी
शाक-सब्ज़ी खाने वाला	शाकाहारी
घोड़ों के रहने का स्थान	अस्तबल

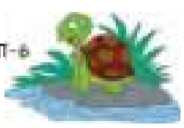

मुरगी के रहने का स्थान	दड़बा
चिड़ियों के रहने का स्थान	घोंसला
तुरंत काम आने वाली बुद्धि / मेधा	प्रत्युत्पन्नमतित्व
विषय विशेष का ज्ञाता	विशेषज्ञ

(घ) अनेकार्थी शब्द

ये वैसे शब्द होते हैं, जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं, इसलिए ऐसे शब्दों को अनेकार्थी या अनेकार्थक शब्द कहते हैं।

आइए, कुछ अनेकार्थक शब्दों में बारे में जानते हैं–

शब्द	अनेक अर्थ
अंक	गोद, संख्या, नाटक का एक खंड
अर्थ	धन, मतलब, प्रयोजन
घट	घड़ा, हृदय, घटने-घटाने की क्रिया
पानी	जल, चमक, प्रतिष्ठा
फल	परिणाम, खाने वाले विविध फल
अधर	होंठ, बीच में
मत	राय, वोट, विचार, मना करना
खल	दुष्ट, नीच, मसाला कूटने का पात्र
पद	चरण, ओहदा, स्थान, कविता की पंक्तियाँ
भाग	हिस्सा, विभाजन, भागने की क्रिया
बल	सहारा, ताकत, शक्ति, ऐंठन
मंगल	एक ग्रह, एक दिन, कल्याण, शुभ
तीर	बाण, किनारा
हार	पराजय, माला
अंश	भाग, कोण बनाने का अंश
मन	आत्मा, तौलने की एक माप
पत्र	पत्ता, चिट्ठी, पंख
कर	हाथ, सूँड़, टैक्स, किरण
कल	बीता और आने वाला दिन, पुर्जा, मशीन
आम	साधारण, सामान्य, एक फल
कनक	सोना, धतूरा, गेहूँ
कुल	संपूर्ण, वंश
उत्तर	एक दिशा, जवाब, बाद का
घन	बादल, हथौड़े से जिस पर पीटा जाता है
धन	मुद्रा, जोड़ना, संपत्ति
हरि	मनुष्य, विष्णु, शेर, बंदर, पानी, मेंढक, साँप
सुर	स्वर, देवता, ताल
दंड	कसरत, सज़ा

(ङ) श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

ये वैसे शब्द होते हैं, जो सुनने में तो समान लगते हैं, किंतु अर्थ में काफ़ी भिन्नता लिए होते हैं। ऐसे कुछ शब्दों की सूची नीचे दी जा रही है–

शब्द	अर्थ
आदि	शुरुआत
आदी	अभ्यस्त
कृति	रचना
कृती	निपुण

बदन	शरीर	अनिल	वायु
वदन	मुख	अनल	अग्नि
कर्म	कार्य	ग्रह	नक्षत्र
क्रम	सिलसिलेवार	गृह	घर, आवास
समान	बराबर	ओर	तरफ
सामान	वस्तु	और	तथा
कुल	वंश	प्रसाद	ईश्वर का प्रसाद
कूल	किनारा	प्रासाद	महल
भवन	घर	आकर	खान
भुवन	संसार, विश्व	आकार	आकृति
धरा	पृथ्वी	अपेक्षा	आशा
धारा	प्रपात	उपेक्षा	तिरस्कार
दिन	दिवस	मात्र	केवल
दीन	गरीब	मातृ	माता
किला	दुर्ग	परिमाण	माप-तौल
कीला	काँटा	परिणाम	फल
अणु	कण	चिर	पुराना
अनु	पीछे	चीर	वस्त्र
मेल	मिलना	इतर	अन्य
मैल	गंदगी	इत्र	सुगंधित पदार्थ
तरंग	लहर	अलि	भँवरा
तुरंग	घोड़ा	अली	सखी

आइए, पुनरावृति करें

विविध प्रकार के शब्द

- विलोम शब्द (उल्टे शब्द)
- पर्यायवाची शब्द (समान अर्थ वाले)
- अनेकार्थी शब्द (अनेक अर्थ वाले)
- वाक्यांशबोधक (शब्दांशों के लिए एक शब्द)
- श्रुतिसम भिन्नार्थक (सुनने में समान किंतु अर्थ में भिन्नता वाले)

- ये सभी शब्द अर्थ के आधार पर वर्गीकृत हैं।
- शब्दों का स्वयं में भंडार करने से बोलने तथा लिखने में काफी सरलता होती है और कहीं अटकना नहीं पड़ता है।

अध्यापन संकेत

शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में शब्द-भंडार के अंतर्गत वर्गीकृत सभी प्रमुख प्रकारों को समझाएँ तथा उनके बीच के विभेद को भी स्पष्ट करें।

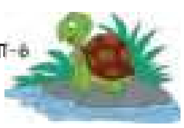

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) मनुष्य, विष्णु, सर्प, बंदर, मेंढक आदि किस एक शब्द के अनेक अर्थों में शामिल हैं?

(ख) शब्द-भंडार में कौन-कौन शब्द-समूह की श्रेणियाँ शामिल हैं?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) पर्यायवाची शब्द किसे कहते हैं? उदाहरण सहित समझाइए।

(ख) अनेकार्थक शब्द किसे कहते हैं? उदाहरण भी दीजिए।

(ग) श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द क्या हैं? परिभाषा तथा उदाहरण द्वारा लिखकर स्पष्ट कीजिए।

(घ) वाक्यांशबोधक शब्दों के बारे में बताइए।

(ङ) श्रुतिसम भिन्नार्थक तथा अनेकार्थक शब्दों में अंतर लिखिए।

2. दिए गए बाईं ओर के शब्दों से दाहिने ओर लिखे उनके सही विलोम शब्दों से रेखा खींचकर मिलाइए।

शब्द	विलोम शब्द
(क) स्वामी	(i) मरण
(ख) सदुपयोग	(ii) नालायक
(ग) आवश्यक	(iii) परदेश/विदेश
(घ) स्वदेश	(iv) नरक
(ङ) सुपुत्र	(v) सेवक
(च) लायक	(vi) अनावश्यक
(छ) स्वर्ग	(vii) दुरुपयोग
(ज) जीवन	(viii) कुपुत्र

3. दिए गए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

आग –	....	पेड़ –	....
पानी –	....	सिंह –	....
आसमान –	....	मोर –	....

बादल – .... | मछली – ....

शरण – .... | वायु – ....

4. दिए गए वाक्यों के रेखांकित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखकर वाक्य दोबारा लिखिए।

(क) आसमान में काले बादल छाए हुए हैं।

....

(ख) वर्षा होने से नदियों में बाढ़ आ गई है।

....

(ग) कोरोना काल में स्वयं को बचाना ही उचित है।

....

(घ) बारहवीं की परीक्षा में अधिकांश छात्र सफल रहे।

....

(ङ) पेड़ों पर बैठकर चिड़ियाँ चहचहा रही हैं।

....

(च) वन में शेर गर्जना कर रहे हैं।

....

(छ) रेगिस्तान में हिरन दौड़ रहे हैं।

....

5. दिए गए वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए।

(क) वर्ष में एक बार होने वाला ....

(ख) जिसमें जानने की इच्छा होती है ....

(ग) विषय विशेष का विशेष ज्ञान रखने वाला ....

(घ) जो दूसरों का उपकार मानता हो ....

(ङ) दूर की सोच रखने वाला ....

(च) जहाँ पर कठिनाई से पहुँचा जा सके ....

(छ) जो व्यक्ति बिना किसी का पक्ष लेकर बात करे ....

(ज) जो बहुत कम ज्ञान या जानकारी रखता है ....

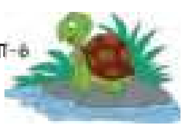

सोचें-विचारें

Critical Thinking

6. पर्यायवाची शब्द और अनेकार्थी शब्द में क्या अंतर है। सोचकर बताइए।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

7. दिए गए शब्दों को उचित वर्ग में लिखिए।

ओर-और उपकार निंदा पाप कोयल घोड़ा जल तीर दीन-दिवस नास्तिक

अपकार पुण्य तुरंग नीर उदधि अक्षर घट मंगल सरिता सागर पिक

वदन-बदन स्तुति नदी कोश-कोष आस्तिक कण मूल-मूल्य कोमल

श्रुतिसम भिन्नार्थक	पर्यायवाची	विलोम शब्द	अनेकार्थक शब्द
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

8. दिए गए चित्रों को देखकर कोष्ठक में से सही शब्द चुनकर सामने लिखिए।

(क) (हस्त, हस्ती, हास) ....

(ख) (अस्सी, असि, मसि) ....

(ग) (धनु, धेनु, धान) ....

(घ) (मैला, मेल, मेला) ....

9. **दी गई वर्ग-पहेली में से नीचे दिए गए शब्दों के निर्देशानुसार शब्द ढूँढ़कर लिखिए–**

सं	ख्या	बि	कि	ना	रा	ध	ना	स्ति	क
बा	ल	ज	ध			तू	सो	गो	स
ण	क्ष्मी	ली	न			रा	ना	द	रो
स	लि	ला	ज	वं	ती	रं	दा	ज़	ज
रि	पा	ठ	शा	ला	र	त्ला	क	र	ल
ता	अ	र	बिं	द	या	लु	हा	र	धि

(क) 'नदी' शब्द के दो पर्यायवाची – ....

(ख) जो बहुत लजाती है – ....

(ग) जो तीर चलाने में कुशल हो – ....

(घ) 'विद्यालय' शब्द का पर्यायवाची – ....

(ङ) 'सागर' शब्द के दो पर्यायवाची – ....

(च) 'कमल' शब्द के दो पर्यायवाची – ....

(छ) जो दूसरों पर दया करता है – ....

(ज) लोहे का काम करने वाला – ....

(झ) 'आस्तिक' शब्द का विलोम – ....

(ञ) 'अंक' शब्द के दो अर्थ – ....

(ट) 'कनक' शब्द के दो अर्थ – ....

(ठ) 'तीन' शब्द के दो अर्थ – ....

(ड) 'चपला' शब्द के दो अर्थ – ....

(ढ) अर्ध का अर्थ – ....

प्रेरणादायक मूल्य

जिस प्रकार शब्दों का संग्रह/भंडार व्यक्ति को ज्ञानवान बनाता है ठीक उसी प्रकार व्यक्ति में गुणों का भंडार उसे गुणवान बनाता है। अतः सदैव अपने व्यक्तित्व को निखारें।

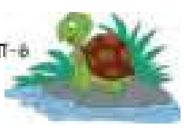

अध्याय 17

मुहावरे और लोकोक्तियाँ (Idioms and Proverbs)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्रों को ध्यानपूर्वक देखिए और वाक्यों को पढ़िए।

आसमान सिर पर उठाना

अपने पाँव आप कुल्हाड़ी मारना

कलेजे पर साँप लोटना

यहाँ चित्र के नीचे लिखे वाक्य पर ध्यान दीजिए–

अध्यापिका के कक्षा से बाहर जाते ही छात्रों ने आसमान को सिर पर उठा लिया। इसका अर्थ यह है कि बच्चों ने बहुत अधिक शोर मचाना शुरू कर दिया। इसका अर्थ यह नहीं है कि बच्चों ने अपने सिर पर आसमान रख लिया।

दूसरा उदाहरण है कि राम ने नौकरी को ठुकराकर अपने पाँव में आप कुल्हाड़ी मार ली। इसका अर्थ है कि राम ने नौकरी को ठुकराकर अपना बड़ा नुकसान कर लिया। अर्थ यह नहीं होगा कि नौकरी छोड़कर उसने कुल्हाड़ी से अपने पाँव काट लिए।

तीसरा उदाहरण है कि पड़ोसी की तरक्की देखकर शर्मा जी के कलेजे पर साँप लोटने लगा। इसका अर्थ होगा कि पड़ोसी की तरक्की देखकर शर्मा जी ईर्ष्या से जलभुन गए। इसका अर्थ यह नहीं होगा कि पड़ोसी की तरक्की देखने पर कोई साँप आकर शर्मा जी के कलेजे पर लोटने लगा।

इसलिए हम कह सकते हैं कि–

मुहावरा अपने शाब्दिक या प्रचलित अर्थ छोड़कर विशेष अर्थ ग्रहण करता है। इसे हम लाक्षणिक अर्थ प्रदान करना भी कहते हैं।

अब आइए, कुछ मुहावरों के साथ उनका वाक्य-प्रयोग भी देखें–

1. **आँखें चुराना** = बचने का प्रयास करना
   आजकल राकेश लोगों से आँखें चुराता फिर रहा है। कुछ बात तो है।
2. **आकाश-पाताल एक करना** = अत्यधिक प्रयास करना
   निशा ने आईएएस बनने के लिए आकाश-पाताल एक कर दिया था अतः भगवान ने भी उसकी सुन ली।

3. **अक्ल पर पत्थर पड़ना** = दिमाग से काम न लेना

पिता जी ने पुत्र को डाँटते हुए कहा, "तुम्हारी अक्ल पर पत्थर पड़ गया था, जो अधिकारी से उलझकर नौकरी गँवा बैठे।"

4. **ईद का चाँद होना** = बहुत दिनों के बाद दिखाई पड़ना

अरे मित्र! तुम तो बिल्कुल ईद का चाँद हो गए हो, जो लंबे समय बाद दिखाई दे रहे हो।

5. **अपना उल्लू सीधा करना** = अपना मतलब निकालना

आजकल सभी अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं, नैतिकता की तो कोई बात ही नहीं रह गई है।

6. **आँखों का तारा होना** = बहुत प्यारा

मनोज अपने माता-पिता की आँखों का तारा है।

7. **कान भरना** = चुगली करना

राधिका हमेशा लता के खिलाफ अध्यापिका के कान भरती रहती है।

8. **कमर कसना** = तैयार होना

पिता जी ने पुत्र से कहा, "यदि तुमने डॉक्टर बनने का सपना देखा है तो तुम्हें अभी से ही कमर कसनी होगी।"

9. **गागर में सागर भरना** = थोड़े में ही अधिक कह देना

कविवर बिहारी जी ने गागर में सागर भर दिया था। उनके छंद इतने अधिक प्रभावी हैं।

10. **पाँचों उँगलियाँ घी में होना** = लाभ ही लाभ

वर्मा जी का धंधा तो चल ही रहा था, बेटे और बहू भी कमाने लगे हैं, अब तो उनकी पाँचों उँगलियाँ घी में हो गई हैं।

11. **डंके की चोट पर कहना** = साफ़-साफ़ कहना

श्रीराम ने डंके की चोट पर कहा था कि सीता को वे हर हाल में अयोध्या ले आएँगे।

12. **बगलें झाँकना** = उत्तर न दे पाना

सास द्वारा बहू की करतूतों पर प्रश्न पूछने पर वह बगलें झाँकने लगी।

13. **रामबाण होना** = अचूक उपाय

भारत ने जो उपाय चीन के साथ किया है, वह अब रामबाण साबित हो रहा है।

14. **काठ का उल्लू होना** = एकदम मूर्ख

अध्यापिका जी ने सरिता के उत्तर न दे पाने पर कहा, "तुम बिल्कुल काठ की उल्लू हो।"

15. **कच्ची गोलियाँ न खेलना** = अनुभवी

नरेश ने कहा, "मैंने भी कच्ची गोलियाँ नहीं खेली हैं जो तुम मुझे फँसाना चाहते हो।"

16. **छक्के छुड़ाना** = बुरी तरह से पराजित करना

भारतीय खिलाड़ियों ने विरोधी टीम के छक्के छुड़ा दिए थे।

17. **आसमान टूटना** = भारी विपत्ति आना

कोरोना से पिता की मृत्यु हो जाने से कृपाशंकर पर तो आसमान ही टूट गया।

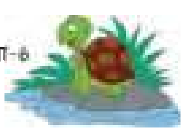

18. **हवाई किले बनाना** = कल्पनाएँ करना
कुछ लोग केवल हवाई किले बनाकर जीते हैं जबकि वास्तविकता में तो उसे सही ढंग से बनाना होगा।

19. **उँगली उठाना** = आरोप लगाना
किसी पर भी उँगली उठाने से पूर्व स्वयं पर विचार करना चाहिए।

20. **अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना** = अपनी बड़ाई स्वयं करना
हमें अपने मुँह मियाँ मिट्ठू नहीं बनना चाहिए बल्कि दूसरे लोग जब हमें सराहें, तब स्वयं का कार्य उचित होता है।

21. **घड़ों पानी पड़ना** = बहुत लज्जित होना
कक्षा में दूसरे के बस्ते से कलम चुराते पकड़े जाने पर महान को घड़ों पानी पड़ गया।

22. **कान का कच्चा होना** = हर किसी की बात पर विश्वास कर लेना
अनेक मालिक कान के कच्चे होते हैं, जो अच्छे कर्मचारी के चले जाने से पछताते हैं।

23. **घोड़े बेचकर सोना** = चिंतारहित होना
बेटी की शादी करने के बाद रामदीन घोड़े बेचकर सो रहा है।

24. **आग में घी डालना** = क्रोध को भड़काना
प्रह्लाद बेटे की पिटाई कर रहे थे ऊपर से श्रीनाथ उसकी गलतियाँ गिनवाकर आग में घी डालने का कार्य कर रहा था।

25. **तिल का ताड़ बनाना** = छोटी–सी बात को बहुत बढ़ा–चढ़ाकर कहना
नन्हें की तो आदत ही है कि वह हर बात को तिल का ताड़ बनाता रहता है।

26. **बाएँ हाथ का खेल** = बहुत सरल कार्य
नागर द्वारा दूसरों से ठगी करना तो उसके बाएँ हाथ का खेल होता है।

27. **चार चाँद लगाना** = सम्मान बढ़ाना
बेटी की शादी में मंत्री जी द्वारा आकर आशीर्वाद देने से बरात में चार चाँद लग गए।

28. **दाल में काला होना** = कुछ गड़बड़ होना
बैठक में संदेश को देखकर मुझे आभास हो गया था कि दाल में कुछ काला है।

29. **आकाश से बातें करना** = बहुत ऊँची होना
आजकल महानगरों की अधिकांश इमारतें आकाश से बातें करती हैं।

लोकोक्तियाँ

बच्चो! लोकोक्तियाँ यानी लोक की उक्तियों (लोगों के द्वारा कही गई बातें) को 'कहावत' भी कहते हैं। ये प्राचीन समय में लोगों के लंबे अनुभवों के बाद कही गई हैं। ये कहावतें या लोकोक्तियाँ पूर्णतः अनुभवों पर आधारित होती हैं।

मुहावरे तथा लोकोक्ति में अंतर

मुहावरे तथा लोकोक्तियों में अंतर होता है, जो इस प्रकार है–

1. मुहावरे अधिकतर शारीरिक अंगों के नाम पर बनते हैं, जबकि लोकोक्तियाँ लंबे समय के अनुभवों पर आधारित होती हैं।

2. मुहावरों के अंत में प्रायः 'ना' लगता है, जबकि लोकोक्तियाँ पूर्णतः वाक्य होती हैं।
3. मुहावरे प्रयोग करते समय वाक्य में जुड़कर उनका हिस्सा बन जाते हैं जबकि लोकोक्तियाँ वाक्य के अंत में लगाई जाती हैं।

कुछ लोकोक्तियों के उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं–

1. **अरहर की टट्टी गुजराती ताला** = मामूली चीज़ में महँगी सजावट
   मोहन ने अपनी झोंपड़ी में फ्रिज़ लगा रखा है। ठीक ही तो कहा गया है कि अरहर की टट्टी में गुजराती ताला।
2. **एक अनार सौ बीमार** = एक ही चीज़ के अनेक चाहने वाले
   कोरोना के समय ऐलोवेरा-तुलसी के सभी ग्राहक हैं। यह तो वही वाली बात हुई कि एक अनार सौ बीमार।
3. **आम के आम गुठलियों के दाम** = दोहरा लाभ
   बनारस में कार्यशाला का कार्यक्रम है। वहाँ जाकर गंगा स्नान भी कर लूँगा और कार्यशाला भी। ठीक ही तो है– आम के आम गुठलियों के दाम।
4. **घर की मुरगी दाल बराबर** = आसानी से उपलब्ध चीज़ को कमतर आँका जाता है
   तुम घर में चाहे जितने भी परिश्रम कर लो, किंतु घरवाले तो तुम्हें घर की मुरगी दाल बराबर ही समझेंगे।
5. **अंधे के हाथ बटेर लगना** = परिश्रम के बिना ही सफलता मिलना
   श्याम के पिता जी के एक मित्र उनसे मिलने आए। श्याम के बारे में भी हालचाल पूछा, फिर उन्होंने उसे अपने यहाँ नौकरी का ऑफर दे दिया। ये तो अंधे के हाथ बटेर लग गई।
6. **आँख का अंधा नाम नैनसुख** = गुणों के विपरीत नाम रखना
   धनीराम खाने-खाने को मोहताज़ है, लेकिन नाम धनीराम है। ठीक ही कहा गया है कि आँख का अंधा नाम नैनसुख।
7. **जिसकी लाठी उसकी भैंस** = बलशाली ही जीतता है
   आजकल तो सत्तापक्ष की मनमानी देखकर यही कहा जा सकता है कि जिसकी लाठी उसकी भैंस।
8. **खोदा पहाड़ निकली चुहिया** = मेहनत की अपेक्षा लाभ कम
   सरकार ने स्किल इंडिया सहित अनेक योजनाओं में सैकड़ों करोड़ खर्च किए, परिणाम बहुत मामूली। ठीक ही कहा गया है–खोदा पहाड़ निकली चुहिया।
9. **अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता** = कोई व्यक्ति अकेले सारा कार्य नहीं कर सकता
   देश के विकास के लिए सबको अपना योगदान देना होगा नहीं तो अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।
10. **अंधों में काना राजा** = गुणहीन व्यक्तियों में से थोड़ा-सा गुणवान व्यक्ति भी महान समझा जाता है
    राम प्रसाद अपने गाँव में अंग्रेज़ी जानता है, इसलिए वह वहाँ अंधों में काना राजा है।
11. **मान-न-मान मैं तेरा मेहमान** = बलात संबंध जोड़ना
    दिनेश ने एक अपरिचित से कहा कि वह उसके घर में क्यों घुसकर मान-न-मान मैं तेरा मेहमान बनना चाहता है?

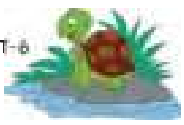

12. **दूर के ढोल सुहावने** = दूर की चीज़ें अच्छी लगती हैं

दूर स्थित विदेशों की चकाचौंध को अच्छा कहना तो दूर के ढोल सुहावने जैसा ही होता है।

13. **घर का भेदी लंका ढाए** = आपसी फूट सदैव हानि पहुँचाती है

हमारे मुहल्ले में वर्मा जी विभीषण का काम करते हैं, उनसे कुछ भी बताया तो घर का भेदी लंका ढाए वाली बात होगी।

14. **आ बैल मुझे मार** = मुसीबत मोल लेना

नंदन तो हमेशा दूसरों से लड़ता रहता है। वह तो इस कहावत को चरितार्थ करता है कि आ बैल मुझे मार।

15. **छोटा मुँह बड़ी बात** = अपनी हैसियत या योग्यता से बढ़कर बातें करना

कुछ लोग अपनी हैसियत न देखकर छोटा मुँह बड़ी बात वाली बात करते हैं।

16. **थोथा चना बाजे घना** = पूर्णता का अभाव

कुछ लोगों में योग्यता का अभाव होता है फिर भी बातें ऐसी करते हैं, जैसे वे ही सब कुछ जानते हैं। ठीक ही कहा गया है– थोथा चना बाजे घना।

17. **न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी** = जड़ से समाप्त करना

लखन के पाँव में एक वृक्ष की जड़ से चोट लग गई, उसने पेड़ ही काट डाला और बोला कि अब न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

18. **चोर-चोर मौसेरे भाई** = समान स्वभाव वाले लोगों में मित्रता होती है

शिवम और ब्रिजेश दोनों निठल्ले हैं, इसलिए दोनों में खूब पटती है, वे हमेशा साथ-साथ रहते हैं। ठीक ही है– चोर-चोर मौसेरे भाई।

19. **नाच न आवे आँगन टेढ़ा** = स्वयं की गलती मानने के बजाय दूसरों को दोष देना

राधा प्रतियोगिता में निबंध अच्छे से नहीं लिख पाई और पुरस्कार न पाने पर निर्णायकों को दोष देने लगी। ठीक ही कहा गया है– नाच न आवे आँगन टेढ़ा।

आइए, पुनरावृति करें

- मुहावरे अपना शाब्दिक अर्थ छोड़कर विशेष अर्थ ग्रहण करते हैं।
- लोकोक्तियों को कहावत भी कहा जाता है। ये वाक्य के अंत में प्रयोग की जाती हैं।
- लोकोक्तियों तथा मुहावरों में अंतर होता है।

भाषा में सुंदरता ले आने के लिए

- मुहावरे (लाक्षणिक या अन्य अर्थ ग्रहण)
- लोकोक्तियाँ (लंबे समय के अनुभव पर आधारित)

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को मुहावरे तथा लोकोक्तियों के बीच अंतर को समझाते हुए पाठ को विस्तारपूर्वक पढ़ाएँ।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) 'अंधों में काना राजा' लोकोक्ति है या मुहावरा? बताइए।

(ख) 'थोथा चना बाजे घना' लोकोक्ति का अर्थ बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) मुहावरे किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

(ख) लोकोक्तियों तथा मुहावरों में अंतर बताइए।

(ग) लोकोक्तियाँ किसे कहते हैं?

2. दिए गए मुहावरे तथा लोकोक्ति के सामने लिखिए कि वह मुहावरा है अथवा लोकोक्ति? अर्थ भी लिखिए।

(क) लातों के भूत बातों से नहीं मानते लोकोक्ति

(ख) गुड़-गोबर करना ....

(ग) दायाँ हाथ होना ....

(घ) कमर कसना ....

(ङ) अधजल गगरी छलकत जाय ....

(च) हवाई किले बनाना ....

(छ) जाको राखे साइयाँ मार सके ना कोय ....

(ज) अक्ल बड़ी या भैंस ....

(झ) हाथी बड़ा जानवर होता है। ....

3. दिए गए मुहावरों को उनके सही अर्थों से मिलाइए।

मुहावरे	अर्थ
(क) पलकें झुकाना	(i) दुश्मनी मोल लेना
(ख) दाँत खट्टे करना	(ii) कड़ी सज़ा देना
(ग) कान भरना	(iii) हँसना
(घ) दाँत दिखाना	(iv) शरम करना
(ङ) गुर्दे छीलना	(v) बुरी तरह हराना
(च) पंगा लेना	(vi) चुगली करना

4. दिए गए चित्रों को पहचानकर उनके मुहावरे से मिलाइए।

(क)

(ख)

(ग)

(घ)

(ङ)

(च)

(i) ढोल पीटना

(ii) हाथों से तोते उड़ाना

(iii) आसमान सिर पर उठाना

(iv) घी के दीये जलाना

(v) उँगली पर नचाना

(vi) छाती पर मूँग दलना

5. दिए गए मुहावरों/लोकोक्तियों से वाक्य बनाइए।

(क) गड़े मुरदे उखाड़ना – ....

(ख) गुड़-गोबर करना – ....

(ग) एक अनार-सौ बीमार – ....

(घ) चोर की दाढ़ी में तिनका – ....

(ङ) कलेजे पर साँप लोटना – ....

(च) डंके की चोट पर कहना – ....

6. दिए गए मुहावरों/लोकोक्तियों के अर्थ लिखिए।

(क) न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी = ...

(ख) उँगली पकड़कर पहुँचा पकड़ना = ...

(ग) एक की चार लगाना = ...

(घ) ज़मीन पर पैर न रखना = ...

(ङ) ईद का चाँद होना = ...

सोचें-विचारें

Critical Thinking

7. ऐसे मुहावरे और लोकोक्तियों का चयन कीजिए जो हमारे शारीरिक अंगों को प्रमुखता से दर्शाते हैं। सोचकर बताइए।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

8. कक्षा में बच्चों के दो समूह बनवाएँ। एक से मूक अभिनय करवाएँ एवं दूसरे समूह से उस मुहावरे की पहचान करवाएँ।

9. कक्षाध्यापिका एक-एक बच्चे को बुलाकर उसके कान में कुछ कहें। फिर वह बच्चा किसी मुहावरे का अभिनय करे। उसे कक्षा के सभी बच्चे पहचानें और उस अभिनय से संबंधित मुहावरा बोलें।

10. अपनी पाठ्यपुस्तक में से मुहावरे और लोकोक्तियाँ छाँटकर कॉपी में लिखिए।

प्रेरणादायक मूल्य

मुहावरे और लोकोक्तियाँ बहुत कम शब्दों में अपने प्रभावी स्वरूप को दर्शाते हैं ठीक उसी प्रकार मनुष्यों को भी अपने व्यक्तित्व और व्यवहार को बहुत कम शब्दों में अपनी भाषा के माध्यम से प्रभावी रूप में दर्शाना चाहिए।

अध्याय 18

विराम-चिह्न
(Punctuation Marks)

पढ़िए और समझिए

यह एक सुंदर वाटर पार्क है हम लोग यहाँ घूमने आए हैं हमारी अध्यापिका ने कहा था देखो कोई भी बहुत अधिक देर तक पानी में नहीं रहेगा नहीं तो वह बीमार हो जाएगा कोई बच्चा किसी दूसरे बच्चे को जबरदस्ती पानी के अंदर नहीं ले जाएगा हमारी अध्यापिकाएँ भी हमारे साथ आई हैं हम सब स्कूल की बस से आए हैं

बच्चो! यहाँ कुछ अटपटा-सा लग रहा है। क्योंकि कहाँ रुकना है, कहाँ नहीं रुकना है, इसका कुछ पता ही नहीं चल रहा है। अब ऊपर लिखे वाक्यों को इस प्रकार पढ़िए-

यह एक सुंदर वाटर पार्क है। हम लोग यहाँ घूमने आए हैं। हमारी अध्यापिका ने कहा था, "देखो, कोई भी बहुत अधिक देर तक पानी में नहीं रहेगा, नहीं तो वह बीमार हो जाएगा। कोई बच्चा किसी दूसरे बच्चे को जबरदस्ती पानी के अंदर नहीं ले जाएगा।" हमारी अध्यापिकाएँ भी हमारे साथ आई हैं। हम सब स्कूल की बस से आए हैं।

यहाँ ध्यान रखने की बात यह है कि वाक्य में भावों के अनुसार हम रुककर अपनी बातें कहते हैं। यही स्थान-स्थान पर रुकने की क्रिया को 'विश्राम' या 'विराम' कहते हैं। 'विराम' का अर्थ ही 'रुकना' होता है।

अत: हम कह सकते हैं कि-

भाषा के लिखित रूप में भावानुकूल समझने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं।

अब आइए, हिंदी भाषा में प्रयुक्त होने वाले कुछ विराम-चिह्नों को जानें-

1. **पूर्ण विराम (।) :** इस विराम-चिह्न का प्रयोग वाक्य के अंत में किया जाता है। इससे पता चलता है कि वाक्य वहीं समाप्त हो गया है; जैसे–

रंजना सुंदर नृत्य करती है।

कौशल अपना गृहकार्य पूरा करता है।

अचला छतरी लेकर जा रही है।

2. **अल्प विराम (,) :** जब वाक्य में पूर्ण विराम के पहले एक या अधिक बार रुकना पड़ता है, वहाँ अल्प विराम का चिह्न लगाया जाता है; जैसे-

लखन, तुम अब चले जाओ।

राम, सीता और लक्ष्मण वन को गए।

सरला, मनसा, गीता और नेहा मेला देखने गईं।

3. **प्रश्न-सूचक चिह्न (?) :** जब वाक्य प्रश्नवाचक होता है अथवा वाक्य केवल प्रश्न पूछने के लिए बोला जाता है, तो वाक्य के अंत में प्रश्नसूचक चिह्न लगाया जाता है; जैसे-

क्या तुमने परीक्षा की तैयारी कर ली है?

सरला बेटा, क्या लेकर आई हो?

माता जी बाज़ार से क्या आ गई हैं?

नोट : प्रश्न-चिह्न लगाने के बाद पूर्ण विराम नहीं लगता है।

4. **अर्ध विराम चिह्न (;) :** वाक्य में जब पूर्ण विराम से कम किंतु अल्प विराम से अधिक देर तक रुकने का संकेत किया जाता है, तो वहाँ अर्ध विराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे-

नानी जी हमारे घर आईं थीं; अगले दिन वे चली गईं।

शाम को बादल छाए थे; रात में वर्षा होने लगी।

नंदिनी की सास बीमार थी; उनका इलाज चल रहा है।

5. **विस्मयसूचक चिह्न (!):** वाक्य में हर्ष, घृणा, क्रोध, आश्चर्य आदि भावों को व्यक्त करने के लिए विस्मयसूचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे-

वाह! क्या बढ़िया चाय बनी है।

अरे राम! तुम घर से कब आए?

बच्चो! शोर क्यों मचा रहे हो?

6. **निर्देशक या विवरण चिह्न (–) :** निर्देशक चिह्न का प्रयोग किसी कथन, विवरण या उदाहरण देने के लिए किया जाता है; जैसे–

राम ने कहा–"लक्ष्मण, मेरा धनुष ले आओ।"

कल विद्यालय में पुरस्कार पाने वाली छात्राएँ हैं– नेहा, कला, गरिमा और नगमा।

पिताजी ने कहा– "मुझे अभी बाहर जाना है।"

7. **उद्धरण चिह्न ("   ") (' ') :**

उद्धरण चिह्न दो प्रकार के होते हैं–

(क) इकहरा उद्धरण (' ') तथा दोहरा उद्धरण ("   ")

(क) इकहरा उद्धरण ('   ') : जब किसी उपनाम, पुस्तक का नाम, शीर्षक या समाचार-पत्र आदि का नाम लिखना हो, तो वहाँ इकहरा उद्धरण चिह्न लगाया जाता है; जैसे–

रामधारी सिंह 'दिनकर' हिंदी के महान कवि थे।

न्यायालयों में 'श्रीमद् भगवतगीता' की शपथ दिलाई जाती है।

'दैनिक हिंदुस्तान' एक अच्छा समाचार-पत्र है।

(ख) दोहरा उद्धरण चिह्न ("   ") : जब हम किसी के द्वारा कही गई बात को ज्यों का त्यों लिखते हैं, तो वहाँ दोहरा उद्धरण-चिह्न लगाया जाता है; जैसे–

गांधी जी ने कहा था, "पाप से घृणा करो, पापी से नहीं।"

नेताजी ने कहा था, "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।"

8. **कोष्ठक चिह्न ( ) [ ] :** कोष्ठक चिह्नों का प्रयोग संख्या लिखते समय, किसी बात को समझते समय कुछ अतिरिक्त लिखने के लिए या गणित के प्रश्न एवं हल के समय किया जाता है; जैसे–

मेघ (बादल) बरस रहे हैं।

$(2 + 2)^2 = 16$

9. **योजक चिह्न (-):** इसका प्रयोग दो शब्दों को जोड़ने अथवा दो विपरीत शब्दों के मध्य किया जाता है; जैसे–

बिल्ली की आँखें मोती-सी चमक रही थीं।

रात-दिन, सुख-दुख, राजा-रानी, भाई-बहन आदि।

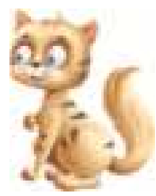

10. **लाघव चिह्न (॰):** किसी भी शब्द का संक्षिप्त या छोटा रूप लिखना होता है, तो वहाँ लाघव चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे–

डॉक्टर– डॉ॰,   प्रोफेसर– प्रो॰,   पंडित नेहरू– पं॰ नेहरू

आइए पुनरावृति करें

- विराम का अर्थ 'रुकना' होता है।
- विराम-चिह्न से हम लेखन को सही बनाते हैं ताकि पाठक उसे उसी रूप में पढ़कर समझ सकें।
- विराम-चिह्नों के अभाव में वाक्य या हमारी बातें स्पष्ट नहीं हो पाती हैं।

विराम-चिह्न

- पूर्ण विराम (।)
- अल्प विराम (,)
- अर्ध विराम (;)
- योजक (-)
- उद्धरण, (' - ')(" - ")
- विस्मयसूचक (!)
- कोष्ठक () []
- निर्देशक (—)
- प्रश्न सूचक (?)
- लाघव चिह्न (॰)

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को विराम-चिह्नों को समझाते हुए उनका प्रयोग करना भी सिखाएँ।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) विराम-चिह्न को परिभाषित कीजिए।

(ख) किसी भी शब्द को संक्षिप्त या छोटे रूप में लिखना हो तो किस विराम-चिह्न का प्रयोग किया जाता है?

(ग) भाई-बहन, माता-पिता आदि शब्दों में किस विराम-चिह्न का प्रयोग किया गया है?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. **दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

   (क) लाघव चिह्न की परिभाषा देकर उदाहरण भी दीजिए।

   (ख) दोहरा उद्धरण क्यों लगाया जाता है? उदाहरण दीजिए।

   (ग) निर्देशक तथा योजक चिह्न में क्या अंतर है? स्पष्ट कीजिए।

   (घ) अल्प विराम कहाँ और कब लगाया जाता है?

2. दिए गए शब्दों के चिह्न बनाइए–

(क) पूर्ण विराम – (   )
(ख) अर्ध विराम – (   )
(ग) अल्प विराम – (   )
(घ) उद्धरण चिह्न – (   )
(ङ) प्रश्नसूचक – (   )
(च) कोष्ठक चिह्न – (   )
(छ) निर्देशक चिह्न – (   )
(ज) योजक चिह्न – (   )
(झ) लाघव चिह्न – (   )
(ञ) विस्मयसूचक चिह्न – (   )

3. दिए गए वाक्यों में उचित विराम-चिह्न लगाकर वाक्य दोबारा लिखिए-

(क) राजा ने कहा सभी मंत्रीगण प्रजा की भलाई का कार्य करें

....

(ख) नौकर ने कहा मालकिन रसोई के लिए सब्ज़ियाँ मँगानी हैं

....

(ग) अध्यापिका ने कहा सरला विद्या रश्मि और मंदाकिनी कल नाटक के लिए तैयारी कर लेना

....

(घ) बच्चो आप सब शोर क्यों मचा रहे हैं

....

(ङ) सच्चिदानंद हीरानंद अज्ञेय हिंदी के बड़े साहित्यकार थे

....

4. दिए गए वाक्यों में रेखांकित विराम-चिह्नों के नाम लिखिए।

(क) <u>डॉ॰</u> अब्दुल कलाम भारत के वैज्ञानिक एवं राष्ट्रपति थे। ....

(ख) गोस्वामी जी ने <u>'रामचरित मानस'</u> महाकाव्य लिखा। ....

(ग) क्या राजेश कल मैत्री मैच <u>खेलेगा?</u> ....

(घ) लखन <u>दिन–रात</u> मेहनत करता है। ....

(ङ) दिए गए प्रश्नों के उत्तर <u>लिखिए।</u> ....

5. दिए गए विराम-चिह्नों से वाक्य बनाइए।

(क) ; ....

(ख) ? ....

(ग) ! ....

(घ) ॰ ....

सोचें-विचारें

Critical Thinking

6. बिना विराम-चिह्नों के वाक्यों की दुनिया कैसी होती है? सोचकर बताइए।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

7. श्यामपट्ट पर विराम-चिह्न लिखकर उनके नाम छात्रों से बुलवाएँ।

8. दिए गए वृक्ष पर विराम-चिह्नों के फल लगे हैं। उनके नाम मिलाइए।

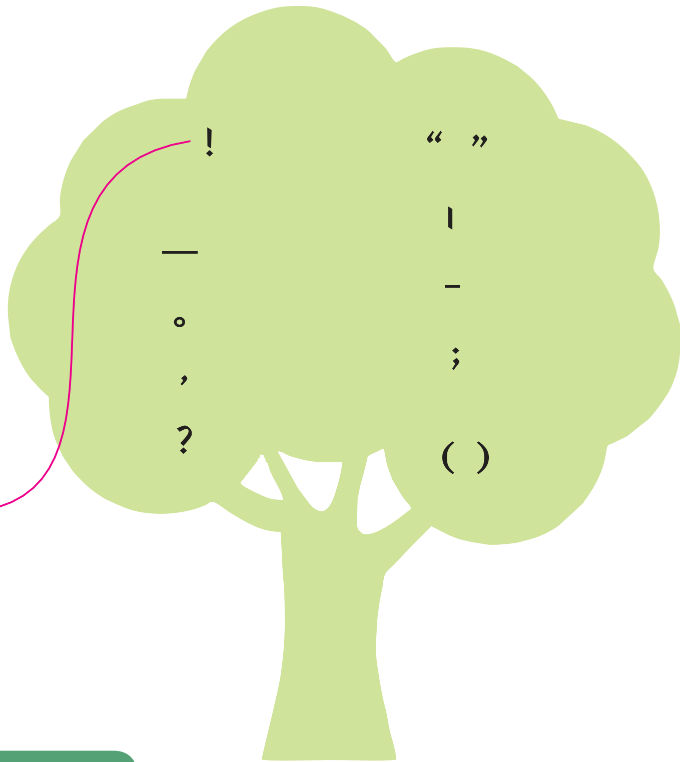

(क) निर्देशक
(ख) अर्ध विराम
(ग) लाघव
(घ) प्रश्नसूचक
(ङ) पूर्ण विराम
(च) उद्धरण
(छ) विस्मयसूचक
(ज) कोष्ठक
(झ) योजक
(ञ) अल्पविराम

प्रेरणादायक मूल्य

विराम-चिह्न वाक्यों को स्पष्ट और व्यस्थित स्वरूप प्रदान करते हैं जिससे वाक्यों की भाषा सरल हो जाती है ठीक उसी प्रकार हमें भी स्पष्ट एवं व्यवस्थित रूप से अपने कार्यों को संपन्न करना चाहिए।

अध्याय 19

ई–मेल (पत्र–लेखन)
(E-mail Letter Writing)

पढ़िए और समझिए

बच्चो! आजकल कंप्यूटर और नेट की सुलभ उपलब्धता से पत्र भी ई–मेल के ज़रिए लिखे जा रहे हैं। ई–मेल का पूरा नाम इलेक्ट्रॉनिक मेल है। इलेक्ट्रॉनिक–मेल द्वारा लिखा गया पत्र या संदेश कुछ ही सेकंडों में पहुँच जाता है। इसमें अनेक प्रकार की सुविधाएँ होती हैं, जो इस प्रकार हैं–

- ई–मेल के द्वारा संदेश तुरंत पहुँच जाता है।
- इसमें समय और धन की भारी बचत होती है।
- ई–मेल आप हिंदी, अंग्रेज़ी सहित अनेक क्षेत्रीय भाषाओं में भी भेज सकते हैं।
- इसमें शब्दों की वर्तनी को ठीक रखने के लिए स्पेल चेक की भी व्यवस्था होती है।
- ई–मेल के साथ अटैच करके आप अपना या कोई चित्र, विडियो संदेश अथवा कोई संदर्भ आदि भी एक ही साथ भेज सकते हैं।
- ई–मेल को आप कई लोगों को एक साथ भेज सकते हैं।

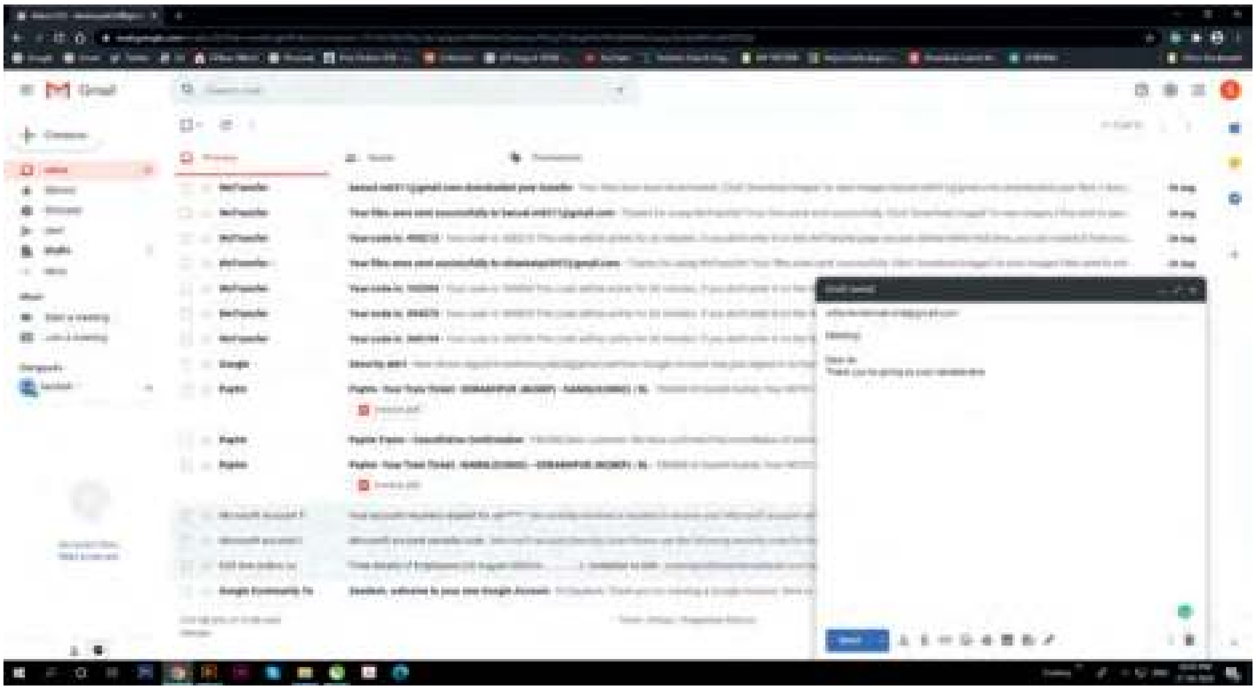

बच्चो! आप जानते हैं कि ई-मेल लिखने के पहले आपको अपना एक मेल अकाउंट खोलना पड़ता है। इसके तरीके हम आपको बता रहे हैं:

- प्रायः मेल अकाउंट yahoo.com अथवा gmail.com पर खोले जाते हैं।
- सबसे पहले आपके कंप्यूटर में इंटरनेट सेवा उपलब्ध होनी चाहिए।
- यदि बाहर से इंटरनेट कनेक्शन नहीं ले रखा है, तो अपने मोबाइल के नेट से भी हाटस्पॉट एवं वाईफाई के जरिए कंप्यूटर से कनेक्ट कर सकते हैं।
- अब आप गूगल (Google या क्रोम (Chrome) या मोज़ीला (Mozilla) या इंटरनेट एक्सप्लोरर (internet Explorer) खोलिए।
- फिर उसमें gmail.com या yahoo.com को लिखकर इंटर दबाइए।
- पेज खुलने पर एक जगह क्रिएट अकाउंट (Create Account) का विकल्प आएगा। उसे दबाएँ।
- फिर उसमें आपकी व्यक्तिगत जानकारी संबंधी पृष्ठ खुल जाएगा।
- उसमें पूछी गई जानकारी को ठीक से भरिए।
- तदनंतर नेक्स्ट (Next) का बटन दबाएँ।
- अब आपके द्वारा दिए गए फोन नंबर पर एक कोड (Code) सत्यापन (Verification) के लिए आएगा।
- उस कोड को पृष्ठ में दिए गए स्थान पर लिखें और फिर कॉन्टीन्यू (Continue) वाला बटन दबाएँ।

- अब आपका अकाउंट खुल गया है। जैसे यदि gmail पर हैं, और आपका नाम नितिन है तो आएगा इस तरह– nitin75@gmail.com यदि yahoo.com पर खुला है तो ऐसे हो सकता है– nitin75@yahoo.co.in
- ई-मेल अकाउंट खुलने के बाद अब आप आसानी से मेल (mail) कर सकेंगे।
- अब आप ई-मेल कैसे कर पाएँगे? यह जानना ज़रूरी है न? आइए, इसे भी जानें–
- आपके मेल अकाउंट के साथ एक पासवर्ड भी आएगा। उसे आपको हमेशा याद रखना होगा। आप समय-समय पर अपना पासवर्ड बदल भी सकते हैं।

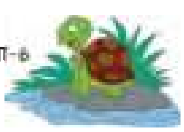

- ✦ पहले आप yahoo.com या gmail.com (जिसमें भी आपका अकाउंट है) उसे खोलें।
- ✦ फिर अपना E-mail पता और पासवर्ड भरें।
- ✦ ई-मेल खात खुलने पर Create message पर Click करें।
- ✦ फिर एक पेज आएगा जिसमें सबसे ऊपर आपका मेल अकाउंट लिखा होगा। फिर Subject का कॉलम होगा। उसके नीचे Cc उसमें नीचे Bcc का कॉलम होगा। To- में जिसे आप mail भेज रहे हैं, उनका E-mail पता लिखिए।
- ✦ इसके अलावा जिसे और भी मेल भेजना है, उसे भी Cc तथा Bcc में उनका मेल पता लिख दीजिए।
- ✦ अब दिए गए स्पेस में आप पत्र या संदेश लिखिए।
- ✦ मैसेज लिखकर Spell check से शब्दों की वर्तनी को चेक कर लें कि वह ठीक है या नहीं।
- ✦ अब आप उसे Sent के ऊपर जाकर क्लिक कर दें।
- ✦ लीजिए! आपका संदेश चला गया।

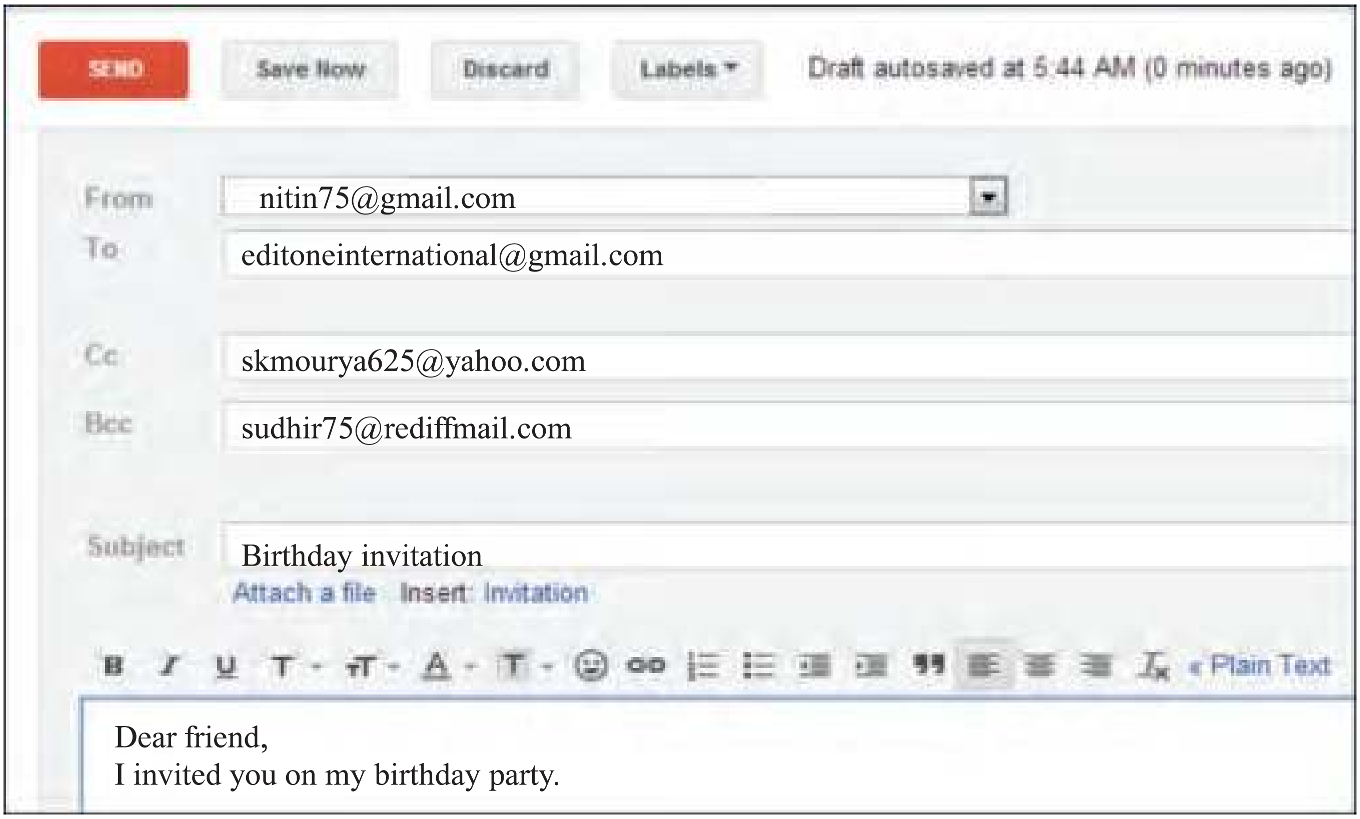

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को मेल भेजने से संबंधित सभी बातों को प्रायोगिक तौर पर समझाएँ। साथ ही मेल में लिखे जाने वाले वाक्यों के क्रम को भी समझाएँ।

अभ्यास कार्य

लेखन कार्य

Writing Skills

1. मित्र को जन्मदिन में बुलाने के लिए मेल लिखिए।

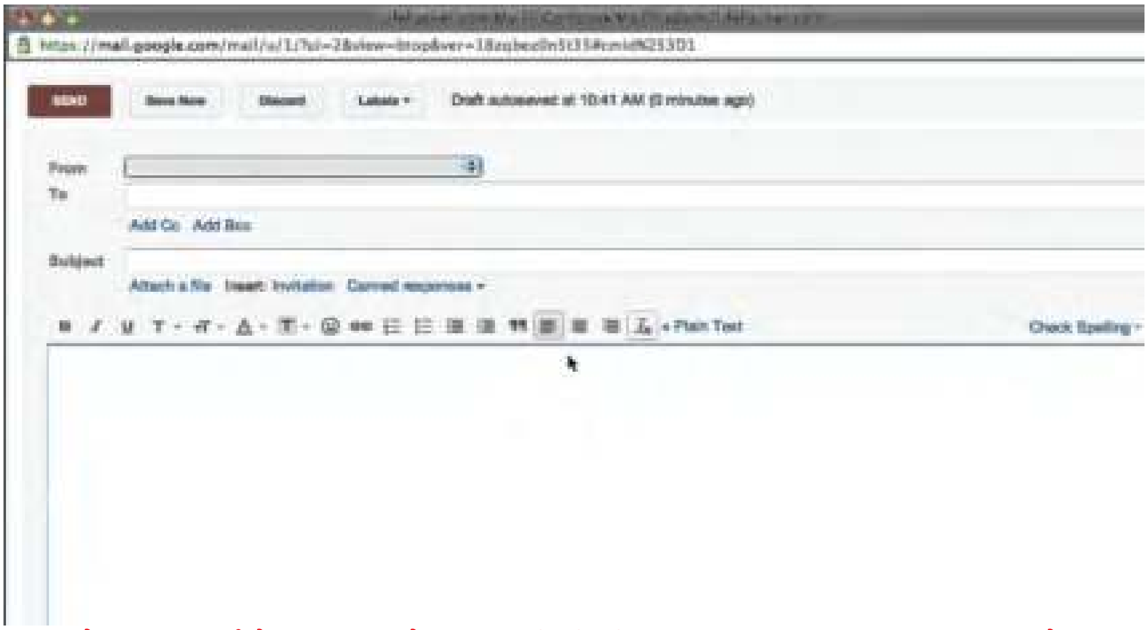

2. विद्यालय में प्रधानाचार्य के e-mail पते पर अपनी टी.सी. (स्थानांतरण प्रमाण-पत्र) प्राप्ति के लिए मेल भेजिए।

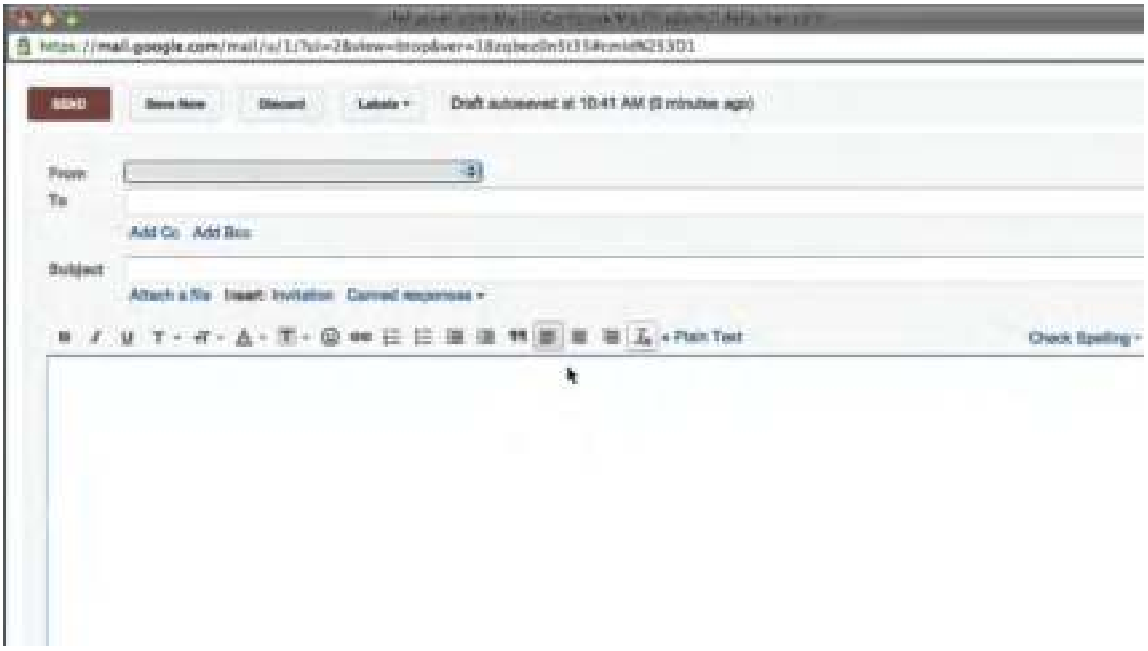

प्रेरणादायक मूल्य

ई-मेल लेखन के द्वारा हम डिजिटल गुणों के साथ-साथ भाषा-शैली व लेखन-शैली को भी सुदृढ़ करते हैं।

स्वमूल्यांकन पत्र-1

समयः 1 घंटा

नाम : .... **कक्षा :** .... **अनुक्रमांक :** ....

1. हिंदी भाषा का संवैधानिक स्वरूप क्या है? लिखिए।

2. दिए गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनिए।

(क) भारत में कुल कितनी भाषाओं को संवैधानिक मान्यता प्राप्त है?

☐ 18 ☐ 20 ☐ 22 ☐ 30

(ख) कारक के कितने भेद हैं?

☐ दो ☐ छह ☐ आठ ☐ दस

(ग) 'वागीश' का संधि विच्छेद क्या है?

☐ वाक+ईश ☐ वाग्+ईश ☐ वाक्+ईश ☐ बाक+ईश

3. (क) दिए गए तत्सम शब्दों के तद्भव रूप लिखिए।

कर्पूर – .... मयूर – ....

चटका – .... मक्षिका – ....

(ख) दिए गए शब्दों को मिलाकर संधि कीजिए।

दिक्+अंत = ... उत्+धार = ...

मन:+कामना = ... सदा+एव = ...

4. (क) दिए गए समस्त पदों का विग्रह करके समास का नाम लिखिए।

हाथोंहाथ = ...

नीलगाय = ...

राजा-रानी = ...

(ख) दिए गए समास विग्रह से समस्त पद बनाइए।

बिना जान-पहचान का = ...

नौ रत्नों का समूह = ...

पाँच आबों का समाहार = ...

5. (क) दिए गए शब्दों से उपसर्ग और मूल शब्द अलग कीजिए।

प्रतिदिन – ....+................ कुपूत – ....+................

हमशक्ल – ....+................ संसार – ....+................

(ख) दिए गए उपसर्ग और मूल शब्द जोड़कर नए शब्द बनाइए।

सम्+कल्प = ... सु+आगत = ...

निस्+संतान = ... अन्+एक = ...

6. (क) दिए गए प्रत्ययों से दो-दो शब्द बनाइए।

वाला – .... आवा – ....

आई – .... इया – ....

(ख) दिए गए शब्दों में से मूल शब्द और प्रत्यय अलग कीजिए।

लुहार = ...+................ बंगाली = ...+................

बिकाऊ = ...+................ मौसेरा = ...+................

7. दिए गए शब्दों के आगे संज्ञा के भेद लिखिए।

बुढ़ापा – .... ई-श्रीधरन – ....

गाय – .... आम – ....

8. दिए गए शब्दों के लिंग बदलकर लिखिए।

कुम्हार – .... लुहार – ....

जाट – .... हाथी – ....

9. दिए गए शब्दों के वचन बदलिए।

लताएँ – .... खरगोश – ....

डिबिया – .... छात्र – ....

10. दिए गए वाक्यों में से कारक को रेखांकित करके कारक का नाम लिखिए।

(क) पेड़ों से पत्ते गिरते हैं। ....

(ख) हे राम! यह कैसा ज़माना आ गया है। ....

(ग) बिल्ली घर में आ गई। ....

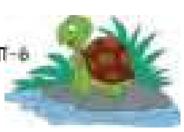

स्वमूल्यांकन पत्र-2

समयः 1 घंटा

नाम : .... **कक्षा :** .... **अनुक्रमांक :** ....

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) सर्वनाम किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

(ख) विशेषण कितने प्रकार के होते हैं, किसी एक प्रकार की परिभाषा व उदाहरण दीजिए।

(ग) सकर्मक क्रिया और अकर्मक क्रिया में क्या अंतर होता है?

2. (क) दिए गए वाक्यों के आगे उनके काल का नाम लिखिए।

(i) कल सपना ने सुंदर नृत्य किया। ....

(ii) सुलेखा कल मायके जाएगी। ....

(iii) बच्चों के स्कूल अक्टूबर से खुल रहे हैं। ....

(ख) निर्देशानुसार काल को परिवर्तित कीजिए।

(i) दादा जी को कल डॉक्टर को दिखाना होगा। (भूतकाल में)

....

(ii) अनूप जलोटा ने प्रेक्षागृह में अनेक भजन सुनाए। (वर्तमानकाल में)

....

3. दिए गए विराम-चिह्नों के आगे उनके नाम लिखिए।

(क) “ ” – .... (ख) ! – ....

(ग) । – .... (घ) ? – ....

4. (क) दिए गए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

(i) आसमान – .... (ii) पेड़ – ....

(iii) वायु – .... (iv) मछली – ....

(ख) दिए गए शब्दों के उनके सही विलोम शब्द तक रेखा खींचिए।

(क) आवश्यक	(i) नरक
(ख) जीवन	(ii) सेवक
(ग) स्वामी	(iii) अनावश्यक
(घ) स्वर्ग	(iv) मरण

5. **दिए गए मुहावरों के सही अर्थ लिखिए।**

(क) गुर्दे छीलना – ....

(ख) पंगा लेना – ....

(ग) दाँत खट्टे करना – ....

6. **दिए गए शब्द को उनके अनेकार्थी शब्द से मिलाइए।**

(क) अंक	(i) पराजय, माला
(ख) मत	(ii) हिस्सा, विभाजन
(ग) भाग	(iii) कल्याण, शुभ
(घ) मंगल	(iv) गोद, संख्या
(ङ) हार	(v) राय, वोट

7. **ई-मेल अकाउंट का खाता कैसे खोला जाता है? लिखिए।**

....

....

....

....

8. **दिए गए विषयों में से किसी एक पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।**

(क) **कोरोना संकट में स्कूल बंदी**

शब्द संकेत :
- कोरोना संकट
- बंदी
- छात्रों तथा विद्यालयों की परेशानियाँ
- समग्र प्रभाव

(ख) **हिंदी हमारी भाषा**

शब्द संकेत :
- महत्व
- स्वरूप व स्थिति
- देश की संपर्क भाषा
- वर्तमान शिक्षा माध्यम के लिए अत्यावश्यक

(ग) **आयुर्वेद के प्रति लोगों का झुकाव**

शब्द संकेत :
- प्राचीन पद्धति
- अंग्रेज़ी दवाइयों के साइड इफेक्ट्स
- परंपरागत खान-पान का तरीका
- लाभ।